बाइबल परमेश्वर के कई पहलुओं पर प्रकाश डालती है। इन सर्वाधिक सामर्थी प्रकाशनों में से एक पिता का प्रकाशन है। परमेश्वर हमारा स्वर्गीय पिता है। प्रभु यीशु ने हमें सिखाया कि हम परमेश्वर को "हमारा पिता" कहकर पुकारें। बाइबल हमारे लिए पिता के प्रेम को प्रकट करती है। यह पुस्तक पिता के प्रेम का अध्ययन है। हमारे प्रति पिता के प्रेम की समझ इस बात को प्रभावित करती है कि हम परमेश्वर से कैसे प्रेम करते हैं, हम अपने आप से कैसे प्रेम करते हैं और हम दूसरों से कैसे प्रेम करते हैं।

परमेश्वर, हमारा स्वर्गीय पिता, हमसे बिनशर्त और बेपरिमाण प्रेम करता है। हमारे प्रति पिता के प्रेम की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति और प्रदर्शन यीशु मसीह का क्रूस है। जब हम हमारे प्रति पिता के प्रेम को जानते हैं, विश्वास करते हैं और उसमें विश्राम करते हैं, तब सबकुछ बदल जाता है। हम चंगे हो जाते हैं, स्वस्थ हो जाते हैं और हमारे सारे टूटेपन और बंधनों से आज़ाद हो जाते हैं। जब हम पिता के प्रेम से जीवन बिताते हैं, तब हम वैसे ही प्रेम करते हैं जैसे हमसे प्रेम किया गया। हम परमेश्वर से मुक्त रूप से प्रेम करते हैं। हम दूसरों से मुक्त रूप से प्रेम करते हैं। हम जयवंत से भी बढ़कर जीवन बिताते हैं, ऐसे लोगों के रूप में जिन्होंने जीवन की सारी चुनौतियों और अंधकार की शक्तियों को परमेश्वर के अटूट प्रेम के द्वारा पराजित किया है। यह पुस्तक आपके लिए है।

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: contact@apcwo.org
Website: apcwo.org

पिता का प्रेम

आशीष रायचूर

पिता का प्रेम

आशीष रायचूर

केवल विनामूल्य वितरण के लिए

ऑल पीपल्स चर्च अँड वर्ल्ड आउटरीच, बैंगलोर, भारत द्वारा मुद्रित और वितरित।
प्रथम संस्करण मुद्रितः जून **2020**

सम्पर्क
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA
Phone: +91-80-25452617
Email: bookrequest@apcwo.org
Website: **apcwo.org**

अन्यथा सूचित न हो तो, सभी पवित्र शास्त्र उद्धरण पवित्र बाइबल, बाइबल सोसायटी इंडिया संस्करण से लिया जाता है। सर्व हक्क स्वाधीन।
बाइबल परिभाषाएं, इब्रानी और ग्रीक शब्द तथा उनके अर्थ निम्नलिखित स्रोतों से लिए गए हैं :

Thayer's Greek Definitions. Published in 1886, 1889; public domain.
Strong's Hebrew and Greek Dictionaries, Strong's Exhaustive Concordance by James Strong, T.D., LL.D. Published in 1890; public domain.
Vine's Complete Expository Dictionary of Old and New Testament Words, © 1984, 1996, Thomas Nelson, Inc., Nashville, TN.

आर्थिक साझेदारी
इस पुस्तक का विनामूल्य वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता की वजह से सम्भव हुआ है। यदि आपने इस विनामूल्य प्रकाशन के माध्यम से आशीष पाई है, तो हम आपको ऑल पीपल्स चर्च के विनामूल्य प्रकाशनों के मुद्रण और वितरण में सहायता के लिए आर्थिक रूप से योगदान देने हेतु आमंत्रित करते हैं। कृपया **apcwo.org/give** पर जाएं या अपना योगदान कैसे करें यह देखने हेतु इस पुस्तक के पीछे "ऑल पीपल्स चर्च के साथ प्रतिभागिता" पृष्ठ देखें। धन्यवाद!

डाक सूची
यदि आप हमारी नई पुस्तके पाने के लिए अपना नाम हमारी डाक सूची में चाहते हैं, तो कृपया ईमेल द्वारा अपना सही पता हमें भेजें : **contact@apcwo.org**

भारत में विनामूल्य बल्क ऑर्डर
आपकी स्थानीय कलीसिया में, बायबल अध्ययन समूह, बाइबल कॉलेज, सेमिनारों, सभाओं, पुस्तकालयों, व्यापार केन्द्रों में वितरण हेतू हम आनंद के साथ हमारी पुस्तकें विनामूल्य भेजना चाहते हैं। कृपया ईमेल द्वारा पुस्तकों की संख्या और पाने वालों के पते भेजें : bookrequest@apcwo.org

(Hindi book - The Father's Love)

बाइबल कॉलेज
और सेवा प्रशिक्षण केंद्र

ऑल पीपल्स चर्च
बाइबल कॉलेज और सेवा प्रशिक्षण केंद्र

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज और सेवा प्रशिक्षण केंद्र (एपीसी–बीसी) भारत के बैंगलोर में आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त, सक्रिय सेवकाई में सहभागी प्रशिक्षण और सिद्धांत की दृष्टि से सही एवं परमेश्वर के वचन के बौद्धिक दृष्टि से प्रेरणादायक अध्ययन के साथ पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में सेवकाई के लिए तैयारी प्रदान करता है। हम सेवकाई के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में विश्वास करते हैं और ईश्वरीय चरित्र, परमेश्वर के वचन में गहरी बुनियाद, और चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर देते हैं – सब कुछ प्रभु के साथ निकट रिश्ते से प्रवाहित होता हुआ।

एपीसी–बीसी में सही शिक्षा के अतिरिक्त, हम प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के प्रेम, पवित्र आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति और परमेश्वर के अलौकिक कार्य पर बल देते हैं। कई युवा स्त्री और पुरुषों ने प्रशिक्षण पाया है और उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु उन्हें बाहर भेजा गया है।

निम्नलिखित तीन पदवियां दी जाती हैं :

Theology and Christian Ministry (C.Th.) में एक वर्षीय प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम
Theology and Christian Ministry (Dip.Th.) में दो वर्षीय प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम
Bachelor in Theology and Christian Ministry (B.Th.) में तीन वर्षीय प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम

हर सप्ताह के दिन, सोमवार से शुक्रवार तक सुबह 9 से दोपहर 1 बजे तक कक्षाएं ली जाती हैं, विद्यार्थी, नौकरीपेशा लोग, और गृहिणियां सभी इन कक्षाओं में भाग ले सकते हैं और 1 बजे के बाद अपने काम पर जा सकते हैं। वहीं रहने की इच्छा रखने वाले स्त्रियों और पुरुषों के लिए अलग–अलग हॉस्टेल सुविधाएं हैं। विद्यार्थी हर सप्ताह दो से पांच बजे तक क्षेत्रीय कार्य, विशेष सेमिनारों में, दोपहर के समय में प्रार्थना और आराधना में समय व्यतीत करते हैं। दोपहर की सभाएं घर से आने वाले विद्यार्थियों के लिए वैकल्पिक हैं। सभी विद्यार्थियों को प्रोत्साहन दिया जाता है कि वे सप्ताह के अंत में एक या उससे अधिक स्थानीय कलीसियाओं में सेवा करें।

कॉलेज, विभिन्न कार्यक्रमों, पाठ्यक्रमों के विषय में अधिक जानकारी के लिए, और आवेदन पत्र डाऊनलोड करने के लिए कृपया इस साईट को भेंट दें : apcwo.org/biblecollege

एपीसी–बीसी को द नैशनल एसोसिएशन
फॉर थियोलॉजिकल एक्रेडिटेशन (नाटा)
द्वारा मान्यता प्राप्त है।

NATIONS ASSOCIATION FOR THEOLOGICAL ACCREDITATION
NATA
BANGALORE, INDIA

पिता का प्रेम

अथक प्रेम

एपीसी संगीत **(apcmusic.org)**

जब मेरे मार्ग में पर्वत खड़े होते हैं
और उसकी छाया मुझपर छा जाती है
मै सोचता हूं कौन मेरी पुकार सुनेगा
कौन मुझे मुकाम तक ले जाएगा

कोरस–पूर्व :

फिर मैं अपनी आंखों को उठाता हूं
तुझे देखने, हे परमेश्वर
पृथ्वी का कर्ता
और ऊपर स्वर्ग का रचयिता
मैं जानता हूं कि मेरी सहायता,
तुझ से आती है, प्रभु
तेरे प्रेम से घिरा हुआ (2)

कोरस :

तेरे प्रेम से
तेरे अथक प्रेम से
रात और दिन,
तू ऊपर से देखता है
तू मुझे लड़खड़ाने नहीं देगा
तू मुझे गिरने नहीं देगा
अथक प्रेम के पिता

कडी 2 :

जब मैं दिन के उजियाले में रहता हूं
या रात के अन्धियारे में
मैं तेरे पंखों के नीचे छिप जाता हूं
तू मुझे कभी न छोड़ जाएगा,

कोरस पूर्व 2 :

इसलिए मैं अपनी आंखें लगाता हूं
तुझ पर, हे मेरे परमेश्वर
पृथ्वी का कर्ता
और ऊपर स्वर्ग का रचयिता
मैं जानता हूं कि मेरी सहायता,
तुझ से आती है, प्रभु
तेरे प्रेम से घिरा हुआ (2)

सेतु :

घिरा हुआ, घिरा हुआ
तेरे प्रेम से घिरा हुआ (4)

जीवन से उत्तम

एपीसी संगीत **(apcmusic.org)**

कड़ी 1:

हे परमेश्वर, हम तुझे चाहते, तेरे लिए प्यासे
सूखे और धूलिमय देश में
तू हमारा शरणस्थान
हे परमेश्वर, हम तेरे सत्य के भूखे
जब बल मिट जाता
हमारे प्राण तुझे पुकारते

कड़ी 1:

क्योंकि तेरा प्रेम जीवन से उत्तम
तुझ में हमारी ज़रूरतें पूरी होती
हमारे होठ तेरी स्तुति गाते
हम अपने हाथों को उठाकर प्रार्थना करते
तेरा प्रेम जीवन से उत्तम

कड़ी 1:

प्रार्थना में मैं तेरे महिमामय मुख को निहारता
हम यहां खड़े हैं
स्तब्ध और चकित
और सदा, प्रभु
हम तेरे नाम को धन्य कहेंगे
हमारे भय को मिटा, तेरे अतुल्य अनुग्रह से

कड़ी 1:

हे परमेश्वर, तू मेरा परमेश्वर है
कुछ भी नहीं
तेरे अटल प्रेम सा

विषयसूचि

1.	अनंत परमेश्वर, हमारा स्वर्गीय पिता	3
2.	असीम प्रेम	21
3.	हमारे स्वर्गीय पिता का वास्तविक चित्र	35
4.	पिता के प्रेम को ग्रहण करना	48
5.	पिता के प्रेम में बने रहना	68
6.	प्रेम जो अनुशासित करता है	84
7.	हमारे स्वर्गीय पिता का अनुकरण करना	93

परिचय

परमेश्वर के विषय आपका प्रकाशन परमेश्वर के साथ आपके रिश्ते को प्रभावित करता है। परमेश्वर के साथ आपका रिश्ता भी दूसरों के साथ आपके रिश्ते को प्रभावित करता है।

बाइबल परमेश्वर के कई पहलुओं पर प्रकाश डालती है। इन सर्वाधिक सामर्थी प्रकाशनों में से एक पिता का प्रकाशन है। परमेश्वर हमारा स्वर्गीय पिता है। प्रभु यीशु ने हमें सिखाया कि हम परमेश्वर को "हमारा पिता" कहकर पुकारें। बाइबल हमारे लिए पिता के प्रेम को प्रकट करती है। यह पुस्तक पिता के प्रेम का अध्ययन है। हमारे प्रति पिता के प्रेम की समझ इस बात को प्रभावित करती है कि हम परमेश्वर से कैसे प्रेम करते हैं, हम अपने आप से कैसे प्रेम करते हैं और हम दूसरों से कैसे प्रेम करते हैं।

पहली आज्ञा है जो कुछ हमारे पास है उससे परमेश्वर से प्रेम करना। दूसरी आज्ञा है अपने समान दूसरों से प्रेम करना। हम उससे प्रेम करते हैं क्योंकि उसने हमसे पहले प्रेम किया। जब हम इस बात को समझते हैं कि उसने हमसे कितना प्रेम किया, तब परमेश्वर के लिए हमारा प्रेम गहरा हो जाता है। जब हम समझते हैं कि उसने हमसे कितना प्रेम किया, तब हम अपने आप से प्रेम करना सीखते हैं। जब हम अपने आप से प्रेम करते हैं, तब हम दूसरों से भी प्रेम कर पाते हैं। जब हम इस बात को समझते हैं कि परमेश्वर हमें कितना मूल्य देता है, तब हम अपने आप को मूल्य देने लगते हैं। जब हम अपने आप को मूल्य देते हैं, तब हम दूसरों को भी मूल्यवान समझने लगते हैं।

विशिष्ट रूप से हम दूसरों के साथ व्यवहार करते हैं जैसे हम अपने आप से व्यवहार करते हैं। यदि हम अपनी आलोचना करते हैं, अपने आप को दण्ड देते हैं, तो हम दूसरों के साथ भी ऐसा ही करते हैं।

परमेश्वर के प्रेम की हमारी समझ हमें अपने प्रति और दूसरों के प्रति भी नकारात्मकता से मुक्त करती है।

परमेश्वर, हमारा स्वर्गीय पिता, हमसे बिनशर्त और बेपरिमाण प्रेम करता है। हमारे प्रति पिता के प्रेम की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति और प्रदर्शन यीशु मसीह का क्रूस है। जब हम हमारे प्रति पिता के प्रेम को जानते हैं, विश्वास करते हैं और उसमें विश्राम करते हैं, तब सबकुछ बदल जाता है। हम चंगे हो जाते हैं, स्वस्थ हो जाते हैं और हमारे सारे टूटेपन और बंधनों से आज़ाद हो जाते हैं। जब हम पिता के प्रेम से जीवन बिताते हैं, तब हम वैसे ही प्रेम करते हैं जैसे हमसे प्रेम किया गया। हम परमेश्वर से मुक्त रूप से प्रेम करते हैं। हम दूसरों से मुक्त रूप से प्रेम करते हैं। हम जयवंत से भी बढ़कर जीवन बिताते हैं, ऐसे लोगों के रूप में जिन्होंने जीवन की सारी चुनौतियों और अंधकार की शक्तियों को परमेश्वर के अटूट प्रेम के द्वारा पराजित किया है।

यह पुस्तक हमें एक सफर पर ले जाती है कि हम व्यक्तिगत तौर पर पिता के प्रेम को जानें और अनुभव करें। एक अत्यंत रोमांचक अभियान के लिए तैयार हो जाइए – परमेश्वर के असीम प्रेम की गहराइयों में सफर।

परमेश्वर आपको आशीष दे!
आशीष रायचूर

कृपया इस पुस्तक का उपयोग आपके व्यक्तिगत और छोटे समूह के बाइबल अध्ययन में स्वतंत्रता के साथ करें। यदि आप पास्टर हैं, तो इस सत्य का आपकी मण्डली के समक्ष प्रचार करने हेतु आप इस पुस्तक का उपयोग कर सकते हैं।

1

अनंत परमेश्वर, हमारा स्वर्गीय पिता

हमारा स्वर्गीय पिता

मत्ती 6:9
सो तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो; हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए।

बाइबल परमेश्वर के कई पहलुओं पर प्रकाश डालती है कि परमेश्वर कौन है। परमेश्वर के इन सर्वाधिक अद्‌भुत पहलुओं में से एक पिता का पहलू या गुण है। प्रभु यीशु ने हमें प्रार्थना करना सिखाया कि हम परमेश्वर को हमारा पिता जो स्वर्ग में है या स्वर्गीय पिता कहकर पुकारें। प्रभु यीशु अक्सर परमेश्वर पिता का उल्लेख करने हेतु "स्वर्गीय पिता" और "पिता जो स्वर्ग में" इन शब्दों का प्रयोग करता था।

यह सोचने की बात है कि यह अनंत, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञानी, सर्वत्र उपस्थित, स्वयंभू, सनातन परमेश्वर हमारा पिता होने की इच्छा रखे यह विस्मयकारी और अद्‌भुत बात है। पिता होने के नाते, उसके पास बेटे और बेटियों का परिवार है, जिसमें से कुछ स्वर्ग में हैं और अन्य लोग पृथ्वी पर। इस परिवार को उसी से उसका नाम, अर्थात, उसकी पहचान मिली है। प्रेरित पौलुस ने लिखा, *मैं इसी कारण उस पिता के साम्हने घुटने टेकता हूं, जिससे स्वर्ग और पृथ्वी पर, हर एक घराने का नाम रखा जाता है,"* (इफिसियों 3:14)।

वह स्वयंभू और आत्म–निर्भर परमेश्वर है। परमेश्वर को लोगों की ज़रूरत नहीं है। और फिर भी अपनी इच्छा और चुनाव से, उसने लोगों को उत्पन्न करने का संकल्प किया, जिन्हें उसने चाहा कि उसके अपने "बेटे और बेटियां" हों ताकि वह उनका पिता हो सके। उसने अपने आपको ऐसी स्थिति में रखने का चुनाव किया जहां पिता के रूप में

अपने बेटे और बेटियों के रूप में वह हमारी चाह रखता है। इस अर्थ से उसे हमारी "ज़रूरत है।" वह चाहता है कि हम उसे जानें और पिता के रूप में उसका आनंद लें।

यूहन्ना 4:8
....परमेश्वर प्रेम है....

बाइबल हम पर यह भी प्रकट करती है कि परमेश्वर प्रेम है। हमारा स्वर्गीय पिता प्रेम है। जैसा कि हम इस अध्ययन पाठ्यक्रम के माध्यम से जानेंगे, कि परमेश्वर का प्रेम बिनशर्त है। परमेश्वर का प्रेम असीम है। उसका प्रेम अनंत है। परमेश्वर इसी रीति से प्रेम करता है।

अक्सर, जब हम "पिता" इस शब्द के विषय में सोचते हैं तब इसका सम्बंध हम अपने स्वाभाविक माता–पिता के हमारे अनुभव से जोड़ते हैं और इससे कि उन्होंने हमारे साथ कैसे आचरण किया। हममें से कुछ लोगों का अनुभव अपने अभिभावकों/पिता के साथ अत्यंत अद्भुत रहा होगा और इस कारण उनके लिए "पिता" यह शब्द मधुर है। दूसरी ओर, दूसरी ओर हम में से कुछ लोग ऐसे होंगे जिनके लिए "पिता" यह शब्द विद्रोह से भरा होगा। हमारे स्वाभाविक अभिभावकों/पिता के साथ हमारा अनुभव दुखदायक हो सकता है और इस कारण हमारे उन विचारों और यादों को प्रेरित करने वाली सभी बातों का हम तिरस्कार करते हैं।

यह पुस्तक हमारे स्वर्गीय पिता के विषय में है जो किसी भी संसारिक पिता से अत्यंत ऊंचा, श्रेष्ठ और भिन्न है। परमेश्वर बुरे संसारिक पिता के समान नहीं है। इसलिए किसी संसारिक पिता की भिंगों से परमेश्वर की ओर न देखें। आपने अपने संसारिक अभिभावकों/पिता से जो नकारात्मक अनुभव पाए होंगे वे आपको आपके स्वर्गीय पिता के निकट आने से और उसके द्वारा प्राप्त करने से रोकने न पाएं। इस अध्ययन में हमारा लक्ष्य है हमारे स्वर्गीय पिता के

प्रेम को जानना और अनुभव करना। यह जीवन में परिवर्तन लाने वाला है। कोई भी बात आपको पिता के प्रेम को जानने से और अनुभव करने से रोक न पाए।

परमेश्वर सम्बंध रखने वाला परमेश्वर है

यूहन्ना 17:24
"हे पिता, मैं चाहता हूं कि जिन्हें तू ने मुझे दिया है, जहां मैं हूं, वहां वे भी मेरे साथ हों कि वे मेरी उस महिमा को देखें जो तूने मुझे दी है, क्योंकि तू ने जगत की उत्पत्ति से पहिले मुझ से प्रेम रखा।"

जगत की उत्पत्ति से पहले, इससे पहले कि कुछ उत्पन्न किया गया था, त्रिएक परमेश्वर में प्रेम था। परमेश्वरत्व में प्रेम था। परमेश्वर प्रेम था और प्रेम है, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। पिता, वचन, और आत्मा के मध्य समयातीत भूतकाल से – अनंतकाल से प्रेम है।

इससे हमें यह सीखने मिलता है कि परमेश्वर सम्बंध या रिश्ता रखने वाला परमेश्वर है। परमेश्वर प्रेम करता है और उससे प्रेम किया जा सकता है।

मरकूस 12:29–31
[29] यीशु ने उसे उत्तर दिया, सब आज्ञाओं में से यह मुख्य है; हे इस्राएल सुन; प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है।
[30] और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना।
[31] और दूसरी यह है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना; इस से बड़ी और कोई आज्ञा नहीं।

प्रभु यीशु मसीह द्वारा जो सबसे पहली आज्ञा हमें दी गई वह है, परमेश्वर से अपने सम्पूर्ण अस्तित्व से, अर्थात जो कुछ हमारे पास है उससे प्रेम करना – हृदय, प्राण, मन, और शक्ति से। इससे यह सूचित होता है कि परमेश्वर से प्रेम किया जा सकता है। वह हमारे प्रेम को ग्रहण करता है। उसके प्रति हमारे प्रेम का वह आनंद अनुभव करता

है। हमारा प्रेम उसे छू लेता है। अपने लिए वह हमारे प्रेम को महसूस करता है। जब हम उसकी ओर देखते और हमारे हृदय की सच्चाई से उसे कहते हैं "पिता, मैं आपसे प्रेम करता हूं", "प्रभु यीशु, मैं आपसे प्रेम करता हूं", "पवित्र आत्मा, मैं आपसे प्रेम करता हूं" – वह उसे महसूस करता है।

हम उसके स्वरूप में सृजे गए हैं। हमारा स्वभाव सम्बंध या रिश्ता स्थापित करना है। हम प्रेम कर सकते है और हमसे प्रेम किया जा सकता है। हमें परमेश्वर से प्रेम करने के लिए और लोगों से प्रेम करने के लिए सृजा गया था। हम प्रेम करने के लिए – प्रेम प्राप्त करने के लिए सृजे गए थे। हम सम्बंध स्थापित करने वाले हैं और हमने परिवारों में जन्म लिया है इसका एक भाग यह है कि हम बच्चे हैं और अभिभावक– पिता या माता के प्रेम, स्नेह, परवरिश, प्रोत्साहन और प्रशंसा की इच्छा रखते हैं।

परमेश्वर ने हमें उसके असीम, बिनशर्त प्रेम का लक्ष्य बनाया है

इफिसियों 1:4–5
4 जैसा उस ने हमें जगत की उत्पत्ति से पहिले उस में चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों।
5 और अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें अपने लिये पहिले से ठहराया, कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों।

इफिसियों 1:4–5 (मैसेज बायबल)
4 इससे पहले कि उसने पृथ्वी की नींव डाली, हम उसके मन में थे, उसने अपने प्रेम का लक्ष्य हम पर निर्धारित किया था, ताकि हम उसके प्रेम के द्वारा परिपूर्ण और पवित्र हों।
5 बहुत बहुत पहले उसने यह निर्धारित किया था कि वह यीशु मसीह के द्वारा हमें अपने परिवार में गोद लेगा। (इस योजना को बनाने में उसने कैसा आनंद पाया!)

इससे पहले कि परमेश्वर ने जगत की उत्पत्ति की, उसने यह ठहराया कि वह ऐसे लोगों को पाएगा – जो मसीह में चुने गए हैं – जो पवित्र और निर्दोष हों और उसके प्रेम से आच्छादित हो। उसने यह ठहराया कि वह उन्हें अपने स्वयं के परिवार में बेटे और बेटियों के रूप में गोद लेगा, उनका पिता होगा और उन्हें उसे अपने नाम से पुकारेगा। यह उसकी इच्छा की सुमति के अनुसार था। वह इस कार्य को करने हेतु उत्सुक था और उसे करना चाहता था।

इससे पिता का हृदय प्रकट होता है जो बेटे और बेटियों का पाने की इच्छा रखता है। परमेश्वर की इच्छा है हमारे साथ बेटे और बेटियों के रूप में रिश्ता और निकट सहभागिता स्थापित करना, उसके साथ हमारे स्वर्गीय पिता के रूप में। जगत की उत्पत्ति से पहले यह उसके हृदय की इच्छा रही है। हमारी सृष्टि या उत्पत्ति का यही कारण है। उसने हमें बनाया ताकि हम उसके बेटे और बेटियां हो सकें और हम उसके असीम, बिनशर्त प्रेम का लक्ष्य बन सकें।

जगत की उत्पत्ति से पहले ही प्रेम था, और प्रेम के कारण जगत की उत्पत्ति हुई।

प्रेम पाने की हमारी क्षमता को स्थापित करना

परंतु हम पाप के कारण टूटे हुए हैं। प्रेम पाने की हमारी क्षमता टूटी हुई है। दूसरों से प्रेम करने की हमारी क्षमता में दरार है।

प्रेम करने और प्रेम पाने की हमारी क्षमता में दरार होने के कारण, हम कई बातें अनजाने में करते हैं जो वास्तव में हमारे अपने भावनात्मक व्यक्तित्व के चारों ओर दीवारें बन जाती हैं। हम अपने आपसे कहते हैं कि हम प्रेम के बगैर जी सकते हैं। हम अपने आपको लोगों से दूर करते हैं। हम लोगों से मिलना बंद कर देते हैं। हम किसी के बहुत

करीब नहीं जाते। हम अपने आपको भावनात्मक तौर पर दूसरे से अलग कर देते हैं। जब ये बातें वैवाहिक जीवन में आती हैं, तब हम भावनात्मक रीति से अपने जीवनसाथी के साथ निकट सम्बंध बनाने में असमर्थ रह जाते हैं। भावनात्मक घनिष्टता अत्यंत कठिन बात है क्योंकि हमने अपने चारों ओर दीवारों को खड़ा कर रखा है। उसके बाद अभिभावक (पिता) के रूप में (हम अपने बच्चों के लिए भौतिक वस्तुओं के रूप में उत्तम से उत्तम बातों को देना चाहते हैं, परंतु हम एक प्रेमी अभिभावक (पिता) के रूप में स्नेह और सौहार्द्र को व्यक्त कर पाने में असमर्थ होते हैं। हमारे बच्चे सच्चे बिनशर्त प्रेम और स्नेह के अभाव के साथ बड़े होते हैं।

अजीब बात यह है कि प्रेम करने और प्रेम पाने की हमारी टूटी हुई क्षमता के साथ, हम जीवन में जीवन की सारी गलत बातों के साथ "बंध जाते हैं" या "भावनात्मक सम्बंध बना लेते हैं।" हम अपने कार्य, करियर, सफलता, ख्याति, प्रतिष्ठा, प्रशंसा, मान्यता, दूसरों का ध्यान, पैसा, वस्तुओं, आदि के साथ भावनात्मक लगाव स्थापित कर लेते हैं।

परमेश्वर से प्रेम करने से पहले गलत अभिविन्यास

उसके बाद हम अपनी टूटी हुई दशा से परमेश्वर के साथ सम्बंध बनाने का प्रयास करते हैं। परंतु, हमारे अंदर हम गलत कल्पनाएं और गलत अवधारणाएं रखते हैं, और परमेश्वर के साथ हम कैसे व्यवहार करते हैं इस पर इन बातों का प्रभाव पड़ता है। हम इन गलत विचारधाराओं से परमेश्वर के साथ सम्बंध रखने की मनोवृत्ति रखते हैं। ये गलत अवधारणाएं और गलत विचार प्रणालियां परमेश्वर वास्तव में कौन है इसके हमारे प्रकाशन को बिगाड़ देती हैं। परमेश्वर के हमारी तस्वीर (बोध, समझ) बिगड़ जाती है, कलंकित हो जाती हैं और गलत होती है। हमारे स्वर्गीय पिता परमेश्वर के असीम और बिनशर्त प्रेम को स्वीकार करने, ग्रहण करने, और अपनाने में हम असमर्थ होते हैं। यह

बात परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते में बाधा उत्पन्न करती है। हम यहां पर कुछ गलत मुद्राओं (गलत अवधारणाओं) पर विचार करेंगे जो हमें परमेश्वर के असीम और बिनशर्त प्रेम को समझने में हमें रोकती हैं।

1) उड़ाऊ पुत्र

इस मनोवस्था या विचारशैली में लोग हमेशा अपने आपको अयोग्य, नालायक समझते हैं। हमें लगता है कि हम किसी के लिए उपयोगी या अच्छे नहीं हैं, और परमेश्वर द्वारा प्रेम पाने के लिए तो बिल्कुल अच्छे नहीं हैं। इसलिए जब वे परमेश्वर के साथ व्यवहार करते हैं, तब परमेश्वर को प्रेमी और क्षमा करने वाले पिता के रूप में समझना उनके लिए बहुत कठिन होता है।

वे हमेशा उड़ाऊ पुत्र के समान सोचते हैं जो अपने पिता के पास यह कहते हुए गया, *"अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊं; मुझे अपने एक मज़दूर की नाईं रख ले"* (लूका 15:19)।

जब हम गलती करते हैं तब पश्चाताप करना उत्तम और महत्वपूर्ण तो होता है, परंतु परमेश्वर नहीं चाहता कि हम इस मानसिकता में हमेशा बने रहें। बेटे के लौटने पर पिता ने उत्सव मनाया, उसे उत्तम वस्त्र पहनाए, उसकी उंगली में अंगूठी पहचाई और दावत दी और चाहा कि उसका बेटा उसका बेटा ही रहे!

जब हम जान लेते हैं कि हमारे पापों ने क्या किया है, और यह क्षमा जो हमने पाई है कितनी बड़ी है, तब हम बदले में खुलकर उससे प्रेम करते हैं। प्रभु यीशु ने उस पापी स्त्री से जो उसके पास आंसु बहाते हुए आई कहाः *"इसलिये मैं तुझसे कहता हूं: कि इसके पाप जो बहुत थे, क्षमा हुए, क्योंकि इस ने बहुत प्रेम किया; पर जिस का थोड़ा क्षमा हुआ है, वह थोड़ा प्रेम करता है"* (लूका 7:47)। हमारे द्वारा किए गए पापों की संख्या या पापों की भयावहता मायने नहीं रखती, परंतु यह

समझ मायने रखती है कि हमारे पापों ने क्या किया है और हमें कितनी क्षमा की गई है जो खुलकर, बहुतायत से उससे प्रेम करने की प्रतिक्रिया को प्रेरित करता है। हमने बहुत क्षमा पाई है, अतः हमें अपने स्वर्गीय पिता के प्रति हमारे प्रेम का उण्डलेना है। वह इसी के लायक है और चाहता है।

2) गुलाम या दास

इस विचारशैली में, लोगों के मन में हमेशा दास की मानसिकता होती है। उन्हें लगता है कि उन्हें सबकुछ अर्जित करना है, वे अब बड़ी बातों के लिए अपने आपको अयोग्य महसूस करते हैं, उन्हें लगता है कि वे उन बातों के लायक नहीं हैं। इसलिए जब वे परमेश्वर के साथ व्यवहार करते हैं, तब उनके लिए परमेश्वर को ऐसे व्यक्ति के रूप में समझना मुश्किल होता है जो हमें उसके बेटे और बेटियों के रूप में गोद लेता है, हमें इस योग्य बनाता है कि हम एक मिरास या विरासत का आनंद उठाएं और वह हमें अपने वारिस और मसीह के साथ संगी वारिस कहता है।

परंतु बाइबल हमें स्पष्ट रूप से सिखाती है कि परमेश्वर नहीं चाहता है कि हम गुलामों की तरह आचरण करें।

रोमियों 8:15
क्योंकि तुम को दासत्व की आत्मा नहीं मिली, कि फिर भयभीत हो परंतु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिस से हम हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं।

रोमियों 8:15 (कन्टेम्प्ररी इंग्लीश वर्ज़न)
परमेश्वर का आत्मा हमें गुलाम नहीं बनाता जो उससे डरते हों। बल्कि, हम उसकी सन्तान बन जाते हैं और उसे अपना पिता कहकर पुकारते हैं।

रोमियों 8:15 (गुड न्यूज़ बाइबल)
परमेश्वर ने आपको जो आत्मा दिया है वह आपको गुलाम नहीं बनाता और न ही आपको भयभीत करता है; बल्कि, आत्मा आपको परमेश्वर की सन्तान बनाता है, और आत्मा की सामर्थ से हम परमेश्वर को पुकारते हैं, "पिता! मेरे पिता!"

गलातियों 4:4–7
4 परंतु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ।
5 ताकि व्यवस्था के आधीनों को मोल लेकर छुड़ा लें, और हम को लेपालक होने का पद मिलें।
6 और तुम जो पुत्र हो, इसलिये परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारता है, हमारे हृदय में भेजा है।
7 इसलिये तू अब दास नहीं, परंतु पुत्र है; और जब पुत्र हुआ, तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ।

3) अनाथ

यह मानसिकता रखने वाले पितृहीन, त्यागा हुआ महसूस करते हैं, वे सोचते हैं कि उनसे कभी किसी ने प्यार नहीं किया और न ही कभी कोई करेगा, उन्होंने कभी यह महसूस नहीं किया कि कोई उनसे अपनत्व रखता है, वे महसूस करते हैं कि कोई भी उनकी वास्तव में परवाह नहीं करता। इसलिए जब वे परमेश्वर के साथ व्यवहार करते हैं, तो उनके लिए परमेश्वर को प्रेमी, देखभाल करने वाले पिता के रूप में समझना अत्यंत कठिन होता है।

ऊपर उदृधृत पवित्र शास्त्र के दोनों वचन, रोमियों 8:15 और गलातियों 4:4–7 इस बात को दोहराते हैं कि परमेश्वर चाहता है कि हम बेटे और बेटियों के रूप में उसके साथ व्यवहार करें और उसे "पिता" कहकर पुकारें। परमेश्वर नहीं चाहता कि हम "आत्मिक रूप से अनाथ" महसूस करें या जिएं, परंतु उसके बेटे और बेटियों के रूप में जिएं।

4) परित्यक्त

इस मानसिकता में लोगों के अंदर परित्याग का गहरा बोध होता है, वे हमेशा दूर खड़े रहते हैं, अपने आपको अलग, त्यागा हुआ, बहिष्कृत आदि महसूस करते हैं। इसलिए जब वे परमेश्वर के साथ व्यवहार करते हैं, तब उनके लिए परमेश्वर को ऐसे व्यक्ति के रूप में समझना अत्यंत मुश्किल होता है जो उसकी उपस्थिति में हमारा स्वागत करता है। ऐसा व्यक्ति जो हमें प्रोत्साहन देता है कि हम हियाव के साथ और स्वतंत्रता के साथ उसके निकट आएं।

इफिसियों 2:12–13,18
12 तुम लोग उस समय मसीह से अलग और इस्राएल की प्रजा के पद से अलग किए हुए, और प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी न थे, और आशाहीन और जगत में ईश्वररहित थे।
13 पर अब तो मसीह यीशु में तुम जो पहिले दूर थे, मसीह के लोहू के द्वारा निकट हो गए हो।
18 क्योंकि उस ही के द्वारा हम दोनों की एक आत्मा में पिता के पास पहुंच होती है।

बाइबल हमें स्पस्ट रूप से बताती है कि हम यीशु मसीह के लहू के द्वारा परमेश्वर के निकट लाए गए हैं। यीशु के द्वारा परमेश्वर की उपस्तिथि में हमें बिनामूल्य प्रवेश प्राप्त हुआ है। हम त्यागे हुए नहीं है। उसकी उपस्थिति में हमारा स्वागत है। परमेश्वर के अनुग्रह के सिंहासन के निकट हम हियाव के साथ आ सकते हैं (इब्रानियों 4:16)।

5) घमण्डी बड़ा भाई/बहन

यह विचारशैली रखने वालों में घमण्ड का बोध होता है। वे यह सोचने की प्रवृत्ति रखते हैं कि "मैंने कभी महसूस नही किया कि कोई मुझसे प्रेम करता है, मुझे प्रेम की ज़रूरत नही है।" वे जो कुछ करते हैं उसमें वे घमण्ड महसूस करते हैं, "मैं विश्वासयोग्य हूं, मैं अपना काम करता हूं", आदि। सबकुछ काम और कार्यों पर आधारित होता है। इसलिए

जब वे परमेश्वर के साथ व्यवहार करते हैं, तब परमेश्वर को ऐसे व्यक्ति को समझना उनके लिए अत्यंत मुश्किल होता है जो हमें उसके प्रेम में विश्राम करने के लिए बुलाता है, मात्र उसका आनंद अनुभव करने और यह जानने कि वह भी हमसे आनंदित होता है, निमंत्रित करता है।

ऊड़ाऊ पुत्र की कहानी में जो घमण्डी बड़ा भाई है, उसने जब यह सुना कि उसका पिता अपने गुमराह बेटे के लौटने का जश्न मना रहा है, तो वह इस बात को सह नहीं सका। वह शिकायत करने लगा, और अच्छे बेटे के रूप में अपने सारे कर्तव्यों का निर्दोष लेखाजोखा पेश करने लगा। परंतु, जो कुछ पिता का था वह उसका था। बकरी, जश्न और उत्तम भोजन हमेशा ही वहां था, फिर भी बड़े बेटे ने उसका आनंद अनुभव करने का कभी प्रयास नहीं किया। उसके पिता और परिवार के साथ उसका रिश्ता केवल कार्य पर आधारित था, उसमें रिश्तों, परिवार और घर में बेटा होने के विशेषाधिकारों के आनंद की अनुभूति उसमें नहीं थी।

लूका 15:29–30

29 उसने पिता को उत्तर दिया, कि देख; मैं इतने वर्ष से तेरी सेवा कर रहा हूं, और कभी भी तेरी आज्ञा नहीं टाली, तौभी तू ने मुझे कभी एक बकरी का बच्चा भी न दिया, कि मैं अपने मित्रों के साथ आनंद करता।

30 परंतु जब तेरा यह पुत्र, जिस ने तेरी संपत्ति वेश्याओं में उड़ा दी है, आया, तो उसके लिये तूने पला हुआ बछड़ा कटवाया।

यीशु ने मरियम और मार्था से भेंट की (लूका 10:38–42) यह घटना इसी समझ को प्रस्तुत करती है। मार्था का ध्यान अपने स्वामी की सेवा करने पर इतना लगा हुआ था कि उसने उसकी उपस्थिति का आनंद अनुभव करने और स्वामी की शिक्षा से प्राप्त करने की ओर नज़रअंदाज किया। उसने मरियम के विषय में शिकायत की जो स्वामी के शब्दों को ग्रहण करने और उनके घर में उसकी उपस्थिति का आनंद अनुभव करने के क्षण को थाम रही थी। यह गलत मुद्रा अक्सर

हमें फरीसियों के समान दूसरों पर जो उसकी उपस्थिति का आनंद अनुभव करते हैं, दोष लगाने और उनकी आलोचना करने की ओर प्रेरित करती है।

मरकूस 14:3–5
3जब वह बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर भोजन करने बैठा हुआ था तब एक स्त्री संगमरमर के पात्र में जटामांसी का बहुमूल्य शुद्ध इत्र लेकर आई; और पात्र तोड़ कर इत्र को उसके सिर पर उण्डेला।
4 परंतु कोई अपने मन में रिसियाकर कहने लगे, इस इत्र को क्यों सत्यानाश किया गया?
5 क्योंकि यह इत्र तो तीन सौ दीनार से अधिक मूल्य में बेचकर कंगालों को बांटा जा सकता था, और वे उस को झिड़कने लगे।

6) घायल

कुछ लोग हैं जो आहत हुए हैं, शायद एक से अधिक बार शायद इस कारण उनके अंदर दुख और घाव हैं। वे कभी किसी को उनसे प्रेम करने नहीं देंगे और कभी किसी से प्रेम करने का प्रयास नहीं करेंगे। फिर से चोट खाने के डर से वे डरते हैं, वे भयभीत हैं। कभी–कभी, उनके मन में लोगों के प्रति क्षमाहीनता, नफरत और क्रोध भीा होता है, विशेषकर उन लोगों के प्रति जो किसी रीति से उन लोगों के समान होते हैं जिन्होंने उन्हें चोट पहुंचाई है। इसलिए जब वे परमेश्वर के साथ व्यवहार करते हैं, तो उनके लिए परमेश्वर को ऐसे व्यक्ति के रूप में समझना मुश्किल होता है जो लोगों से सच्चाई के साथ, बिना किसी ईर्ष्या के प्रेम करता है और जो कभी उन्हें आहत नहीं करेगा या हानि नहीं पहुंचाएगा। वे हमारे स्वर्गीय पिता के प्रेम में भरोसा करना कठिन पाते हैं।

परंतु परमेश्वर अपने लोगों के लिए अपने अटूट प्रेम की घोषणा करता है, उनके लगातार असफल होने पर भी।

यिर्मयाह 31:3

यहोवा ने मुझे दूर से दर्शन देकर कहा है। मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हूं; इस कारण मैं ने तुझ पर अपनी करूणा बनाए रखी है।

परमेश्वर चाहता है कि हम इस बात को जानें कि उसका प्रेम सर्वश्रेष्ठ है और उसके प्रेम से हमें कुछ भी अलग नहीं कर सकता।

7) आत्म–आलोचक

आत्म–आलोचक वे लोग होते हैं जो अपनी और दूसरों की आलोचना करते हैं। "मैं अच्छा नहीं हूं, कभी अपने आपके लिए, दूसरों के लिए, परमेश्वर के लिए अच्छा नहीं रहा.." इस प्रकार वे सोचते हैं। इसलिए वे स्वीकृति, मान्यता आदि पाने के लिए कुछ कार्य करने हेतु और कार्यक्षम बनने हेतु अपने आपको आगे करते हैं। कभी–कभी यह भय से प्रेरित होता है, और यहां तक कि लोग आगे बढ़ने के लिए दूसरों को नियंत्रित करते हैं, उनके साथ चाल चलते हैं। परिणामस्वरूप, उनके मन में अपने आपको और दूसरों को भी दोष लगाने (आलोचना करने) की कड़वी जड़ें होती हैं। इसलिए जब वे परमेश्वर के साथ व्यवहार करते हैं, तो उनके लिए परमेश्वर को ऐसे व्यक्ति के रूप में समझना कठिन होता है जो अपने महान प्रेम के कारण अनुग्रह में भरपूर होता है। वे यह समझना मुश्किल पाते हैं कि जैसे हम हैं वैसे ही परमेश्वर हमसे प्रेम करता है और प्रेम की खातिर हमें वह देता है जिसके हम लायक नहीं होते। यह उनके लिए हिसाब नहीं रखता।

परंतु पवित्र शास्त्र हमें ऐसे परमेश्वर की ओर निर्देश करता है जो हमारे प्रति उसके महान, बेपरिमाण और बिनशर्त प्रेम के कारण दया में धनी और अनुग्रह में भरपूर है :

इफिसियों 2:4–5

4 परंतु परमेश्वर ने जो दया का धनी है; अपने उस बड़े प्रेम के कारण, जिस ने उस ने हम से प्रेम किया।

5 जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है)।

परमेश्वर का प्रेम ग्रहण करने से कौन सी बात हमें रोकती है?

यदि हम इनमें से किसी या अन्य गलत मुद्राओं को (परमेश्वर के विषय में गलत धारणाओं को) थामे हुए हैं, जो वास्तव में हमें उसे प्रेमी स्वर्गीय पिता के रूप में पहचानने से और हमारे प्रति उसके बिनशर्त और बेपरिमाण प्रेम को ग्रहण करने से रोकती हैं, तो हम उनका परीक्षण करें।

1) उड़ाऊ पुत्र : *उड़ाऊ पुत्र से वह कहता है, तुम यद्यपि पापी हो, फिर मैं तुमसे प्रेम करता हूं।*

2) गुलाम : *गुलाम से वह कहता है, जगत की उत्पत्ति से पहले मैंने अपने बेटे या बेटी के रूप में तुम्हें पाने की योजना बनाई।*

3) अनाथ : *अनाथ से वह कहता है, तुम्हें उत्पन्न करने से पहले, तुम्हारा जन्म होने से पहले मेरे परिवार में तुम्हें गोद लेने की मैंने योजना बनाई।*

4) त्यागा हुआ : *त्यागे हुए से, वह कहता है कि मैं तुमसे अत्याधिक प्रेम करता हूं और तुम्हें मेरे इतने निकट चाहता हूं कि मैंने तुम्हें अपने पास बैठने के लिए लाया है।*

5) घमण्डी बड़ा भाई : *घमण्डी, अपने आपको धनी समझने वाले बड़े भाई से वह कहता है, केवल मेरे प्रेम को ग्रहण कर, वह हमेशा वहां है।*

6) घायल : *घायल से वह कहता है, अन्य लोगों ने तुम्हें चोट पहुंचाई है, परंतु मैं इतना अच्छा हूं कि तुम्हारा बुरा नहीं कर सकता, मैं इतना सौम्य हूं कि तुम्हें हानि नहीं पहुंचा सकता।*

7) आत्म–आलोचक : *आत्म–आलोचक से कहता हैं, मैं तुमसे प्रेम करता हूं क्योंकि मैं प्रेम हूं। अपने आपको दोष मत लगाओ, क्योंकि मैं तुम्हें दोष नहीं लगाता।*

हम उससे बिनती करें कि वह हमें चंगा करे और उसके असीम और बिनशर्त प्रेम को ग्रहण करने और उसके द्वारा प्रेम पाने की हमारी क्षमता को पुनर्स्थापित करे।

परमेश्वर ने हमें उसके असीम और बिनशर्त प्रेम का लक्ष्य बनाया है।

उसका प्रेम हमें उस स्थान पर ले आया है जहां हम उसके बेटे और बेटियां बनें।

परमेश्वर हमारा पिता है। और हम उसके हैं।

1 यूहन्ना 3:1–2
1 देखो, पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएं...

1 यूहन्ना 3:1 (मैसेज बाइबल)
"परमेश्वर ने हम पर कैसे अद्‌भुत प्रेम किया है! उसे देखें – हमें परमेश्वर की सन्तान कहा गया है! हम वही हैं..."

मनन

1. परमेश्वर सम्बंध प्रिय परमेश्वर है इस सत्य पर मनन करें – उत्पत्ति से पहले भी प्रेम था, और प्रेम के कारण उत्पत्ति हुई।

2. हमारी सात गलत मुद्राओं (गलत धारणाओं) का समीक्षण करें और बताएं कि परमेश्वर के साथ हम कैसे व्यवहार करते हैं इस पर इसका कैसे प्रभाव पड़ता है।

3. क्या सात गलत मुद्राओं में से कोई मुद्रा आपके साथ समानता रखती है? प्रार्थना करने में समय बिताएं और परमेश्वर से बिनती करें कि वह हटाए और उसके स्थान पर उसके वचन के सत्य को रखे, ताकि आप आपके स्वर्गीय पिता के रूप में परमेश्वर के साथ, स्वतंत्र रूप से व्यवहार कर सकें।

4. जब आप अपने आपको परमेश्वर के बेटे और बेटी के रूप में देखते हैं, तब अपनी भावनाओं/विचारों को लिखें, ऐसे व्यक्ति के रूप में जो परमेश्वर के असीम और बिनशर्त प्रेम का लक्ष्य है।

5. पवित्र शास्त्र के उदाहरणों को पढ़ें जहां पर प्रभु यीशु ने "स्वर्गीय पिता" (मत्ती 6:14, 32; मत्ती 15:13; मत्ती 18:35; लूका 11:13) और "पिता जो स्वर्ग में है" (मत्ती 5:16, 45, 48; मत्ती 6:1, 9; मत्ती 7:21; मत्ती 12:50; मत्ती 18:19; मरकुस 11:25–26) आदि शब्दों का उपयोग किया है। इन संदर्भों पर मनन करें और विचार मंथन करें कि इन प्रतिदिन के जीवन संदर्भों में आप स्वर्गीय पिता के रूप में परमेश्वर के साथ कैसे व्यवहार कर सकते हैं।

2

असीम प्रेम

उसके प्रेम की असीमित महानता

इफिसियों 3:17–19

17 और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे कि तुम प्रेम में जड़ पकड़कर और नेव डाल कर,
18 सब पवित्र लोगों के साथ भली भांति समझने की शक्ति पाओ; कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, और ऊंचाई, और गहराई कितनी है।
19 और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे है, कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ।
इफिसियों 3:17–19 (ऍम्प्लिफाईड बाइबल)
17 और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे। और तुम प्रेम में (गहराई से) जड़ पकडें और (मज़बूत) नेव डालें,
18 और सब पवित्र लोगों (परमेश्वर के लोगों) के साथ उसके प्रेम की चौड़ाई, और लम्बाई, और ऊंचाई, और गहराई को समझने की क्षमता पाओ (उस अद्भुत्, अंतहीन प्रेम को पूर्णतया अनुभव करो)।
19 और मसीह के उस प्रेम को जान सको (व्यावहारिक तौर पर, व्यक्तिगत अनुभव के द्वारा) जो (मात्र) ज्ञान (बिना अनुभव के) से परे है, कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ (आपके सम्पूर्ण व्यक्तित्व में) (ताकि आपके जीवनों में परमेश्वर की उपस्थिति का समृद्ध अनुभव पाओ, स्वयं परमेश्वर से पूर्ण रूप से भर जाओ और उमड़ने लगो)।

जैसा कि इन वचनों में प्रेरित पौलुस द्वारा व्यक्त किया गया है, हमारा स्वर्गीय पिता हमारे लिए यही इच्छा रखता है कि हम ऐसे स्थान में आएं जहां हम हमारे प्रति उसके अथाह, असीमित प्रेम में गहराई से जड़ पकड़ें (वृक्ष के समान) और मज़बूती से नेंव पकड़ें (मज़बूत बुनियाद रखने वाली इमारत के समान)।

उपर्युक्त 18–19 वचनों में, प्रेरित पौलुस पिता के प्रेम को जो पूर्णतया बौद्धिक नहीं, परंतु व्यक्तिगत और अनुभवात्मक है, "समझने" और "जानने" का उल्लेख करता है। ग्रीक भाषा में "समझना" इस शब्द का शाब्दिक अर्थ है उत्सुकता के साथ ग्रहण करना, थामना, अपनाना, व्यक्तिगत अनुभव से समझना और जानना। हमारा स्वर्गीय पिता परमेश्वर हमारे लिए चाहता है कि हम व्यक्तिगत अनुभव के द्वारा व्यावहारिक रूप से हमारे प्रति उसके बिनशर्त प्रेम की अथाह, असीमित महानता को जानें।

पिता के प्रेम की चौड़ाई, लम्बाई, ऊंचाई और गहराई अथाह है (वचन 18)।

- ✓ उसका प्रेम जगत के समान विशाल है : *"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया* (यूहन्ना 3:16)।
- ✓ उसके प्रेम की लम्बाई इतनी दूर तक है कि हम में से कोई भी वहां तक जा नहीं पाया है। *"हम तो सब के सब भेड़ों की नाईं भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया"* (यशायाह 53:6)।
- ✓ उसके प्रेम की गहराई उस नरक के समान अत्यंत गहरी है जिसमें हमने अपने आपको डाल दिया है : *इसीलिये जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उन का पूरा पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उन के लिये विनंती करने को सर्वदा जीवित है"* (इब्रानियों 7:25)।
- ✓ उसका प्रेम ऊपर आकाश के इतना ऊंचा है : उसने हमें *"मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया"* (इफिसियों 2:6)।
- ✓ उसका प्रेम समयातीत, स्थायी और अथक है : *"यहोवा ने मुझे दूर से दर्शन देकर कहा है। मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हूं; इस*

कारण मैं ने तुझ पर अपनी करूणा बनाए रखी है" (यिर्मयाह 31:3)।

यीशु मसीह का क्रूस – परमेश्वर के अथाह प्रेम की सर्वाच्च अभिव्यक्ति

यूहन्ना 3:16–17
16 क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना इकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परंतु अनन्त जीवन पाए।
17 परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा,, कि जगत पर दंड की आज्ञा दे परंतु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।

रोमियों 5:8
परंतु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।

1 यूहन्ना 4:9–10
9 जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, वह इस से प्रकट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं।
10 प्रेम इस में नहीं, कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इस में है, कि उस ने हम से प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित्त के लिये अपने पुत्र को भेजा।

हमारे प्रति पिता के महान प्रेम की अभिव्यक्ति और प्रदर्शन के रूप में बाइबल यीशु मसीह के क्रूस की ओर हमें संकेत करती है। अक्सर, परमेश्वर हमसे कितना प्रेम करता है यह दर्शाने या प्रमाणित करने हेतु हम अस्थायी वस्तुओं की ओर देखते हैं। यदि हम अपने शैक्षिक या व्यावसायिक जीवनों में उन्नति करते हैं, तो हम इसे इस बात के चिन्ह के रूप में लेते हैं कि परमेश्वर हमसे प्रेम करता है। यदि हम उसमें उन्नति नहीं कर पाए, तो इसे हम इस बात के निर्देश के रूप में लेते हैं कि शायद परमेश्वर किसी रीति से हमसे क्रोधित या अप्रसन्न है।

परंतु, बाइबल हमें सिखाती है कि हमारे प्रति परमेश्वर ने अपने प्रेम को इस प्रकार प्रकट या अभिव्यक्त किया कि उसने यीशु को हमारे लिए मरने हेतु भेज दिया। इसलिए जब कभी हमारे प्रति पिता के प्रेम के चिन्ह या संकेत की हम इच्छा रखते हैं तो हमें यीशु की ओर देखना होगा और देखना होगा कि उसने क्रूस पर हमारे लिए क्या किया।

हम पापी थे। हमारे पापों ने हमें परमेश्वर से दूर कर दिया था। हमारे पाप हमें नरक ले जा रहे थे – परमेश्वर से अलग अनंतकाल। हम शैतान के अधीन थे। प्रभु यीशु क्रूस पर मर गया, उसने सम्पूर्ण मानवजाति के पापों का पूरा दण्ड उठाया, पाप, शैतान, नरक, और कब्र को जीत लिया। वह विजयी होकर जी उठा और वापस पिता के पास स्वर्ग पर चला गया। उसने वह सबकुछ पूरा कर दिया जिसकी क्षमा पाने, पाप और शैतान से छुटकारा पाने और परमेश्वर के परिवार में लाए जाने के लिए प्रत्येक मानव व्यक्ति को आवश्यकता थी। काम पूरा हो चुका है। यह प्रेम का कार्य था जो स्वयं परमेश्वर ने हमारे लिए किया। यीशु मसीह का क्रूस हमारे प्रति पिता के प्रेम की असीमित महानता – असीम गहराई, चौड़ाई, लम्बाई और ऊंचाई की ओर संकेत करता है। हम में से प्रत्येक के लिए केवल इतना बचा है कि हम व्यक्तिगत रीति से विश्वास के द्वारा मसीह ने जो कुछ किया है उसे ग्रहण करें और उसके द्वारा पूर्ण किए गए कार्य के अनुसार जीवन बिताएं।

परमेश्वर का प्रेम इतना चौड़ा है कि उसमें प्रत्येक व्यक्ति समाहित है।

परमेश्वर का प्रेम इतना लम्बा है कि वह अत्यंत दूर रहने वाले पापी तक पहुंचता है।

परमश्ेवर का प्रेम इतना गहरा है कि वह अत्यंत गहरे स्थानों तक नीचे पहुंचता है।

परमेश्वर का प्रेम इतना ऊंचा है कि वह हमें स्वयं परमेश्वर तक, उसके अपने सीधे हाथ पर ऊंचा उठाता है।

क्रूस सिद्ध प्रेम के लिए हमारी क्षमता को पूनर्स्थापित करता है

प्रभु यीशु हमारे प्रति न केवल परमेश्वर के असीमित अथाह प्रेम को दिखाने के लिए क्रूस पर मर गया, बल्कि वह हमें स्वस्थ बनाने के लिए मर गया।

यशायाह 53:5
परंतु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएं।

उसने हमारे सारे पापों का दंड दिया। उसने हमें शांति देने के लिए क्लेश (दंड) उठाया। इब्रानी भाषा में शांति के लिए शब्द है "शालोम" जिसका अर्थ है सम्पूर्णता और पूर्ण कल्याण। जो घाव उसने सहे उनके द्वारा हमने सारे रोगों से चंगाई पाई है (मत्ती 8:16–17)।

वह क्रूस के द्वारा सिद्ध प्रेम हमारी ओर बढ़ाता है। वह हमें स्वस्थ भी बनाता है ताकि हम परमेश्वर के सिद्ध प्रेम को ग्रहण कर सकें और परमेश्वर के सिद्ध प्रेम को बांट सकें।

जब परमेश्वर के पुत्र के द्वारा व्यक्त किए असीमित प्रेम को हम ग्रहण करते हैं, तब हम स्वस्थ हो जाते हैं। हम उस महान प्रेम को समझते हैं जो परमेश्वर हमारे लिए और हमारे आसपास के लोगों के लिए रखता है। वह प्रेम को ग्रहण करने और प्रेम प्रदान करने की हमारी क्षमता बढ़ाता है।

उसके महान प्रेम के कारण भरपूर करूणा और अनुग्रह है

इफिसियों 2:1–7

1 और उस ने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे।
2 जिन में तुम पहिले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न न माननेवालों में कार्य करता है।
3 इन में हम भी सब के सब पहिले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे, और शरीर, और मन की मनसाएं पूरी करते थे, और और लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे।
4 परंतु परमेश्वर ने जो दया का धनी है; अपने उस बड़े प्रेम के कारण, जिस से उस ने हम से प्रेम किया।
5 जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है),
6 और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया।
7 कि वह अपनी उस कृपा से जो मसीह यीशु में हम पर है, आने वाले समयों में अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए।

उसके महान प्रेम के कारण जिससे उसने हमसे प्रेम किया, वह दया और अनुग्रह में धनी है। उसने हमें जिलाया कि हम उसके दाहिने हाथ पर बैठें।

हमने परमेश्वर के प्रेम में अपना स्थान नहीं कमाया। उसके प्रेम के कारण, उसकी दया और अनुग्रह के द्वारा हम इस स्थान में लाए गए।

परमेश्वर का प्रेम उसकी दया और अनुग्रह के द्वारा व्यक्त होता है। उसके असीमित प्रेम के कारण, परमेश्वर हम पर दया और अनुग्रह करता है।

परमेश्वर की दया हमारी ओर बढ़ाई गई परमेश्वर की करूणा, दयालुता और भलाई है, जो हमारे अतीत को, हमारी गलतियों को, हमारी गड़बड़ियों को को नज़रअंदाज़ करती है। दया उस न्याय को रोकती है जिसके हम लायक हैं। परमेश्वर दया का धनी है। उसकी दया आपके गम्भीर से गम्भीर अपराधों से धनी है! पाप महंगा है, परंतु परमेश्वर की दया अधिक धनी है!

परमेश्वर का अनुग्रह जो परमेश्वर देता या करता है, वह है। वह परमेश्वर की सम्पन्नता है जो हमें दी गई है। अनुग्रह हमें वह देता है जिसके हम लायक नहीं हैं और जिसे हम स्वयं कमा नहीं सकते या प्राप्त नहीं कर सकते।

उड़ाऊ पुत्र की कहानी – दया और अनुग्रह का दिया जाना

लूका 15:11–32

11 फिर उसने कहा, "किसी मनुष्य के दो पुत्र थे।
12 उनमें से छोटे ने पिता से कहा, 'हे पिता संपत्ति में से जो भाग मेरा हो, वह मुझे दे दीजिए।' उसने उनको अपनी संपत्ति बांट दी।
13 और बहुत दिन न बीते थे कि छोटा पुत्र सब कुछ इकट्ठा करके एक दूर देश को चला गया और वहां उसने कुकर्म में अपनी संपत्ति उड़ा दी।
14 जब वह सब कुछ खर्च कर चुका, तो उस देश में बड़ा अकाल पड़ा, और वह कंगाल हो गया।
15 और वह उस देश के निवासियों में से एक के यहां जा पड़ा। उसने उसे अपने खेतों में सूअर चराने के लिए भेजा।
16 और वह चाहता था कि उन फलियों से जिन्हें सूअर खाते थे, अपना पेट भरे; और उसे कोई कुछ नहीं देता था।
17 "जब वह अपने आपे में आया, तब कहने लगा, 'मेरे पिता के कई मज़दूरों को आवश्यकता से अधिक रोटी मिलती है, और मैं यहां भूखा मर रहा हूं!
18 मैं अब उठकर अपने पिता के पास जाऊंगा और उससे कहूंगा, कि पिता जी, मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है।
19 अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊं, मुझे अपने एक

मज़दूर के समान रख ले।'
20 "तब वह उठकर अपने पिता के पास चल पड़ा। और वह अभी दूर ही था, कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया, और दौड़कर उसे गले लगाया, और बहुत चूमा।
21 पुत्र ने उससे कहा, 'पिता जी, मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है; और अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊं।'
22 "परंतु पिता ने अपने दासों से कहा, 'झट अच्छे से अच्छा वस्त्र निकालकर उसे पहनाओ, और उसके हाथ में अंगूठी, और पांवों में जूतियां पहनाओ।
23 और पला हुआ बछड़ा लाकर मारो ताकि हम खाएं और आनंद मनाएं।
24 'सन्तान क्योंकि मेरा यह पुत्र मर गया था, फिर जी गया है; खो गया था, अब मिल गया है।' और वे आनंद करने लगे।
25 "परंतु उसका जेठा पुत्र खेत में था; और जब वह आते हुए घर के निकट पहुंचा, तो उसने गाने बजाने और नाचने का शब्द सुना।
26 और उसने एक दास को बुलाकर पूछा, 'यह क्या हो रहा है?'
27 उसने उससे कहा, 'तेरा भाई आया है; और तेरे पिता ने पला हुआ बछड़ा कटवाया है, इसलिए कि उसे भला चंगा पाया है।'
28 "यह सुनकर वह क्रोध से भर गया, और उसने भीतर जाना न चाहा; परंतु उसका पिता बाहर आकर उसे मनाने लगा।
29 उसने पिता को उत्तर दिया, 'देख, मैं इतने वर्ष से तेरी सेवा कर रहा हूं, और कभी भी तेरी आज्ञा नहीं टाली, तौभी तू ने मुझे कभी एक बकरी का बच्चा भी न दिया कि मैं अपने मित्रों के साथ आनंद करता।
30 परंतु जब तेरा यह पुत्र, जिसने तेरी संपत्ति वेश्याओं में उड़ा दी है, आया, तो उसके लिए तू ने पला हुआ बछड़ा कटवाया।'
31 "उसने उससे कहा, 'पुत्र, तू सर्वदा मेरे साथ है; और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा ही है।
32 परंतु अब आनंद करना और मगन होना चाहिए, क्योंकि यह तेरा भाई मर गया था, फिर जी गया है; खो गया था, अब मिल गया है'।"

पिता ने **दया और अनुग्रह** को बढ़ाकर अपने पुत्र के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त किया।

दया – पिता ने पुत्र ने की हुई सारी गलतियों को क्षमा कर दिया – सम्पत्ति को बर्बाद कर दिया, परिवार के अनादर और बदनामी का कारण बना, अपने व्यक्ति का अवमूल्यन किया, आदि।

अनुग्रह – पिता ने पुत्र को वह दिया जिसके वह लायक नहीं था – वस्त्र, अंगूठी, जूते, महंगी दावत और घर का वारिस होने का अधिकार!

काश, हम उसकी ओर फिर जाएं, तो हम उसके अथाह, असीम प्रेम को प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करेंगे! हम उसकी भरपूर दया और अनंत अनुग्रह को प्राप्त करेंगे।

उसके असीमित प्रेम के विषय यह हमें क्या प्रकट करता है

जब हम विद्रोह करते हैं, तब भी वह हमसे प्रेम करता है। जब हम गंदगी से लिपटे हुए और प्रेम में डूबे हुए होते हैं, तब भी वह हम से प्रेम करता है।

जब हम टूटी हुई दशा में, व्यर्थ और बर्बाद होते हैं, तब भी वह हमसे प्रेम करता है।

जब हम अत्यंत बुरी दशा में होते हैं, तब भी वह हम से प्रेम करता है।

यहां सागर सा विशाल प्रेम है! उसका प्रेम हमारी अत्यंत गहरी दुष्टता, हमारा गम्भीर भ्रमण, हमारा विश्वासहीन होकर भटकना, हमारी पूर्ण स्वच्छंदता से बढ़कर है, परे है। पिता हम से असीमित, अथक प्रेम करता है। पिता का प्रेम नाप तोल से परे हैं, जो उसके पुत्र यीशु मसीह में हम पर प्रकट किया गया। उसके असीमित, अथाह प्रेम से वह हम पर अपना दया और अनुग्रह उण्डेलता है।

रोमियों 8:32
जिसने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परंतु उसे हम सब के लिये दे दिया : वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्यों कर न देगा?

उसकी दया और अनुग्रह पाने हेतु और परमेश्वर की सन्तान बनने हेतु प्रार्थना

परमेश्वर हमें यह अद्‌भुत अवसर प्रदान करता है कि हम अपने सारे पापों की क्षमा प्राप्त करें और यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा उसकी अपनी सन्तान बन जाएं। यह निर्णय हममें से प्रत्येक को व्यक्तिगत तौर पर लेना है। दूसरा कोई हमारे लिए यह नहीं कर सकता। हमें यीशु मसीह में विश्वास करने का और हमारे बाकी जीवनभर उसका और केवल उसी का अनुसरण करने का और व्यक्तिगत चुनाव करना है। यहां पर बाइबल कहती है : *"परंतु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं"* (यूहन्ना 1:12)।

यदि आपने अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में यीशु को ग्रहण करने का और अपने पापों की क्षमा पाने और परमेश्वर की सन्तान बनने हेतु उसमें विश्वास करने का कभी निर्णय नहीं लिया है, तो आप अभी ऐसा कर सकते हैं।

आप अपना निर्णय लेने हेतु इस नमूने के तौर पर दी गई प्रार्थना का उपयोग कर सकते हैं। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु यीशु, मेरे पापों के लिए क्रूस पर मरने हेतु और हमारे प्रति पिता के महान प्रेम को दिखाने के लिए आपका धन्यवाद। मेरा विश्वास है कि जब आप मेरे लिए क्रूस पर मर गए तब आपने मेरे सारे पापों का दाम चुका दिया। मैं विश्वास करता हूं कि आपने शैतान को हरा दिया, नरक और मृत्यु को जीत लिया और तीसरे दिन जी उठे।

मैं विश्वास करता हूं कि आप आज जीवित हैं और मुझे परमेश्वर के परिवार में लाने का इंतज़ार कर रहे हैं। आज, मैं आपको अपना उद्धारकर्ता और प्रभु ग्रहण करता हूं। मैं आपमें विश्वास करता हूं। मुझे अपनी सन्तान बनाइये और बाकी जीवनभर आपका अनुसरण करने में मेरी सहायता कीजिए। यीशु के नाम में, आमेन।

यहां प्रेम है (विलियम रीस, 1900)

यहां प्रेम है सागर सा विशाल
करूणा बाढ़ के समान
जब जीवन का अधिपति, हमारा उद्धार
अपने अनमोल लहू को बहाया
उसका प्रेम कौन न स्मरण करे?
उसकी स्तुति कौन न गाए?
उसे भूला नहीं जा सकताए
स्वर्ग के सनातन दिनों में।

हे क्रूस के पर्वत
सोते गहरे और विशाल
परमेश्वर की दया के फाटकों से
विशाल और अनुग्रह से पूर्ण बाढ़
अनुग्रह और प्रेम विशाल नदियों से
उण्डेले गए स्वर्ग से असीम
और स्वर्गीय शांति और सिद्ध न्यास
दोषी जगत को प्रेम से चूमे।

मैं तेरे प्रेम को ग्रहण करूं
मेरे सारे दिन तुझ से प्रेम करूं
केवल तेरे राज्य को खोजूं मैं
मेरा जीवन तेरी स्तुति के लिए हो
तू ही मेरी महिमा हो,
मैं जगत में कुछ न देखता,
तूने मुझे धोकर शुद्ध किया
तूने मुझे आज़ाद किया।

तू सत्य में मेरी अगुवाई करता
तेरी आत्मा से तेरे वचन से
तेरा अनुग्रह मेरी ज़रूरत पूरी करता
जब मैं तुझ में विश्वास करता।
अपनी भरपूरी से तू उण्डेलता
तेरा महान प्रेम और सामर्थ मुझ पर।
अथाह, असीम और भरपूर
मेरा हृदय तेरी ओर बढ़ता।

मनन

1. विश्वासियों के नाते हमारे प्रति पिता के असीम प्रेम में "जड़ पकड़ना" और "नींव बांधना" महत्वपूर्ण क्यों होगा?

2. परमेश्वर की दया और अनुग्रह हमारे प्रति उसके असीम प्रेम से प्रवाहित होते हैं। आप 'दया' और 'अनुग्रह' से क्या समझेंगे?

3. कल्पना करें कि आप परमेश्वर के प्रेम के सागर में डूबे हैं। आपके विचार लिखें। ऐसे बेपरिमाण तरीके से बिनशर्त प्रेम किए जाने का क्या अर्थ है?

3

हमारे स्वर्गीय पिता का वास्तविक चित्र

हमारे पास परमेश्वर का सही चित्र, वास्तविक तस्वीर होना ज़रूरी है, जैसा कि परमेश्वर के वचन में प्रस्तुत किया गया है।

गलत चित्र के कारण हम परमेश्वर के सामने गलत मुद्रा अपनाते है, अर्थात, हम परमेश्वर के साथ गलत तरीके से व्यवहार करते हैं। उदाहरण के तौर पर, हम यदि सोचते हैं कि परमेश्वर कंजूस है, अनुदार है, आशीष देने के लिए और अपने लोगों को प्रयोजन करने तथा उन्हें सम्पन्न बनाने के लिए अनिच्छुक है, तो हम अपने जीवनों में परमेश्वर की आशीष और प्रयोजन मांगते समय हियाव के साथ प्रार्थना नहीं कर पाएंगे। हमारी प्रार्थनाएं 'यदि' और 'शायद' से भरी होंगी।

स्वर्गीय पिता का गलत चित्र हमें परमेश्वर की इच्छा के विषय अनिश्चित रख सकता है।

स्वर्गीय पिता का गलत चित्र जीवन की चुनौतियों के मध्य हमें निर्बल और भयभीत रख सकता है। हम निश्चित रूप से नहीं जानते कि पिता हम से प्रसन्न है या क्रोधित है।

हम में से कुछ लोग ऐसे घरों में पले–बढ़े हैं जहां पर हमने कभी माता–पिता के प्रेम को या पिता के प्रेम को अनुभव नहीं किया। हमारे माता–पिता अच्छे भी रहे होंगे, परंतु हमने कभी माता–पिता के प्रेम को अनुभव नहीं किया।

इसलिए इस अध्याय में हम उन गुणों की तुलना में अपने व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर या पूर्वकल्पित विचारों के आधार पर स्वर्गीय पिता के रूप में परमेश्वर के कुछ पहलुओं को प्रस्तुत करते हैं।

इस अध्याय में हमारा उद्देश्य हमारे स्वर्गीय पिता का बाइबल के अनुसार परिप्रेक्ष्य प्राप्त करना है। ये सम्पूर्ण वर्णन नहीं हैं, परंतु ये महत्वपूर्ण और अत्यावश्यक निरूपक हैं जो हमारे स्वर्गीय पिता का बाइबल आधारित चित्र तैयार करने में सहायता करते हैं।

1) न बदलने वाला स्वर्गीय पिता

परमेश्वर न बदलने वाला स्वर्गीय पिता है जिस पर निर्भर रहा जा सकता है, भरोसा रखा जा सकता है। ऐसे पिता की तुलना में जिसके स्वभाव के विषय में आप निश्चित रूप से नहीं जानते और यह निश्चित नहीं होता कि वे कैसे कार्य करेंगे या कैसे प्रतिक्रिया व्यक्त करेंगे।

याकूब 1:17
क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिसमें न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है।

हमारा स्वर्गीय पिता जो है, जो कहता है और जो करता है उस विषय में वह 'सुसंगत' है। हम उस पर भरोसा कर सकते हैं और उस पर पूर्णतया निभर रह सकते हैं।

2) अमोघ स्वर्गीय पिता

परमेश्वर अमोघ स्वर्गीय पिता है जो हमें कभी निराश नहीं करता। यह उन अभिभावकों के विपरीत है जो हमें अपमानित करते हैं या अनुपस्थित माता–पिता। माता–पिता जो 'वहां' होते हैं, परंतु जब हमें उनकी आत्यधिक ज़रूरत होती है तब वे 'वहां नहीं होते।'

इब्रानियों 13:5
तुम्हारा स्वभाव लोभरहित हो, और जो तुम्हारे पास है, उसी पर सन्तोष करो; क्योंकि उसने आप ही कहा है, "मैं तुझे कभी न छोड़ूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा।"

परमेश्वर स्वर्गीय पिता है जो हमारे लिए हमेशा उपस्थित रहता है। परमेश्वर इतना अच्छा है कि वह हमें किसी प्रकार से हानि नहीं पहुंचाता, इतना बुद्धिमान है कि वह गलती नहीं करता, इतना बलवान है कि वह हमें नीचा नहीं दिखाता।

3) भरपूर और उदार पिता

परमेश्वर स्वर्गीय पिता है जो भरपूर और उदार है। यह कंजूस, अनुदार माता–पिता के विपरीत है, जिनसे हम कुछ भी मांगने से डरते हैं। परमेश्वर स्वर्गीय पिता है जो हमारी हर एक ज़रूरत पूरी करता है।

मत्ती 6:31–32

31 "इसलिए तुम चिन्ता करके यह न कहना कि हम क्या खाएंगे, या क्या पीएंगे, या क्या पहनेंगे।

32 क्योंकि अन्यजाति इन सब वस्तुओं की खोज में रहते हैं। तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है, कि तुम्हें ये सब वस्तुएं चाहिए।"

मत्ती 7:7–11

7 "मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढ़ो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा।

8 क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है; और जो ढूंढ़ता है, वह पाता है; और जो खटखटाता है, उसके लिए खोला जाएगा।

9 तुम में से ऐसा कौन मनुष्य है कि यदि उसका पुत्र उससे रोटी मांगे, तो वह उसे पत्थर दे;

10 या यदि वह मछली मांगे, तो उसे सांप दे?

11 इसलिए जब तुम बुरे होकर, अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को अच्छी वस्तुएं क्यों न देगा?

परमेश्वर सांसारिक अभिभावकों से अत्यंत उत्तम है। उसे हमारी ज़रूरतों का एहसास है और वह अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देता है।

याकूब 1:5
परंतु यदि तुममें से किसी को बुद्धि की घटी हो, तो परमेश्वर से मांगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है, और उसको दी जाएगी।

परमेश्वर सबको देता है, वह उदारता के साथ देता है और वह बिना दोष ढूंढें, बिना शिकायत या तकरार के देता है।

भजनसंहिता 84:11
क्योंकि यहोवा परमेश्वर सूर्य और ढाल है; यहोवा अनुग्रह करेगा, और महिमा देगा; और जो लोग खरी चाल चलते हैं, उन से वह कोई अच्छा पदार्थ रख न छोड़ेगा।

हमारे भरपूर, उदार स्वर्गीय पिता को जानना हमें स्वतंत्र करता है ताकि यह जानते हुए कि जो कुछ हम मांगते हैं, वह देगा, हम ज़रूरत के समय में सहायता और प्रयोजन मांगने हेतु हियाव के साथ अनुग्रह के सिंहासन के पास आ सकते हैं।

4) दयालु पिता

परमेश्वर हमारा स्वर्गीय पिता है जो क्रोध करने में धीमा और दया करने में उदार है। यह उन माता–पिता के विपरीत है जो बुरा स्वभाव रखते हैं या चिडचिडे होते हैं और सहज क्रोधित हो जाते हैं।

हम सभी गलतियां करते हैं, परंतु दयालु स्वर्गीय पिता है जो क्षमा करता है।

भजनसंहिता 103:8
यहोवा दयालू और अनुग्रहकारी, विलम्ब से कोप करनेवाला और अति करुणामय है।

विलापगीत 3:22–23
22 हम मिट नहीं गए; यह यहोवा की महाकरूणा का फल है, क्योंकि उसकी दया अमर है।

23 प्रति भोर वह नई होती रहती है; तेरी सच्चाई महान है।

परमेश्वर दयालु स्वर्गीय पिता है जो दूसरा अवसर देता है!

हमारा स्वर्गीय पिता परमेश्वर अपनी दया के अनुसार हमें प्रेम से सुधारता और अनुशासित भी करता है। हमारे साथ उसके सारे अनुशासनकारी व्यवहार में, वह करूणामय है और हमारा हित देखता है। हम आनेवाले अध्याय में इस पर चर्चा करेंगे।

5) मुक्तिदाता पिता

परमेश्वर हमारा स्वर्गीय मुक्तिदाता पिता है, जो उसके सारे कार्यों में छुड़ाने के – पुनःप्राप्ति, पुनःस्थापन, पुनर्निर्माण के तथा और बड़ी महिमा तक ऊंचा उठाने के मार्ग ढूंढ़ता है। यह उन माता–पिताओं के विपरीत है जो अंतिम चेतावनी देते हैं और हमारे साथ अपना रिश्ता खत्म कर देते हैं।

यशायाह 63:16
निश्चय तू हमारा पिता है, यद्यपि इब्राहीम हमें ग्रहण नहीं करता; तौभी, हे यहोवा, तू हमारा पिता और हमारा छुड़ानेवाला है; प्राचीनकाल से यही तेरा नाम है।

इस विषय में अधिक जानने हेतु एपीसी प्रकाशन की विनामूल्य पुस्तक देखें : "परमेश्वर का छुड़ाने वाला हृदय।"

6) स्वीकार करनेवाला पिता

परमेश्वर हमारा स्वर्गीय पिता स्वीकार करनेवाला पिता है। वह हमें स्वीकार करता है, वह हममें आनंदित होता है और प्रेम की नज़रों से हमारी ओर देखता है। यह उस माता व पिता के विपरीत है जो हमेशा हमें नीचा दिखाता है, हमारे विषय में हीनता की बातें सोचता है, हमें अयोग्य, नालायक के रूप में देखता है, हमारे विषय में हमेशा संदेह और स्वीकार न करनेवाला भाव रखता है।

इफिसियों 1:4–6
4 जैसा उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों।
5 और अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें अपने लिए पहले से ठहराया, कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों,
6 कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उसने हमें उस प्यार में सेंत मेंत दिया।

क्योंकि हम जानते हैं कि उसकी दृष्टि में हम प्रिय और स्वीकारणीय हैं, अतः उसकी उपस्थिति में हम आदर के साथ, परंतु आनंद के साथ और स्वतंत्रता के साथ प्रवेश करते हैं, यह जानते हुए कि हमारा हमेशा वहां स्वागत होगा। वह स्वर्गीय पिता है जो हमसे आनंदित होता है और चाहता है कि हम उससे आनंदित हों।

हम जैसे हैं वैसा हमें स्वीकार किया गया है – और जैसा उसने हमें मसीह में बनाया है वैसे ही हमें स्वीकार किया है। हमें स्वीकारणीय होने के लिए या हमारी सराहना हो इसलिए हमें कुछ 'उपलब्धि प्राप्त करने' की ज़रूरत नहीं है। हमें स्वीकार किया गया है। तिरस्कार का सारा बोध मिट गया है!

7) भरपूर अनुग्रह का पिता

परमेश्वर स्वर्गीय पिता है, वह अनुग्रह से परिपूर्ण है जो हम पर उन बातों को लुटाता है जिनके हम लायक भी नहीं, केवल इसलिए क्योंकि वह हमारे प्रति अनुकूल और दयालु है। यह उस माता–पिता के विपरीत है जिसके लिए प्रत्येक बात को उचित तरीके से अर्जित करना है और हम केवल वही पाते हैं जिसके हम लायक होते हैं।

ऊंची अपेक्षाएं रखनेवाले माता–पिता हमें ऐसा महसूस करा सकते हैं कि हम कभी अच्छे नहीं हो सकते, और हमें यह एहसास दिलाते हैं कि हम चुक गए, असफल रहे हैं। हमें केवल तब मान्यता मिलती है जब हम उनकी अपेक्षाओं से आगे बढ़ जाते हैं।

यदि परमेश्वर के अनुग्रह की यह समझ हमारे पास नहीं है, तो हम हमारे कामों के आधार पर – जो काम हम परमेश्वर के लिए, सेवकाई में, कलीसिया आदि में करते हैं, उनके आधार पर परमेश्वर के साथ व्यवहार करने की प्रवृत्ति रखते हैं। जितना अधिक हम '(कर्म) करते हैं', उतना अधिक हमें महसूस होता है कि परमेश्वर ने हमें स्वीकार किया है। जो कुछ हम करते हैं उस प्रत्येक बात के लिए हम मान्यता और प्रशंसा पाने की खोज में रहते हैं और अपनी पहचान इसी पर आधारित करते हैं – क्योंकि हम अनुग्रह को नहीं समझते।

जब हम भरपूर अनुग्रह से परिपूर्ण पिता के रूप में परमेश्वर को समझते हैं, तब हम दूसरों के प्रति अनुग्रहकारी होते हैं, क्योंकि हमें दिए गए परमेश्वर के अनुग्रह को हम मूल्यवान समझते हैं।

इफिसियों 2:7
कि वह अपनी उस कृपा से, जो मसीह यीशु में हम पर है, आनेवाले समयों में अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए।

रोमियों 5:17
क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य किया, तो जो लोग अनुग्रह और धर्मरूपी वरदान बहुतायत से पाते हैं वे एक मनुष्य के, अर्थात् यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य करेंगे।

8) सामर्थ देनेवाला पिता

परमेश्वर हमारा स्वर्गीय पिता है जो हमें सामर्थ प्रदान करता है। वह हमारे अंदर जो उत्तम है उसे देखता है और हमें सक्षम बनाता है कि हम वैसे ही उत्तम बने रहें जैसे उसने हमारे लिए ठहराया है। वह अपने राज्य के संसाधनों और अपने राज्य की ज़िम्मेदारियों को हमें सौंपता है। यह उस माता या पिता के विपरीत है जो हम पर भरोसा नहीं रखते, और सोचते हैं कि हम अयोग्य हैं, अविश्वसनीय हैं और किसी काम के नहीं।

हमारा स्वर्गीय पिता हमारे विषय में अच्छी बातें सोचता है और हमारे लिए उसके पास उत्तम योजनाएं हैं (यिर्मयाह 29:11)।

लूका 12:32
"हे छोटे झुण्ड, मत डर! क्योंकि तुम्हारे पिता को यह भाया है कि तुम्हें राज्य दे।

कुलुस्सियों 1:12
और पिता का धन्यवाद करते रहो, जिसने हमें इस योग्य बनाया कि ज्योति में पवित्र लोगों के साथ मीरास में सममागी हो।

9) अनंत पिता

परमेश्वर हमारा स्वर्गीय पिता है जो नाप–तोल से परे है और जो हममें, हमारे द्वारा और हमारे लिए बेपरिमाण रूप से कार्य करता है। यह सांसारिक माता–पिताओं के विपरीत है, जो कुछ वे कर सकते हैं, जो वे दें सकते हैं और हमारे लिए जो कुछ वे हो सकते हैं, उसमें वे सीमित होते हैं।

वह कभी बूढ़ा नहीं होता (भजनसंहिता 102:26)
वह कभी थकता नहीं (यशायाह 40:28)
उसकी बुद्धि कभी समाप्त नहीं होती (यशायाह 40:28)

इफिसियों 3:20
अब जो ऐसा सामर्थी है कि हमारी बिनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हममें कार्य करता है।

वह "पिता" भी है और "माता" भी है। अतः यदि आप चाहते हैं, तो आप कह सकते हैं कि पिता परमेश्वर के पास "माता का हृदय" है, ऐसा हृदय जो निगरानी करनेवाला, परिपोषण करनेवाला, और स्नेही है।

यशायाह 49:14–16

14 परंतु सिय्योन ने कहा, यहोवा ने मुझे त्याग दिया है, मेरा प्रभु मुझे भूल गया है।

15 क्या यह हो सकता है कि कोई माता अपने दूधपिउवे बच्चे को भूल जाए और अपने जन्माए हुए लड़के पर दया न करे? हां, वह तो भूल सकती है, परंतु मैं तुझे नहीं भूल सकता।

16 देख, मैंने तेरा चित्र अपनी हथेलियों पर खोदकर बनाया है; तेरी शहरपनाह सदैव मेरी दृष्टि के सामने बनी रहती है।

अपने आपको धोखा देने और शैतान की झूठी बातों का इन्कार करना

परमेश्वर के विषय में जो गलत चित्र हमने चितारा है, वह वास्तव में अपने आपको धोखा देना है। परमेश्वर कौन है इस विषय में हम अपने आपको धोखा देते हैं।

शैतान भी हमसे झूठ बोलता है और चाहता है कि हम अपने मनों में परमेश्वर का गलत चित्र रखें।

कुछ गलत धारणाओं के विषय में विचार करें जो शायद परमेश्वर के विषय में हममें से कुछ लोगों के मनों में है :

1) न बदलने वाले स्वर्गीय पिता के बजाय ऐसे परमेश्वर के विषय में सोचना जिसके स्वभाव के विषय में कुछ कहा नहीं जा सकता।

2) अमोघ स्वर्गीय पिता के बजाय अविश्वसनीय परमेश्वर।

3) भरपूर और उदार परमेश्वर के बजाय, अनुदार या कंजूस परमेश्वर जिसे किसी रीति से यह यकीन दिलाने की ज़रूरत है कि उसे हमें देना है।

4) दयालु परमेश्वर के बजाय आग और गंधक से हमारा न्याय करने का इंतज़ार करने वाला परमेश्वर।

5) मुक्तिदाता परमेश्वर के बजाय, ऐसा परमेश्वर जो हमारा द्वारा किए गए प्रत्येक गलत कार्य का हिसाब रखता है, हमारे अतीत के अपराधों को स्मरण रखता है।

6) स्वीकार करने वाले पिता के बजाय दोष लगाने वाला परमेश्वर।

7) भरपूर अनुग्रह रखने वाले पिता के बजाय, ऐसा परमेश्वर जिसे संतुष्ट करना मुश्किल है और जो चाहता है कि प्रत्येक बात अर्जित की जाए।

8) सामर्थ देने वाले पिता के बजाय, ऐसा परमेश्वर जो नहीं चाहता कि हम उसके साथ साझेदारी रखें।

9) अनंत पिता के बजाय, ऐसा परमेश्वर जो उन बातों में सीमित है जो वह हमारे लिए करता है।

प्रार्थना करने में और आपके जीवन के विषय में सत्य की घोषणा करने में कुछ समय बिताएं, ताकि आप आपके हृदय और मन में हमारे स्वर्गीय पिता का सच्चा, बाइबल आधारित चित्र स्थापित करने में सक्षम हों।

प्रिय स्वर्गीय पिता, आपका वचन मुझे आपके विषय में और आप वास्तव में जो है उस विषय में जो प्रगट करता है उसके लिए मैं धन्यवाद करता हूं। आज, मैं आपके विषय में सारी गलत कल्पनाओं, विचारों और गलत धारणाओं का, जो मैंने आपके विषय में अपने मन में पाल रखी हैं इन्कार करता हूं, और आपके वचन में प्रस्तुत सत्य को ग्रहण करता हूं। मैं अंगीकार करता हूं और आपका धन्यवाद करता हूं कि आप मेरे न बदलने वाले स्वर्गीय पिता हैं, मैं हर समय आप पर भरोसा कर सकता हूं और आप पर निर्भर रह सकता हूं। मैं अंगीकार करता हूं और आपका धन्यवाद करता हूं कि आप मेरे अमोघ स्वर्गीय

पिता हैं, आप मुझे कभी नहीं छोड़ेंगे, कभी नहीं त्यागेंगे या मुझे नीचा नहीं दिखाएंगे। मैं अंगीकार करता हूं और आपका धन्यवाद करता हूं कि आप मेरे भरपूर और उदार स्वर्गीय पिता हैं, आप हमेशा उदारतापूर्वक मेरे लिए प्रयोजन करेंगे और किसी भी अच्छी वस्तु को मुझसे रोक नहीं रखेंगे। मैं अंगीकार करता हूं और आपका धन्यवाद करता हूं कि आप मेरे दयालु पिता हैं, जो हमेशा दयालु हैं और मेरे पापों, असफलताओं और गलतियों को क्षमा करने के लिए तैयार रहते हैं। मैं अंगीकार करता हूं और आपका धन्यवाद करता हूं कि आप मेरे मुक्तिदाता पिता हैं, जो हमेशा गड़बड़ी करने पर भी मुझे पुनःस्थापित करने, पुनर्निर्माण करने, पुनः लौटाने और मुझे उठाकर खड़ा करने का प्रयास करता है। मैं अंगीकार करता हूं और आपका धन्यवाद करता हूं कि आप मेरे स्वीकार करने वाले पिता हैं, जो हमेशा उसकी उपस्थिति में मेरा स्वागत करते हैं और इस बात से प्रसन्न होता है कि मैं उसका हूं। मैं अंगीकार करता हूं और आपका धन्यवाद करता हूं कि आप मेरे भरपूर अनुग्रह के मेरा पिता हैं, जो मुझे धन, आशीषें और वरदान देते हैं जिनके मैं लायक नहीं और जिन्हें मैं अर्जित नहीं कर सकता। मैं अंगीकार करता हूं और आपका धन्यवाद करता हूं कि आप मेरे न बदलने वाले स्वर्गीय पिता हैं, मैं अंगीकार करता हूं और आपका धन्यवाद करता हूं कि आप मेरे सामर्थ देने वाले पिता हैं, जो हमेशा मुझमें विश्वास करते हैं और मुझे सामर्थ देते हैं कि मैं उन बातों को लेने के लिए अपने हाथ को बढ़ाऊं जो आपने मेरे लिए रखी हैं। मैं अंगीकार करता हूं और आपका धन्यवाद करता हूं कि आप मेरे अनंत पिता हैं, जो मेरी किसी भी ज़रूरत से अत्यंत महान, अत्यंत सामर्थी, किसी भी परिस्थिति से जिसका मुझे सामना करना पड़ सकता है, असीमित रूप से बुद्धिमान हैं। आपकी सन्तान होने के आनंद और विशेषाधिकार के लिए आपका धन्यवाद हो। यीशु के नाम में!

मनन

1. हमारे स्वर्गीय पिता के कौन से पहलू आपको आज अत्यंत प्रसंगोचित लगते हैं, और क्यों?

अ. न बदलने वाला स्वर्गीय पिता

_____

_____

ब. अमोघ स्वर्गीय पिता

_____

_____

क. भरपूर और उदार स्वर्गीय पिता

_____

_____

ड. करूणामय पिता

_____

_____

इ. मुक्तिदाता पिता

_____

_____

फ. स्वीकार करने वाला पिता

_____

_____

ग. अनुग्रह से भरपूर पिता

ह. सामर्थ देने वाला पिता

ई. अनंत पिता

2. जिन पहलूओं को हमने सम्बोधित किया है उनकी दृष्टि से आपके स्वर्गीय पिता के साथ आपकी समझ में और उस कारण आपके रिश्ते में कैसे बदलाव आया है?

4

पिता के प्रेम को ग्रहण करना

परमेश्वर सदृश्य प्रेम

परमेश्वर सदृश्य प्रेम का उल्लेख करने हेतु बाइबल *'अगापे'* इस ग्रीक शब्द का प्रयोग करती है। 1 कुरिन्थियों 13 हमें इस प्रकार के प्रेम की एक संक्षिप्त झलक देता है, जो परमेश्वर के पास है और जिसमें हमें चलना है। इस दृष्टिकोन से पढ़ें कि यह उस प्रेम का वर्णन है जो परमेश्वर हमारे लिए रखता है।

1 कुरिन्थियों 13:4–8
4 प्रेम धीरजवन्त है, और कृपाल है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं।
5 वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता।
6 कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परंतु सत्य से आनन्दित होता है।
7 वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है।
8 प्रेम कभी टलता नहीं; भविष्यद्वाणियां हों, तो समाप्त हो जाएंगी; भाषाएं हों, तो जाती रहेंगी; ज्ञान हो, तो मिट जाएगा।

परमेश्वर प्रेम है (1 यूहन्ना 4:8)।
परमेश्वर हमारे प्रति धीरजवंत और दयालु है।
परमेश्वर हमारे प्रति अशिष्ट नहीं है।
परमेश्वर 'स्वार्थी' नहीं है, परंतु वास्तव में हममें रूचि रखता है।
परमेश्वर सहज क्रोधित नहीं होता।
परमेश्वर हमारे विषय में बुरा नहीं सोचता।
परमेश्वर पाप में आनंदित नहीं होता।

जब हम सत्य में चलते हैं, तब परमेश्वर सत्य में आनंदित होता है। परमेश्वर सारी बातें सह लेता है।

परमेश्वर हमारे लिए सर्वोत्तम (करने की प्रवृत्ति रखता है और उसके लिए उसे राजी किया जा सकता है) "पर विश्वास रखता है और उसकी आशा करता है।"

परमेश्वर हमारे प्रति उसके प्रेम में धीरज रखता है। उसका प्रेम स्थायी है। यह प्रेम कभी खत्म नहीं होता, कभी सूखता नहीं या कभी उसका अंत नहीं होता। यह प्रेम बना रहता है, स्थायी रहता है...वह सनातन है...जैसा कि यिर्मयाह 31:3 में कहा गया है : *"यहोवा ने मुझे दूर से दर्शन देकर कहा है। मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हुं; इस कारण मैंने तुझ पर अपनी करूणा बनाए रखी है।"*

परमेश्वर कभी चूकता नहीं। हमारे प्रति उसका प्रेम कभी मिटता नहीं या कमज़ोर नहीं होता।

परमेश्वर हमसे इसी प्रकार प्रेम करता है। हमें इसे ग्रहण करने की, इसे अंगीकार करने की और उसे हममें गहराई से बसा लेने की ज़रूरत है कि परमेश्वर ने हमसे इस प्रकार प्रेम किया है।

हम कुछ अंतर्दृष्टियों को दोहराएंगे और उसी प्रकार उस प्रेम के विषय में जो परमेश्वर हमारे लिए रखता है, कुछ अतिरिक्त अंतर्दृष्टियां प्रस्तुत करेंगे, और उसके बाद उसके प्रेम को जानने, उस पर विश्वास करने, उसे ग्रहण करने और उसमें विश्राम करने के महत्व पर चर्चा करेंगे।

प्रेम जो बिनशर्त है

परमेश्वर का प्रेम बिनशर्त है। उसके साथ कोई शर्तें नहीं लगी हैं। वह मात्र हमें निमंत्रण देता है कि हम उसके प्रेम को ग्रहण करें और उसके प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त करें।

1 यूहन्ना 4:9–10
9 जो प्रेम परमेश्वर हमसे रखता है, वह इससे प्रकट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं।
10 प्रेम इसमें नहीं कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया, परंतु इसमें है कि उसने हमसे प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित्त के लिए अपने पुत्र को भेजा।

ऐसा नहीं है कि हम परमेश्वर की खोज में लगे हुए थे। बल्कि, परमेश्वर अपने प्रेम में हमें खोजता हुआ आया। और उसके महान प्रेम के कारण, उसे जानने और उसके परिवार में होने और हमारे प्रति उसकी भलाई को अनुभव करने से हमें रोकने वाली बातों को हटाने के लिए उसने बड़ी कीमत चुकाई। उसने पूरी कीमत चुकाई।

हमारी उपलब्धियों के कारण, या हमारी बुद्धि के कारण, या हमारे द्वारा किए गए किसी काम के कारण हमसे प्रेम नहीं किया गया है। अब हम केवल यह कर सकते हैं कि हम उसके प्रेम को ग्रहण करें और उसके प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त करें।

1 यूहन्ना 4:19
हम इसलिए प्रेम करते हैं, कि पहले उसने हमसे प्रेम किया।

प्रेम जो असामान्य है

यूहन्ना 16:26–27
26 "उस दिन तुम मेरे नाम से मांगोगे, और मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मैं तुम्हारे लिए पिता से बिनती करूंगा।
27 क्योंकि पिता तो आप ही तुमसे प्रीति रखता है, इसलिए कि तुमने मुझ से प्रीती रखी है, और यह भी प्रतीति की है कि मैं पिता से निकल आया।

प्रभु यीशु ने उसके पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण के बाद वाले समय का उल्लेख करते हुए कहा कि "उस दिन" हम उसके नाम में सीधे

पिता से प्रार्थना करेंगे। उसने कहा कि हम ऐसा कर सकते हैं और उसे हमारी ओर से बिनती करना न होगा। हम यीशु के नाम से सीधे पिता से मांग सकते हैं इसका कारण यह है क्योंकि स्वयं पिता हमसे प्रेम करता है, क्योंकि हम यीशु से प्रेम करते हैं और हमने यीशु में विश्वास किया है। यह बताते हुए कि पिता स्वयं हमसे प्रेम करता है, यह गौर करना दिलचस्प होगा कि प्रभु यीशु ने "प्रीति रखता है" के लिए दूसरे ग्रीक शब्द का उपयोग किया। उसने *"चीपसमव" इस ग्रीक* शब्द का उपयोग किया जो मित्रता और स्नेह के विषय में बताता है। वस्तुतः प्रभु यीशु कह रहा था कि 'स्वयं पिता तुम्हारा मित्र है और वास्तव में तुम्हारे प्रति स्नेह रखता है'।

यह कहें : *"पिता आप ही मुझसे प्रीति रखता है। मेरा स्वर्गीय पिता मेरा मित्र है और वास्तव में मेरे प्रति स्नेह रखता है। मैं यीशु के नाम में हियाव के साथ मेरे निवेदन उसके सामने रखता हूं।"*

यूहन्ना 17:23,26
23 "मैं उनमें और तू मुझ में कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएं, और जगत जाने कि तू ही ने मुझे भेजा, और जैसा तू ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही उनसे प्रेम रखा।
26 और मैंने तेरा नाम उनको बताया और बताता रहूंगा कि जो प्रेम तुझ को मुझ से था, वह उनमें रहे और मैं उनमें रहूं।"

ऊपर वचन 23 में, यीशु इस बात की पुष्टि करता है कि पिता हमसे प्रेम करता है, ठीक उसी रीति से (तरीके से और प्रमाण में) जैसा पिता यीशु से प्रेम करता है।

यह कहें : *'पिता मुझसे प्रेम करता है, ठीक उसी रीति से जैसे वह यीशु से प्रेम करता है। मुझसे पिता ने प्रेम किया है, ठीक उसी रीति से जैसे यीशु से पिता ने प्रेम किया है।'*

पिता आपसे उसी रीति से प्रेम करता है जैसे वह यीशु से प्रेम करता है।

ऊपर 26 वचन में, प्रभु यीशु ने प्रार्थना की कि हममें पिता का प्रेम होगा – हम अपने हृदयों में पिता के प्रेम को महसूस करेंगे, जानेंगे, अनुभव करेंगे और उससे अभिभूत होंगे – वही प्रेम जो पिता उसके पुत्र यीशु मसीह के लिए रखता है।

यह कहें : *"मैं मेरे प्रति पिता के प्रेम को महसूस करता हूं, जानता हूं, अनुभव करता हूं और उसके द्वारा अभिभूत हूं, यह वही प्रेम है जिससे पिता ने यीशु से प्रेम किया।"*

इस प्रकार का प्रेम असामान्य और निष्पक्ष है।

हम सामान्य तौर पर सोचेंगे कि जो असिद्ध हैं, उनकी तुलना में जो सिद्ध है उससे बहुत अधिक प्रेम किया जाएगा। परंतु यह सोचना कि हम, जो असिद्ध हैं जिनसे पिता प्रेम करता है, वह उसी रीति से प्रेम करता है जैसे वह उस सिद्ध व्यक्ति से, उसके पुत्र से प्रेम करता है, यह अत्यंत अद्‌भुत है।

परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता (रोमियों 2:11)। परमेश्वर निष्पक्ष है (प्रेरितों के काम 10:34)। हम इस बात को जानते हैं। परंतु अक्सर जिस तरह से हम परमेश्वर के साथ व्यवहार करते हैं, हम सोचते हैं कि परमेश्वर, हमारी तुलना में अन्य विश्वासियों पर अधिक कृपा करता है या अधिक प्रेम करता है। इस विषय में विचार करें। परमेश्वर अपने पुत्र के विषय में पक्षपात नहीं करता – हमसे वह जितना प्रेम करता है उससे अधिक प्रेम वह उससे नहीं करता। तो क्या वह और किसी के साथ पक्षपात करेगा, तथा जितना वह हमसे प्रेम करेगा उससे अधिक उनसे प्रेम करेगा? हमारे प्रति परमेश्वर का प्रेम निष्पक्ष है।

हम प्रिय में हैं और परमेश्वर के प्रिय हैं।

मरकुस 1:11
और यह आकाशवाणी हुई, "तू मेरा प्रिय पुत्र है, तुझ से मैं प्रसन्न हूं।"

पिता ने यीशु का उल्लेख अपने प्रिय पुत्र के रूप में किया। प्रेरित पौलुस हमें बताता है कि हम भी "परमेश्वर के प्रिय" हैं और "उस प्रिय में स्वीकार किए गए" हैं।

रोमियों 1:7
उन सब के नाम जो रोम में परमेश्वर के प्यारे हैं और पवित्र होने के लिए बुलाए गए हैं, हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे।

इफिसियों 1:6
कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उस ने हमें उस प्यारे में सेंत मेंत दिया।

यह कहें : *"मैं प्रिय में हूं और मैं परमेश्वर का प्रिय हूं। परमेश्वर अपने प्रिय के समान मुझसे प्रेम करता है।"*

प्रभु यीशु ने प्रार्थना की कि पिता का प्रेम हमारे हृदयों में हो ताकि हम व्यक्तिगत रीति से स्वयं उसे महसूस करें, जानें और अनुभव करें (यूहन्ना 17:26)। इस प्रार्थना का उत्तर परमेश्वर ने हमारे हृदयों में पवित्र आत्मा को भेजकर दिया।

रोमियों 5:5
और आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है।

परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में पवित्र आत्मा द्वारा उंडेला गया है। पवित्र आत्मा वह है जो हमें पिता के प्रेम का व्यक्तिगत अनुभव देता है। पवित्र आत्मा ही है जो हमें पिता के प्रेम में चलने हेतु सामर्थ प्रदान करता है।

प्रेम जो हमें लज्जित नहीं होने देता

बाइबल सिखाती है कि *"प्रेम से सब अपराध ढप जाते हैं।"* (नीतिवचन 10:12; 1 पतरस 4:8)

प्रेम छिपाता है। वह वस्त्र पहनाता है। वह रक्षा करता है। प्रेम नग्नता और लज्जा को दूर करता है, और प्रतिष्ठा, सुरक्षा और सम्मान प्रदान करता है।

परमेश्वर का प्रेम हमारे लिए यही करता है।

इफिसियों 1:4
जैसा उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों।

कुलुस्सियों 1:21–22
21 और उसने अब उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हारा भी मेल कर लिया जो पहले निकाले हुए थे और बुरे कामों के कारण मन से बैरी थे,
22 ताकि तुम्हें अपने सम्मुख पवित्र और निष्कलंक, और निर्दोष बनाकर उपस्थित करे।

हम परमेश्वर की दृष्टि में पवित्र, निष्कलंक और निर्दोष हैं, और यह हमारे प्रति उसके प्रेम के कारण है!

प्रेम जो अटूट है

हमें पिता के प्रेम से कुछ भी हटा नहीं सकता, रोक नहीं सकता, बाधा नहीं ला सकता या अलग नहीं कर सकता। उसका प्रेम कभी हमसे हताश नहीं होता। इसका वर्णन करने का शायद दूसरा कोई तरीका नहीं है, हम यहां रोमियों 8 में पढ़ते हैं :

रोमियों 8:35–37

35 कौन हमको मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नंगाई, या जोखिम, या तलवार?
36 जैसा लिखा है कि तेरे लिए हम दिन भर घात किए जाते हैं, हम वध होनेवाली भेड़ो के समान गिने गए हैं।
37 परंतु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हमसे प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर है।
38 क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊंचाई,
39 न गहिराई और न कोई और सृष्टि हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी।

जीवन हमारे मार्ग में चाहे जो लाकर रखे, हमारे प्रति पिता के प्रेम से हमें अलग नहीं किया जा सकता। मनुष्य की कोई शक्ति, नर्क की कोई सामर्थ, कोई विपत्ति, कोई आपदा, कोई चुनौती, कुछ भी हमें हमारे प्रति यीशु मसीह में पिता का जो प्रेम है उससे अलग नहीं कर सकता। हमारे प्रति उसका प्रेम अटूट है। हम हर परिस्थिति में, हर अवस्था में सुनिश्चित और भरोसेमंद रह सकते हैं, चाहे हमें जिस बात का सामना करना पड़े, पिता हमसे प्रेम करता है।

प्रेम जो हमें जयवन्त से भी बढ़कर बनाता है

पौलुस इस बात की पुष्टि करता है कि पिता के अटूट प्रेम के कारण, इन सारी बातों में – बुरी से बुरी बातों में – हम उसके द्वारा जिसने हमसे प्रेम किया जयवन्त से भी बढ़कर हैं।

रोमियों 8:37
परंतु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हमसे प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं।

जयवन्त से भी बढ़कर होना भारी विजय प्राप्त करना, निर्णायक विजय प्राप्त करना, पूर्ण विजय प्राप्त करना है, आगे बढ़कर पराजित करना, विजय से अधिक प्राप्त करना है।

बुरी से बुरी परिस्थिति जो हमारे विरोध में लाई जा सकती है, उसमें भी हम हमारे प्रति परमेश्वर के प्रेम के कारण, भारी विजय प्राप्त कर सकते हैं और पूर्ण विजेता बन सकते हैं! उसकी विजय हमें परिपूर्ण विजेता के रूप में आगे लाती है। इसका कारण यह है कि हमारे विरोध में आनेवाली ये सारी बातें, मसीह में हमारे प्रति पिता का जो प्रेम है उससे हमें अलग करने में असफल हैं!

अतः बुरी से बुरी परिस्थितियों के मध्य भी, हम अपने सिरों को उठाकर विजेताओं, विजयी वीरों के रूप में, जयवन्त से भी बढ़कर चल सकते हैं! हमारे प्रति पिता के प्रेम के कारण हम हर समय जीत हासिल करते हैं।

प्रेम जो हमारे बन्धन खोलता है (हमें स्वतंत्र करता है)

भय में सताव होता है। एक और दूसरा स्थान है जिसमें सताव है, वह है नर्क। भय में जीना नर्क में जीने के समान, यातना के स्थान में जीने के समान है।

सिद्ध प्रेम सब प्रकार के भय को दूर कर देता है। वह हमें भय से मुक्त कर देता है।

सिद्ध प्रेम केवल एक ही स्त्रोत – परमेश्वर की ओर से आता है। सिद्ध प्रेम को अनुभव करना हमें स्वतंत्र कर देता है।

1 यूहन्ना 4:17–18
17 इसी से प्रेम हममें सिद्ध हुआ कि हमें न्याय के दिन हियाव हो; क्योंकि जैसा वह है, वैसे ही संसार में हम भी हैं।
18 प्रेम में भय नहीं होता, वरन् सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है, क्योंकि भय से कष्ट होता है; और जो भय करता है, वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ।

1 यूहन्ना 4:17–18 (एम्प्लिफाइड बाइबल)
17 इसी में (उसके साथ एकता और सहभागिता), प्रेम हमारे साथ पूरा और सिद्ध होता है, ताकि हमें न्याय के दिन में हियाव हो (उसका सामना करने हेतु आश्वासन और साहस के साथ); क्योंकि जैसा वह है, वैसे ही संसार में हम भी हैं।
18 प्रेम में भय नहीं होता (भय का अस्तित्व नहीं रहता)। वरन् सिद्ध (परिपूर्ण, पूर्ण विकसित) प्रेम भय को दूर कर देता है, क्योंकि भय में (दैवीय) दण्ड शामिल होता है (की अपेक्षा होती है); इसलिए जो भय रखता है (परमेश्वर के न्याय का), वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ (परमेश्वर के प्रेम की पर्याप्त समझ में नहीं बढ़ा)।

सिद्ध प्रेम ऐसा प्रेम है जो परिपूर्ण, पूर्ण विकसित है। इसका सम्बन्ध इस बात से है कि हम हमारे प्रति परमेश्वर के प्रेम की पर्याप्त समझ में बढ़ें।

क्योंकि प्रेम हममें सिद्ध होना चाहिए, इसलिए हमें हमारे प्रति पिता के महान प्रेम की व्यक्तिगत, अनुभवात्मक समझ में बढ़ना है। पिता के प्रेम से सम्बन्धित इस सम्पूर्ण अध्ययन का यही उद्देश्य है। हमारे प्रति पिता के प्रेम की व्यक्तिगत, अनुभवात्मक समझ में बढ़ने में हमारी सहायता करना।

जब ऐसा होता है, तब हमारे बन्धन टूट जाते हैं। हम सब प्रकार के भय, आतंक और परमेश्वर के न्याय या दण्ड या दोष के भय और पीड़ा से मुक्ति पाते हैं!

यहीं पर और अभी, जब प्रेम हममें सिद्ध हो गया है, अर्थात, जब हम परमेश्वर के प्रेम की पर्याप्त समझ प्राप्त करते हैं, तब हम परमेश्वर के दण्ड, न्याय और दोष के सारे भय, या आतंक और यातना से छुटकारा पाते हैं। अपने स्वर्गीय पिता के साथ व्यवहार करने की शैली में हम पूर्णतया स्वतंत्र होते हैं। हमारे मन में उसके प्रति महान आदरयुक्त भय होता है और हम उसका पूर्ण आदर करते हैं। परंतु हम

उसके दूषित भय और आतंक से पूर्णतया स्वतंत्र हो जाते हैं। हम उसके द्वारा दोष लगाए जाने, दण्डित किए जाने और त्याग दिए जाने के भय के किसी भी बोध के बिना उसके पास आते हैं।

जैसा वह (यीशु) है, वैसे हम हैं जो इस संसार में रहते हैं (1 यूहन्ना 4:17)।

आत्मिक संसार में हमारा स्थान वैसा ही होता है जैसे यीशु का!

पिता के सामने हमारा स्थान वैसा ही होता है जैसा कि यीशु का है!

अन्धकार की शक्तियों के सामने हमारा स्थान वैसा ही है जैसा यीशु का है!

जैसा वह है, वैसे हम हैं।

इसलिए परमेश्वर के सिंहासन के सामने हम भयभीत या डरे हुए नहीं हैं, और न ही दुष्टात्माओं से।

पिता के प्रेम को अनुभव करना हमें आजाद कर देता है...

...अपराधबोध, लज्जा और दोष के प्रत्येक बोध से। हम पवित्र हैं और उसके प्रेम से ढांके गए हैं और निर्दोष हैं (इफिसियों 1:4)।

...प्रेमरहित या त्यागे हुए महसूस करने से। हम उस प्रिय में पूर्णतया, सम्पूर्ण रूप से और पूरी रीति से स्वीकार किए गए हैं (इफिसियों 1:6)

...कार्य संपादन करने या उसके प्रेम को अर्जित करने की ज़रूरत से। इससे पहले कि हम उसे जानते उसने हमसे प्रेम किया (1 यूहन्ना 4:9–10)।

...अयोग्यता और व्यर्थता के सारे बोध से। उसके प्रेम के खातिर, उसने हमें अपने बेटे और बेटियों के रूप में गोद लिया है (इफिसियों 1:5)।

...कैदी, गुलाम और जाल में फंसे हुओं के समान एहसास से। आप स्वतंत्र हैं। उसने हमें दासत्व का आत्मा नहीं दिया कि हम दासों के समान भयभीत हों (रोमियों 8:15)।

...नियंत्रित होने, ठगे जाने, इस्तेमाल किए जाने के सारे बोध से। हमने उसके प्रेम से सामर्थ पाई है।

...हमारे जीवनों में भय की सारी भावनाओं से, भविष्य के विषय में भय, असफलता के भय, अभाव और अपर्याप्तता के भय से। उसका सिद्ध प्रेम सब प्रकार के भय को दूर कर देता है (1 यूहन्ना 4:18)।

हमारी जो उम्मीदें पूरी नहीं हुई हैं, उसके प्रेम में सुलझाई गई हैं।

हमारे अनपेक्षित अवर्णनीय, उलझन भरे अनुभव और जीवन की घटनाएं जो एक समय ऐसी प्रतीत होती थी कि वे हमें बिखेर देगी, अब महत्वहीन प्रतीत होती हैं और उसके प्रेम के कारण हम जयवन्त से भी बढ़कर खड़े होते हैं।

हमारी अपनी व्यक्तिगत गलतियां, गलत चुनाव और हीन निर्णय उसके प्रेम में घुल जाते हैं और हम बिना किसी लज्जा के खड़े होते हैं, यह जानते हुए कि हम प्रिय हैं और उस प्रिय में पूर्णतया स्वीकारणीय है!

जब हम उसके प्रेम को ग्रहण करते हैं, तब हम उन सारी बातों से मुक्त हो जाते हैं जो हमें नीचे दबाती हैं।

सामान्य तौर पर यह कहा जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति की भावनात्मक ज़रूरत के तीन महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं : **सुरक्षा, आत्म–मूल्य, और महत्व।** जब हम प्रेम में सिद्ध होते हैं, तब हम इन तीन बातों को हमारे प्रति पिता के प्रेम में दृढ़ता के साथ आधारित कर पाते हैं : सुरक्षा, आत्म–मूल्य, महत्व। हमारी सुरक्षा पिता के प्रति हमारे प्रेम में है। उसके प्रेम से हमें कुछ भी अलग नहीं कर सकता। हमारा आत्म–मूल्य हमारे प्रति पिता के प्रेम में है। हम प्रिय में हैं और हम परमेश्वर के प्रिय हैं। हमारा महत्व हमारे प्रति पिता के प्रेम में है। आत्मिक क्षेत्र में हमारे

स्थान का पहले ही ध्यान रखा गया है। जैसा वह है, वैसे ही हम संसार में हैं।

आपके लिए परमेश्वर का जो प्रेम है उसे जानें, विश्वास करें, ग्रहण करें और उसमें विश्राम करें

1 यूहन्ना 4:16
और जो प्रेम परमेश्वर हमसे रखता है, उसको हम जान गए, और हमें उसकी प्रतीति है। परमेश्वर प्रेम है; और जो प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता है, और परमेश्वर उसमें बना रहता है।

यूहन्ना यहां पर लिखता है कि हमने उस प्रेम को जाना है और उस प्रेम में विश्वास किया है जो परमेश्वर हमारे लिए रखता है। परमेश्वर प्रेम है – हम उसे अंगीकार करते हैं और उसके प्रेम को स्वीकार करते हैं। हम परमेश्वर के प्रेम में बने रहते हैं। हमारे प्रति पिता के प्रेम को हमें जानना है, उस पर विश्वास करना है, उसे ग्रहण करना है और उसमें बने रहना है।

जानें

जानने का अर्थ है किसी बात का ज्ञान रखना, समझना, पूर्ण रूप से जानना और उसके विषय में सुनिश्चित रहना। हमारे प्रति पिता के प्रेम के विषय में सत्य को हमारे समक्ष प्रस्तुत करने हेतु अब तक हमने जो कुछ लिखा है उसे पूरा करने का प्रयास किया है। हमने पवित्र शास्त्र को पढ़ा है और हमारे प्रति परमेश्वर के प्रेम को हम जानते हैं।

विश्वास करें

अब हमें विश्वास करना है। हमें पिता के प्रेम में विश्वास करना है, अपने आपको उसके हाथों में सौंपना है, और उसमें विश्वास के प्रति उसमें समर्पित होना है और अपने भरोसे को उसमें रखना है। हम उस प्रेम में विश्वास रखते हैं जो परमेश्वर हमारे लिए रखता है। हमने परमेश्वर के वचन को पढ़ा है। उसका वचन सत्य है। परमेश्वर का वचन हमारे

प्रति परमेश्वर के महान प्रेम के विषय में हमसे झूठ नहीं बोलता। क्रूस हमारे प्रति परमेश्वर के महान प्रेम के विषय में हमसे झूठ नहीं बोलता। पिता हमारे लिए जो प्रेम रखता है उस पर हम विश्वस करते हैं।

ग्रहण करें – व्यक्तिगत रूप से अनुभव करें

जब हम विश्वास करते हैं तब हम उसे ग्रहण कर सकते हैं, अर्थात उसे अपना बना सकते हैं। हम व्यक्तिगत तौर पर हमारे प्रति पिता के प्रेम को अनुभव करते हैं। परमेश्वर प्रेम है। वह यही है। वह हमसे प्रेम करता है क्योंकि वह प्रेम है। हम केवल ग्रहण करते हैं, ताकि पिता के प्रेम को अनुभव करें। हम केवल उसे अनुमति देते हैं कि वह अपने प्रेम के साथ हमारा आलिंगन करे।

आप मात्र उसे अनुमति देते हैं कि वह आपसे प्रेम करे, क्योंकि वह प्रेम है, क्योंकि वह आपका पिता है।

...इसलिए नहीं कि आप उसके सबसे अच्छे बच्चे हैं।

...इसलिए नहीं कि आपने उसे अर्जित किया।

...इसलिए नहीं कि आपने उसके लिए बहुत कुछ किया है।

...परंतु उसे आपसे प्रेम करने दें, क्योंकि वह केवल यह चाहता है कि आप उसके प्रेम को ग्रहण करें।

पौलुस ने यही प्रार्थना की, जैसा कि हमने पिछले अध्याय में देखा। हमें व्यक्तिगत अनुभव से उस असीम प्रेम को जानना है जो पिता हमारे लिए रखता है, और उसके बाद हमें गहराई से पिता के प्रेम में जड़ पकड़ना है और मज़बूती से दृढ़ हो जाना है।

इफिसियों 3:17–19 (एम्प्लिफाईड बाइबल)
17 और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे कि तुम प्रेम में गहराई से जड़ पकड़कर और (मज़बूत) नेव डाल कर,

18 सब पवित्र लोगों (परमेश्वर के लोगों) के साथ भली भांति समझने की शक्ति पाओ, कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, और ऊंचाई, और गहराई कितनी है (पूर्ण रूप से उस अद्‌भुत, अंतहीन प्रेम को अनुभव करते हुए);
19 और मसीह के उस प्रेम को जान सको (व्यक्तिगत अनुभव के द्वारा व्यावहारिक तौर पर) जो (मात्र) ज्ञान से परे (बिना अनुभव के) है, ताकि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी (अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व में) तक परिपूर्ण हो जाओ (ताकि आप आपके जीवनों में परमेश्वर की उपस्थिति का समृद्धतम अनुभव पा सको, स्वयं परमेश्वर से पूर्ण रूप से परिपूर्ण होकर और अभिभूत होकर)।

जब हम पिता के प्रेम का प्रकाशन पाते हैं, तब हम पाते हैं कि हमारी सारी भावनात्मक ज़रूरतें पूरी हो गई हैं, हम स्वीकारनीयता के पूर्ण बोध को पाते हैं।

पिता के प्रेम को ग्रहण करने से गंभीर भावनात्मक चंगाई आती है और वह हमें भावनात्मक स्वास्थ्य और कल्याण के स्थान में ले आता है।

उसके बेटे और बेटी होने के इस स्थान में हम अपनी पूर्ण पहचान पाते हैं।

उसके प्रेम में विश्राम करें – बने रहें, जड़ पकड़ें, मज़बूत नेव बांधें, अपने आपको शांत करें

1 यूहन्ना 4:16 (मैसेज बाइबल)
हम अच्छी तरह जानते हैं कि यह प्रेम जो परमेश्वर की ओर से आता है, उसे हमने उसे सम्पूर्ण हृदय से अपनाया है। परमेश्वर प्रेम है। जब हम प्रेम के जीवन में स्थायी निवास करते हैं, तब हम परमेश्वर में रहते हैं और परमेश्वर हममें रहता है।

उसके प्रेम को अनुभव कर लेने के बाद, हमें हमारे प्रति पिता के प्रेम में बने रहना है। बने रहने का अर्थ पिता के प्रेम में आगे बढ़ना, बने

रहना, स्थायी होना, स्थायी रूप से वास करना, विश्राम करना, जड़ पकड़ना और मज़बूती से नेव डालना। कभी कभार भेंट देने से या अक्सर भेंट देने से, पिता के प्रेम के अनुभव में आते–जाते रहने से यह भिन्न है। हमें पिता के प्रेम में बने रहना है, विश्राम करना है। और उसके बाद हम उसके प्रेम में विश्राम करने या बने रहने के उस स्थान के आधार पर (उसमें से) जीवन बिताते हैं।

जब हम पिता के प्रेम में विश्राम करेंगे, तब हम और किसी बात को हमें विचलित करने का अवसर नहीं देंगे। कुछ भी हमें हिला न पाएगा। आंधी आएगी। तेज हवाएं बहेंगी, लहरें उठेंगी। चुनौतीपूर्ण परिस्थितियां आएगी, लेकिन हम उसके प्रेम में विश्वास करेंगे। हम उस स्थान में हैं जो हमें उसके प्रेम के कारण जयवन्त से बढ़कर बनाता है।

जब हम उसके प्रेम में विश्राम करते हैं, तब लोग हम पर आक्रमण (आलोचना) कर सकते हैं। वे हमें बदनाम कर सकते हैं, हम पर झूठा आरोप लगा सकते हैं, हमारा विरोध कर सकते हैं, हमारे मार्ग में बाधा ला सकते हैं। परंतु इनमें से कोई बात हमें हिला नहीं पाएगी। हम बदला लेना नहीं चाहते या अपना समर्थन करना नहीं चाहते। हम उसके प्रेम में स्थिर हो गए हैं। हम प्रेम के साथ प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। हम वहीं करते हैं जो प्रेम करेगा।

सपन्याह 3:17
तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे बीच में है; वह उद्धार करने में पराक्रमी है; वह तेरे कारण आनंद से मगन होगा, वह अपने प्रेम के मारे चुपका रहेगा; फिर ऊंचे स्वर से गाता हुआ तेरे कारण मगन होगा।

परमेश्वर हमें अपने प्रेम से चुप करेगा। उस बालक की कल्पना करें जो रो रहा है। माता या पिता उस बच्चे को अपनी गोद में उठा लेते हैं। उसे गले से लगाते हैं और शांत करते हैं और जल्द ही बालक शांति के साथ सो जाता है। उसी तरह परमेश्वर हमें चुप करता है,

शांत करता है और हमें विश्राम दिलाता है। वह हमें हमारे प्रति अटूट, अमोघ, असीम प्रेम का आश्वासन देता है। परमेश्वर के आत्मा द्वारा पिता के प्रेम का दिया गया आश्वासन हमारे प्राणों पर छा जाता है। हम उसके प्रेम से चुप हो जाते हैं।

हमें उसके प्रेम में विश्राम करना है और इस प्रेम से जो वह हमारे लिए रखता है जीवन बिताना सीखना है। अगले अध्याय में और विस्तारपूर्वक देखेंगे कि उसके प्रेम में बने रहने का क्या अर्थ है।

पिता के प्रेम को अनुभव करने और ग्रहण करने हेतु प्रार्थना

प्रिय स्वर्गीय पिता, मेरे प्रति आपके महान प्रेम का आश्वासन मेरे हृदय को भरने पाए, और मुझ पर आने पाए, छा जाने पाए, वह मुझे ढक दे। अभी, मेरे प्रति आपके महान प्रेम से मुझे व्यक्तिगत और साकार रूप से भेंट दीजिए। पवित्र आत्मा मेरे हृदय में पिता का प्रेम नए सिरे से उंड़ेलिए। परमेश्वर का प्रेम मेरे व्यक्तित्व के प्रत्येक भाग में, मेरे हृदय, मेरे मन, इच्छा और भावनाओं में। मेरे प्राण के घायल हिस्सों में अपना प्रेम उंड़ेलिए और मुझे स्वस्थ कीजिए।

सारे घाव, पीड़ाएं और नकारात्मक भावनाएं मिट जाएं। सारे अपराध बोध, लज्जा, तिरस्कार अकेलेपन की भावनाएं, परित्याग की भावनाए, अलगाव की भावनाएं आपके प्रेम के द्वारा धो दी जाएं। सब प्रकार के भय को मिटा दीजिए – भविष्य का भय, असफलता का भय, दूसरों को मुझसे प्रेम करने की अनुमति देने का भय, लोगों पर भरोसे करने का भय।

पिता का प्रेम मेरे घमण्ड को मिटाने पाए, वह स्वयं पर निर्भरता को, मेरा भावनात्मक दीवारों और मेरे द्वारा खड़े किए गए सुरक्षात्मक मोर्चाबंदी को जो मुझे आपके प्रेम का अनुभव करने से वास्तव में रोकते हैं, मिटाने और तोड़ने पाए।

मुझे मेरे बंधनों से मुक्त कीजिए – कार्य संपादन के मेरे बंधन, संघर्ष करने के प्रेम और मान्यता कमाने के प्रयास के बंधन और मुझे मुक्त करके ऐसे स्थान में लाइए जहां पर मैं केवल आपके असीम, अपरिमेय, बिनशर्त और अपरिवर्तनीय प्रेम को ग्रहण करूं।

मुझे आपके प्रेम से शांत कीजिए। मुझे आपके प्रेम में विश्राम के स्थान पर लाइए। मैं मेरे स्वर्गीय पिता के आलिंगन को स्वीकार करता हूं। यीशु के नाम में। आमेन।

मनन

1. 1 कुरिन्थियों 13:4–8 पर परमेश्वर सदृश्य प्रेम के, ऐसे प्रेम के वर्णन के रूप में मनन करें जो परमेश्वर हमारे लिए रखता है। उसे आपके प्रति व्यक्तिगत तौर पर पिता के प्रेम के वर्णन के रूप में लिखें।

2. यूहन्ना 17:23,26 पर मनन करें, पिता आपसे वैसे ही प्रेम करता है जैसे वह यीशु से प्रेम करता है और आप परमेश्वर के प्रिय हैं। इसका आपके लिए व्यक्तिगत तौर पर क्या अर्थ है?

3. रोमियों 8:35–37 पर मनन करें कि इन सारी बातों में हम क्यों जयवन्त से भी बढ़कर हैं? जीवन की परिस्थितियों के आपके दृष्टिकोन पर इसका कैसे प्रभाव पड़ता है।

4. एम्प्लिफाईड बाइबल में से 1 यूहन्ना 4:17–18 देखें, और उसका प्रेम हममें सिद्ध होता है इसका क्या अर्थ है इस विषय में चर्चा करें। उसका प्रेम हममें सिद्ध हो ऐसे स्थान में हम कैसे पहुंच सकते हैं? इसका हम पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

5

पिता के प्रेम में बने रहना

पिता के प्रेम को कबूल करें – मेरा पिता मुझसे प्रेम करता है

पिता के साथ यीशु के रिश्ते का परीक्षण करना अद्‌भुत है। प्रभु यीशु अक्सर उसके प्रति पिता के प्रेम की पुष्टि करता था और उसे कबूल करता था। यीशु के प्रति उसके प्रेम के कारण पिता जो कुछ कर रहा था उसे भी उसने पहचाना और अंगीकार किया।

यूहन्ना 3:35
पिता पुत्र से प्रेम रखता है, और उसने सब वस्तुएं उसके हाथ में दे दी हैं।

पिता ने सारी बातें यीशु के हाथों में सौंप दी थीं।

यूहन्ना 5:20
क्योंकि पिता पुत्र से प्रीति रखता है और जो जो काम वह आप करता है वह सब उसे दिखाता है; और वह इनसे भी बड़े काम उसे दिखाएगा, ताकि तुम अचम्भा करो।

पिता स्वयं जो कुछ कर रहा था, उसे वह प्रकट कर रहा था और वह यीशु पर और भी बड़े काम प्रकट करने वाला था।

यूहन्ना 17:24
"हे पिता, मैं चाहता हूं कि जिन्हें तू ने मुझे दिया है, जहां मैं हूं, वहां वे भी मेरे साथ हों कि वे मेरी उस महिमा को देखें जो तू ने मुझे दी है, क्योंकि तू ने जगत की उत्पत्ति से पहले मुझ से प्रेम रखा।

यह जानते हुए कि पिता उससे प्रेम करता है, यीशु ने पिता से प्रार्थना की और अपनी इच्छा उसके सामने व्यक्त की।

यूहन्ना 10:17
पिता इसलिए मुझ से प्रेम रखता है कि मैं अपना प्राण देता हूं, कि उसे फिर ले लूं।

इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप पिता की इच्छा पूरी करने हेतु यीशु पिता की आज्ञा में चला।

पिता हमसे उसी तरह और उसी प्रमाण में प्रेम करता है जैसे वह यीशु से प्रेम करता है। पिता हमसे प्रेम करता है और उसने यहां पृथ्वी पर राज्य का काम सौंपा है। पिता हमसे प्रेम करता है और वह उन बातों को प्रकट करता है जो वह हमारे द्वारा करना चाहता है और अब तक हमने जो बातें देखी हैं उनसे महान बातों को वह हम पर प्रकट करेगा। पिता हमसे प्रेम करता है और हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है। हमारे प्रति पिता के प्रेम को हमें अंगीकार करना है और उसकी पुष्टि करना है, जैसे यीशु ने की।

मेरे प्रेम में बने रहो

यूहन्ना 15:9–10
9 "जैसा पिता ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही मैंने तुमसे प्रेम रखा, मेरे प्रेम में बने रहो।
10 यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे; जैसा कि मैंने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूं।"

प्रभु यीशु ने हमें उसके प्रेम में बने रहने के लिए निमंत्रित किया। उसने बताया कि वह भी पिता के प्रेम में बना था। यीशु ने पिता के प्रेम में रहकर अपना पृथ्वी का जीवन बिताया।

जैसा कि पिछले अध्याय में हमने बताया है, बने रहने का अर्थ विश्राम करना, वास करना, स्थायी रहना, बने रहना, जारी रहना। यह गहराई से जड़े पकड़ने, मज़बूती से रोपे जाने, और सुरक्षित आधार पर

बने रहने को सूचित करता है। यह वही स्थान है जहां पर हम उसके प्रेम के द्वारा शांत हो जाते हैं।

बने रहने का अर्थ यह भी है कि हम उसमें से जीवन जीते हैं, उससे जीवन पाते हैं, उसके कारण जीवन जीते हैं, और जिसमें हम बने रहते हैं उसके द्वारा जीते हैं।

इस उदाहरण पर विचार करें :

यूहन्ना 6:56–57,63
56 "जो मेरा मांस खाता और मेरा लोहू पीता है, वह मुझ में स्थिर बना रहता है, और मैं उसमें।
57 जैसे जीवित पिता ने मुझे भेजा और मैं पिता के कारण जीवित हूं, वैसे ही वह भी जो मुझे खाएगा मेरे कारण जीवित रहेगा।
63 आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं। जो बातें मैंने तुमसे कही हैं वे आत्मा हैं, और जीवन भी हैं।"

'मेरा मांस खाओ और मेरा लहू पिओ' का अर्थ है 'यीशु पर पोषण करना।' जो यीशु पर अपना पोषण करता है, वह यीशु में बने रहता है और इस कारण उसकी वजह से वह जीवित रहता है – या उसमें से अपना जीवन जीता है। उसकी देह और लहू के विषय में बोलते हुए यीशु आत्मिक बातों का उल्लेख कर रहा था – जीवनदायक आत्मा की बातें और जीवित वचन जो उसने कहे।

इसलिए पिता के प्रेम में बने रहने का अर्थ है उसके प्रेम में विश्राम करना और उसके प्रेम से जीवन जीना। हमें हमेशा पिता के प्रेम में बने रहना है – अर्थात उसके प्रेम में वास करना है और उसके प्रेम से जीवन बिताना है।

पिता के प्रेम में विश्राम करना और उसके प्रेम से जीवन जीना

2 कुरिन्थियों 13:14

प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ होती रहे।

पौलुस के अंतिम आशीर्वाद में उसकी घोषणाओं में से एक यह है कि परमेश्वर का प्रेम विश्वासियों के साथ बना रहे। इसका अर्थ यह है कि पिता के प्रेम का अनुभव क्षणिक बात नहीं है। यह उसके प्रेम का लगातार, निरंतर वर्तमान, क्षण प्रतिक्षण अनुभव है। हमें प्रतिदिन के जीवन में पिता के प्रेम की निरंतर पहचान और अनुभव में जीना है।

हम प्रतिदिन यह जानते हुए जीवन बिताते हैं कि पिता ने हमसे असीम और बिनशर्त प्रेम किया है। क्योंकि पिता का प्रेम निरंतर हमारे साथ रहता है, हमारे लिए और हमारे प्रति है, इसलिए हम प्रिय बेटे और बेटी के रूप में जीवन बिता सकते है। हम उन लोगों के समान जीवन बिताते हैं जो प्रिय में हैं और जो परमेश्वर के प्रिय हैं। हम उसके बेटे और बेटियों के रूप में अपनी पहचान से जीवन बिताते हैं। हम पुत्र होने के बोध से जीवन बिताते हैं।

पिता के प्रेम में बने रहने का और उसके प्रेम में बने रहने के स्थान से जीवन बिताने का क्या अर्थ है? व्यावहारिक जीवन में यह कैसे दिखता है? पिता के प्रेम में रहने वाला और पिता के प्रेम से जीवन बिताने वाला व्यक्ति प्रतिदिन के जीवन में कैसे आचरण करेगा और कैसे बर्ताव करेगा?

प्रेरित यूहन्ना ने अपना उल्लेख "उस शिष्य के रूप में किया जिसे यीशु प्रेम करता था" (यूहन्ना 20:2; 21:7,20)। इसलिए उसने व्यक्तिगत तौर पर उसके लिए प्रभु के हृदय में जो प्रेम था उसे ग्रहण किया और उसे अनुभव किया। यूहन्ना अपनी पहली पत्री में परमेश्वर के प्रेम के विषय में बहुत कुछ लिखता है और परमेश्वर के प्रेम में बने रहने के

व्यावहारिक पक्ष को समझाता है। हम यहां पर पांच सरल कथनों में यहां इसका सारांश संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करते हैं :

1) जब हम पिता के प्रेम बने रहते हैं, तब वहां घृणा या नफरत के लिए कोई स्थान नहीं होता।

1 यूहन्ना 2:9–11

9 जो कोई यह कहता है कि मैं ज्योति में हूं; और अपने भाई से बैर रखता है, वह अब तक अन्धकार ही में है।

10 जो कोई अपने भाई से प्रेम रखता है, वह ज्योति में रहता है, और ठोकर नहीं खा सकता।

11 परंतु जो कोई अपने भाई से बैर रखता है, वह अन्धकार में है, और अन्धकार में चलता है; और नहीं जानता कि कहां जाता है, क्योंकि अन्धकार ने उसकी आंखें अन्धी कर दी है।

(1 यूहन्ना 3:14–15; 1 यूहन्ना 4:20–21 भी देखें)

यूहन्ना अपनी पत्री में यह कई बार दोहराता है। जब हम पिता के प्रेम में बने रहते हैं और उसमें से जीवन बिताते हैं, तब हम नफरत को अपने जीवनों से दूर रखने हेतु अत्यंत तत्पर होते हैं। हम इन्कार करते हैं कि किसी और के प्रति नफरत हमारे हृदय में वास न करने पाए। नफरत खतरनाक है। यदि दूसरे भाई के प्रति हमारे दिल में नफरत है, तो भले ही हम ज्योति में चलने का दावा करें, फिर भी हम वास्तव में उन लोगों के समान हैं जो अंधे भी हैं और अंधकार में चल रहे हैं। हम नहीं जानते हैं कि हम कहां जा रहे हैं, हम उन्नति करने के प्रयास में यहां–वहां टटोलते रहते हैं, और हम लड़खड़ाकर गिर जाते हैं।

हम लोगों को हमें चोट पहुंचाने से रोक नहीं सकते, परंतु हम ठोकर खाने से इन्कार कर सकते हैं। लोग कुछ बातें कहेंगे और करेंगे जो हमें दुख देगी, परंतु हम उन्हें छोड़ने और हमारे साथ उस चोट को हर स्थान में न ले जाने का चुनाव कर सकते हैं। ठोकर और चोट

सामान्य तौर पर घाव बनकर नफरत में बदल जाते हैं। नफरत हमें अंधा बना देती है और हमें अंधकार में छोड़ देती है। परंतु, जब हम पिता के प्रेम में बने रहते हैं और उस प्रेम से जीते हैं, तब ठोकरें और चोट हम में स्थान नहीं पाते।

2) जब हम पिता के प्रेम में बने रहते हैं, तब सताव हमें भयभीत नहीं करता और पवित्रता हमारे जीवन का मार्ग होती है।

1 यूहन्ना 3:1–3,13

1 देखो, पिता ने हमसे कैसा प्रेम किया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएं, और हम हैं भी; इस कारण संसार हमें नहीं जानता, क्योंकि उसने उसे भी नहीं जाना।

2 हे प्रियो, अभी हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अब तक यह प्रकट नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं कि जब वह प्रकट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है।

3 और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है, जैसा वह पवित्र है।

13 हे भाइयो, यदि संसार तुमसे बैर करता है तो अचम्भा न करना।

यूहन्ना ने उस जबर्दस्त और अत्याधिक प्रेम की घोषणा की जो परमेश्वर के मन में हमारे लिए है कि उसने हमें अपनी सन्तान बनाया। परंतु फिर यहां कुछ बातें हैं जिनके लिए हमें तैयार रहना है, क्योंकि परमेश्वर ने हमसे इतना प्रेम किया है : अ) संसार हमें नहीं पहचानेगा और हमसे नफरत कर सकता है, और ब) हम अपने आप को पवित्र करते हैं जैसे वह पवित्र है।

जब हम पिता के प्रेम में बने रहते हैं और उसी में से जीते हैं, तब हम भयभीत नहीं होते कि संसार हमें परमेश्वर की सन्तान के रूप में नहीं पहचानता। हम इस बात से भयभीत नहीं होते कि संसार हम से नफरत कर सकता है और हमें सता सकता है।

हमारे पास यह अद्‌भुत आशा है कि क्योंकि हम उसकी सन्तान हैं, हम जानते हैं कि जब प्रभु प्रकट होगा, तब हम भी उसके समान बन जाएंगे। और इस आशा के कारण, हम अपने जीवनों को पवित्र करने का चुनाव करते हैं। इसलिए हमारे प्रति पिता के प्रेम में रहने वाले और उसके प्रेम से जीने वाले लोगों के रूप में पवित्रता हमारे जीवन का एक मात्र मार्ग है। उसका प्रेम हमें पवित्रता में और उस हर बात का इन्कार करने हेतु जो पिता के लिए प्रसन्नतादायक नहीं है, खींच लेता है।

3) जब हम पिता के प्रेम में बने रहते हैं, तब हम त्याग करते हैं और बांटते है

1 यूहन्ना 3:16–18
16 हमने प्रेम इसी से जाना कि उसने हमारे लिए अपने प्राण दे दिए; और हमें भी भाइयों के लिए प्राण देना चाहिए।
17 परंतु जिस किसी के पास संसार की संपत्ति हो, और वह अपने भाई को कंगाल देखकर उस पर तरस खाना न चाहे, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम कैसे बना रह सकता है?
18 हे बालको, हम वचन और जीभ ही से नहीं, पर काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें।

यह इसलिए क्योंकि यीशु ने हमारे लिए अपने प्राण का बलिदान किया, इसके द्वारा और इसमें हमारे प्रति पिता के प्रेम को हम समझते हैं, अनुभव करते हैं, और जानते हैं। उसके बाद यह हमें यही बात दूसरों के लिए करने हेतु प्रेरित करती है। हम दूसरों के लिए अपने जीवन न्यौछावर करते हैं। हम दूसरों के लाभ के लिए त्याग करते हैं। यह व्यावहारिक रीति से "कार्य और सत्य" में बदल जाता है, जिसमें हम दूसरों की भौतिक ज़रूरतों को पूरा करने हेतु देते और बांटते हैं।

अपनी सेवकाई के विषय में बताते समय प्रेरित पौलुस ने इन शब्दों में उसे प्रस्तुत किया :

2 कुरिन्थियों 5:14–15
14 क्योंकि मसीह का प्रेम हमें विवश कर देता है; इसलिए कि हम यह समझते हैं कि जब एक सब के लिए मरा, तो सब मर गए।
15 और वह इस निमित्त सब के लिए मरा कि जो जीवित हैं, वे भविष्य में अपने लिए न जीएं, परंतु उसके लिए जो उनके लिए मरा और फिर जी उठा।

हम परमेश्वर के प्रेम से कार्य करने हेतु प्रेरित होते हैं, प्रवृत्त होते हैं, प्रोत्साहित होते हैं और विवश होते हैं। हम यीशु मसीह के उदाहरण के द्वारा जीवन की ओर देखते हैं। उसने हमारे लिए जीवन त्याग दिया। इसलिए हम अब अपने लिए नहीं, परंतु यीशु के लिए जीते हैं।

यूहन्ना 15:12–13
12 "मेरी आज्ञा यह है कि जैसा मैंने तुमसे प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो।
13 इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे।

प्रेम की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति में अपना जीवन न्यौछावर करना शामिल है। यीशु ने यह दिखा दिया। उसने अपने स्वयं के जीवन को क्रूस पर दे दिया। व्यावहारिक तौर पर, हम में से कुछ अपने जीवनों का त्याग करते समय मृत्यु का सामना कर सकते हैं, परंतु हम में से कइयों के लिए इसमें हमारी अपनी वस्तुओं को त्यागना या बलिदान करना शामिल हो सकता है – संपत्ति, अवसर, विशेषाधिकार, – ताकि दूसरों को लाभ प्राप्त हो।

4) जब हम पिता के प्रेम बने रहते हैं, तब हम प्रेम में चलते हैं

1 यूहन्ना 4:7–12
7 हे प्रियो, हम आपस में प्रेम रखें, क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है; और जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है, और परमेश्वर को जानता है।

8 जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।
9 जो प्रेम परमेश्वर हमसे रखता है, वह इससे प्रकट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं।
10 प्रेम इसमें नहीं कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया, परंतु इसमें है कि उसने हमसे प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित्त के लिए अपने पुत्र को भेजा।
11 हे प्रियो, जब परमेश्वर ने हमसे ऐसा प्रेम किया, तो हम को भी आपस में प्रेम रखना चाहिए।
12 परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा; यदि हम आपस में प्रेम रखें, तो परमेश्वर हममें बना रहता है, और उसका प्रेम हम में सिध्द हो गया है।

हमने पिता के प्रेम को बहुतायत से अनुभव किया है, इसलिए दूसरों के प्रति प्रेम में उमड़ने के सिवा हम और कुछ नहीं कर सकते। प्रेम में चलने का क्या अर्थ है उसका एक उत्तम वर्णन हमें *1 कुरिन्थियों 13:4–8 में मिलता है। "प्रेम धीरजवन्त है, और कृपाल है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं। वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परंतु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है। प्रेम कभी टलता नहीं; भविष्यद्वाणियां हों, तो समाप्त हो जाएंगी; भाषाएं हों, तो जाती रहेंगी; ज्ञान हो, तो मिट जाएगा।"* हम परमेश्वर के प्रेम से लोगों के साथ व्यवहार करने का चुनाव करते हैं।

हमने पिता के प्रेम से सामर्थ पाई है कि हम उसके प्रेम में चलें। जब हम एक–दूसरे से प्रेम करते हैं, तब उसका प्रेम हममें सिद्ध होता है – पूरा किया जाता है, उसका पूर्ण उद्देश्य प्राप्त करता है। जब हम प्रेम में चलते हैं, तब उसका प्रेम हममें और हमारे द्वारा उसके निहित

उद्देश्य को संपादित करता है, पूरा करता है, और परिपूर्ण करता है। यह स्वयं परमेश्वर है जो हमारे द्वारा वास करता है, रहता है!

5) जब हम पिता के प्रेम में बने रहते हैं, तब हम अपने आत्मिक स्थान को पहचानते हैं, हम भय से मुक्त रहते हैं और उससे प्रेम करने के लिए स्वतंत्र रहते हैं।

1 यूहन्ना 4:17–19
17 इसी से प्रेम हममें सिद्ध हुआ कि हमें न्याय के दिन हियाव हो; क्योंकि जैसा वह है, वैसे ही संसार में हम भी हैं।
18 प्रेम में भय नहीं होता, वरन् सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है, क्योंकि भय से कष्ट होता है; और जो भय करता है, वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ।
19 हम इसलिए प्रेम करते हैं, कि पहले उसने हमसे प्रेम किया।

जब परमेश्वर का प्रेम हममें सिद्ध हुआ है अर्थात, हम उस स्थान में है जहां पर हमने उसके प्रेम को ग्रहण किया है और हममें उसे उसका पूरा काम करने का अवसर दे रहे हैं, तो (अ) हमें परमेश्वर के पास हियाव है और हम न्याय के विकट और डराने वाले भय में नहीं जी रहे हैं (ब) हम पहचानते हैं कि हम आत्मिक जगत में कौन है – जैसे यीशु है, वैसे हम हैं – और हम इस संसार में इसी प्रकार जीते हैं (क) हमारे प्रति उसके प्रेम के कारण हम उसके लिए प्रेम से उमड़ते हैं।

सारांश रूप में, जब हम पिता के प्रेम में विश्राम पाते हैं और उस प्रेम से जीते हैं, तब :

1. दूसरों के प्रति नफरत को हममें कोई स्थान नहीं रहता
2. सताव हमें भयभीत नहीं करता
3. पवित्रता हमारे जीवन की शैली है
4. हम दूसरों के लिए त्याग करते और बांटते हैं

5. हम परमेश्वर सदृश्य प्रेम में चलते हैं
6. हम अपने आत्मिक स्थान को पहचानते हैं – जैसे यीशु है वैसे हम हैं – और संसार में हम इसी से जीते हैं
7. हम परमेश्वर के समक्ष दण्ड और न्याय के भय से मुक्त हैं
8. क्योंकि उसने हमसे प्रहले प्रेम किया, अतः हम उसके प्रति प्रेम से उमड़ते हैं

हम इस बात को अंगीकार करें और उसकी पुष्टि करें :

"मैं मेरे प्रति पिता के प्रेम में रहता हूं। मैं पिता के प्रेम में विश्राम करता हूं और उससे जीता हूं। नफरत को मेरे हृदय में कोई स्थान नहीं है। यदि संसार मुझे नहीं पहचानता या चाहे मुझे सताता भी हो, तौभी मैं भयभीत नहीं होता। पवित्रता मेरे जीवन की शैली है। जैसे वह पवित्र है, वैसे मैं अपने आपको पवित्र करता हूं। मैं त्याग करता हूं, और परमेश्वर ने मुझे जिन बातों से आशीषित किया है, उन्हें मैं उदारता के साथ देता हूं और बांटता हूं। मैं लोगों के प्रति प्रेम में चलता हूं। मैं जानता हूं कि परमेश्वर ने मुझे उसके प्रेम के कारण उसमें क्या बनाया है। जैसा यीशु है, वैसे ही मैं हूं – परमेश्वर का वारिस और मसीह के साथ संगी वारिस। मैं सारे अपराधबोध, लज्जा और दोष भावना से मुक्त हूं। मैं अपने स्वर्गीय पिता से प्रेम करने हेतु स्वतंत्र हूं। मैं उससे प्रेम करता हूं क्योंकि उसने पहले मुझसे प्रेम किया।"

आज्ञाकारिता, पिता के प्रेम में बने रहने की कुंजी

यीशु पिता के प्रति आज्ञाकारिता में चला...

यूहन्ना 8:29
और मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है; उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा, क्योंकि मैं सर्वदा वही काम करता हूं, जिससे वह प्रसन्न होता है।"

यूहन्ना 14:31
परंतु यह इसलिए होता है कि संसार जाने कि मैं पिता से प्रेम रखता हूं, और जिस तरह पिता ने मुझे आज्ञा दी, मैं वैसे ही करता हूं। उठो, यहां से चलें।

यूहन्ना 15:9–10
9 "जैसा पिता ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही मैंने तुमसे प्रेम रखा, मेरे प्रेम में बने रहो।
10 "यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे; जैसा कि मैंने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूं।

...और वैसे ही हमें भी होना है

यूहन्ना 14:15,21,23–24
15 "यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।
21 जिसके पास मेरी आज्ञा है, और वह उन्हें मानता है, वही मुझ से प्रेम रखता है; और जो मुझ से प्रेम रखता है, उससे मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं उससे प्रेम रखूंगा, और अपने आपको उस पर प्रकट करूंगा।"
23 यीशु ने उसको उत्तर दिया, "यदि कोई मुझ से प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएंगे, और उसके साथ वास करेंगे।
24 जो मुझ से प्रेम नहीं रखता, वह मेरे वचन नहीं मानता, और जो वचन तुम सुनते हो, वह मेरा नहीं, वरन् पिता का है, जिसने मुझे भेजा।

यूहन्ना 15:9–10
9 "जैसा पिता ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही मैंने तुमसे प्रेम रखा, मेरे प्रेम में बने रहो।
10 यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे; जैसा कि मैंने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूं।

1 यूहन्ना 2:5–6
5 परंतु जो कोई उसके वचन पर चले, उसमें सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हुआ है। हमें इसी से मालूम होता है, कि हम उसमें हैं।
6 जो कोई यह कहता है कि मैं उसमें बना रहता हूं, उसे चाहिए कि आप भी वैसा ही चले जैसा वह चलता था।

हम इन सारे वचनों से देखते हैं जिन्हें स्वयं प्रभु यीशु ने व्यवहार में उपयोग किया और सिखाया कि पिता के प्रेम में बने रहने के लिए, हमें उसके वचन के प्रति आज्ञाकारिता में चलना है और उसके वचन का पालन करना है। जब हम ऐसा करते हैं, तब परमेश्वर का प्रेम, पिता का प्रेम हममें सिद्ध होता है। परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता इसलिए महत्वपूर्ण है ताकि हम पिता के प्रेम में विश्राम पाएं और उस प्रेम से जिए।

जब हम पिता के प्रेम में बने रहते हैं, तब उसके वचन को मानते हैं और वैसे ही चलते है जैसे वह चला।

पिता के प्रति आज्ञाकारिता है हमारा ज्योति में चलना जैसे वह ज्योति में है और इस प्रकार उसके साथ सहभागिता (निकट मित्रता) सम्भव है। यह सहभागिता हमें सक्षम बनाती है कि हम प्रतिदिन के आधार पर उसके प्रेम में बने रहें (विश्राम पाएं और उससे जिएं)।

1 यूहन्ना 1:6–7
6 यदि हम कहें कि उसके साथ हमारी सहभागिता है, और फिर अन्धकार में चलें, तो हम झूठे हैं, और सत्य पर नहीं चलते।
7 परंतु यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं, और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।

आज्ञाकारिता पिता के प्रेम को अर्जित नहीं करती। उसने हमसे बेपरिमाण और बिनशर्त प्रेम किया।

आप जो करते हैं वह आज्ञाकारिता है क्योंकि आप उससे प्रेम करते हैं। आप प्रेम के खातिर ऐसा करते हैं।

आज्ञाकारिता हमें उसके साथ निकट सहभागिता में रखती हैं, इस प्रकार हमें पिता के प्रेम में बने रहने, विश्राम करने, उससे जीवन पाने और उसमें होकर जीवन बिताने की सामर्थ देती है।

मनन

1. हमारे लिए हमारे स्वर्गीय पिता के प्रेम को अंगीकार करना और उसकी पुष्टी करना महत्वपूर्ण क्यों है?

2. हमने उन आठ परिणामों का उल्लेख किया है जब हम हमारे प्रति पिता के प्रेम में बने रहते हैं और उसमें से जीवन बिताते हैं :

   1) दूसरों के प्रति नफरत का हममें कोई स्थान नहीं है

   2) सताव हमें भयभीत नहीं करता

   3) शुद्धता हमारे जीवन का मार्ग है

   4) हम त्याग करते हैं। और दूसरों के साथ बांटते हैं

   5) हम प्रेम में चलते हैं

   6 हम अपने आत्मिक स्थान को पहचानते हैं – जैसा यीशु है वैसे हम हैं – और हम संसार में इसी में से जीवन बिताते हैं

   7) हम परमेश्वर के सामने दोष और न्याय के भय से मुक्त हैं

   8) हम उसके प्रति प्रेम से उमड़ते हैं क्योंकि उसने हमसे पहले प्रेम किया

   इन आठों क्षत्रों में से प्रत्येक में आपका कैसे चल रहा है? (आप पिता के प्रेम के कारण उपर्युक्त में से प्रत्येक कार्य करने में सक्षम हैं यह प्रार्थना करने हेतु और परमेश्वर के समक्ष उसकी पुष्टि करने हेतु कुछ समय बिताएं)

3. आज्ञाकारिता में चलना पिता के प्रेम में चलने से कैसे सम्बंधित है?

6

प्रेम जो अनुशासित करता है

पिता के प्रेम में बने रहने के महत्वपूर्ण पहलू का सम्बन्ध उसके प्रेम में अनुशासन में और सुधार में बने रहने से है। जब हम इस बात को समझते हैं कि पिता हमें क्यों अनुशासित करता है और जब वह हमें अनुशासित करता है और हम उसके हृदय को समझते हैं, तब हम सही प्रतिक्रिया व्यक्त करने की योग्यता पाते हैं। परमेश्वर की प्रेममय ताड़ना या सुधार से हमें डरना नहीं है या उससे भागना नहीं है। हमें हमारे पिता की प्रेममय ताड़ना का स्वागत करना है क्योंकि वह हमारे लाभ के लिए है।

जिससे पिता प्रेम करता है उसे वह अनुशासित करता है

इब्रानियों 12:4–13

4 तुमने पाप से लड़ते हुए उससे ऐसी मुठभेड़ नहीं की कि तुम्हारा लोहू बहा हो।

5 और तुम उस उपदेश को जो तुमको पुत्रों के समान दिया जाता है, भूल गए हो, कि हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हलकी बात न जान, और जब वह तुझे घुड़के तो हियाव न छोड़।

6 क्योंकि प्रभु, जिससे प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है; और जिसे पुत्र बना लेता है, उसको कोड़े भी लगाता है।

7 तुम दुख को ताड़ना समझकर सह लो। परमेश्वर तुम्हें पुत्र जानकर तुम्हारे साथ बर्ताव करता है। वह कौन सा पुत्र है, जिसकी ताड़ना पिता नहीं करता?

8 यदि वह ताड़ना जिसके भागी सब होते हैं, तुम्हारी नहीं हुई, तो तुम पुत्र नहीं, पर व्यभिचार की सन्तान ठहरे!

9 फिर जबकि हमारे शारीरिक पिता भी हमारी ताड़ना किया करते थे, तो क्या हम आत्माओं के पिता के और भी आधीन न रहें, जिससे जीवित रहें।

10 वे तो अपनी अपनी समझ के अनुसार थोड़े दिनों के लिए ताड़ना करते थे, परंतु यह तो हमारे लाभ के लिए करता है, कि हम भी उसकी पवित्रता के भागी हो जाएं।
11 और वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनंद की नहीं, परंतु शोक ही की बात दिखाई पड़ती है, तौभी जो उसको सहते सहते पक्के हो गए हैं, पीछे उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है।
12 इसलिए ढीले हाथों और निर्बल घुटनों को सीधे करो।
13 और अपने पांवों के लिए सीधे मार्ग बनाओ कि लंगड़ा भटक न जाए, पर भला चंगा हो जाए।

"ताड़ना देना," "घुड़कना," और "कोड़े मारना" ये शब्द कठोर और उद्दंड लगते हैं। जिस ग्रीक शब्द का अनुवाद "ताड़ना देना" किया गया है वह शब्द है *"चंपकमनव"* जिसका अर्थ है बालक को शिक्षा देना, प्रशिक्षण देना, सिखाना, अध्ययन करना, निर्देश देना, और इस के भाग के रूप में अनुशासित करना। "ताड़ना देना" के लिए यही शब्द (ग्रीक *"चंपकमनव"*) इफिसियों 6:4 में प्रयोग किया गया है जहां पिता से कहा गया है कि वे अपने बच्चों का प्रभु की शिक्षा में पालन–पोषण करें। "घुड़का" के लिए ग्रीक शब्द है *"मसमदहबीव"* और उसका अर्थ है दोषी सिद्ध करना, विश्वास दिलाना, कटु आलोचना करना, दोष बताना और यह वही शब्द है जिसका उपयोग यूहन्ना 16:8 में पवित्र आत्मा के विषय में किया गया है कि वह संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर करेगा। "कोड़े लगाना" के लिए ग्रीक शब्द है *"उेंजपहवव"* जिसका अर्थ है कोड़े लगाना, चाबुक से मारना, पीटना है। ध्यान में रखें कि इन शब्दों का प्रयोग पिता द्वारा उसके बच्चों को अनुशासित करने के संदर्भ में किया गया है और इसलिए उसी संदर्भ में उसकी व्याख्या की जानी चाहिए। इसलिए प्रभु की ताड़ना का सम्बन्ध (अ) (*चंपकमनव*) पिता के प्रेमपूर्ण निर्देश, पालन–पोषण, उसके बच्चों की शिक्षा और प्रशिक्षण से है, (ब) (*मसमदहबीव*) पिता के प्रेम से है अपने बच्चों को यह बताता है कि क्या गलत है और जो सही है उसकी ओर संकेत करता है, और (क) (*उेंजपहवव*) पिता द्वारा प्रेम

के साथ बच्चों को अनुशासित करने से है ताकि उन्हें आज्ञाकारिता के स्थान में लाया जाए। जैसा कि हम सहज देखते हैं, बच्चों के साथ हमारे स्वाभाविक संदर्भ से, निर्देश, शिक्षा, पालन–पोषण और प्रशिक्षण सामान्य तौर पर किया जाता है। पिटाई का (सजा के साथ प्रशिक्षण) केवल तब प्रयोग किया जाता है जब सामान्य प्रक्रिया स्वीकार नहीं की जाती या उसका उल्लंघन किया जाता है।

प्रेमपूर्ण शिक्षा और सुधार पिता और बालक के रिश्ते में सामान्य बात है (वचन 7)। यह हमारा स्वर्गीय पिता परमेश्वर है जो हमारे साथ उसके बेटे और बेटियों के रूप में बर्ताव करता है। उसकी ताड़ना और अनुशासन हमारे प्रति उसके प्रेम की अभिव्यक्ति है।

हमारा स्वर्गीय पिता हमारे प्रति उसके प्रेम के कारण और हमारी भलाई के लिए हमें सुधारता और अनुशासित करता है। ऐसा वह हमारे लाभ और फायदे के लिए करता है (वचन 10)। वह ऐसा इसलिए करता है ताकि वह हमें उस स्थान से जहां पर हम हैं उठाकर वहां ले चलें जहां पर वह चाहता है कि हम रहें।

जब परमेश्वर हमें ताड़ना देता है तब वह ऐसा हमें नाश करने के लिए, हमें नीचा दिखाने के लिए, हमें अपमानित करने के लिए, या हमारा अवमूल्यन करने के लिए नहीं करता। उसकी प्रेमपूर्ण ताड़ना या सुधार हमें हमेशा ऊंचा उठाने के लिए होती है और हमें इस प्रकार के लोग बनने में सहायता करती है जैसा हमें बनना चाहिए था। उसकी ताड़ना प्रतिष्ठा, स्वीकार और अनुग्रह में आती है।

पिता के प्रेम का यह पहलू अस्थाई रूप से दुखदायी हो सकता है (वचन 11)।

ताड़ना या सुधार तब आवश्यक हो जाता है जब हम आज्ञाकारिता के स्थान से बाहर कदम उठाते हैं – शाब्दिक तौर पर, जब हम उसके

प्रेम में विश्राम करने और प्रेम से जीने के स्थान से बाहर कदम निकालते हैं।

ताड़ना परमेश्वर द्वारा हमें उसके वचन से, उसकी इच्छा से और उसके मार्गों से जोड़ना है। वह हमें वापस उस स्थान में ला रहा है, उसके प्रेम में बने रहने के स्थान में ला रहा है। वह हमें वापस उसके प्रेम में विश्राम करने और उस प्रेम से जीने के स्थान में खींच रहा है।

ताड़ना के प्रति सही प्रतिक्रिया है हमारे स्वर्गीय पिता की शरण में आने और उसे समर्पित होने के द्वारा आज्ञा मानना (वचन 9)। इसी समय हम यह कहना सीखते हैं "मेरी नही, परंतु आपकी इच्छा पूरी हो।"

परमेश्वर हमें उसके वचन के द्वारा, उसके आत्मा के द्वारा, अन्य लोगों के द्वारा और कभी–कभी परिस्थितियों के द्वारा सुधारता है। वह अपने वचनों के द्वारा हमसे बातें करता है और निर्देश, शिक्षा और सुधार ले आता है (2 तीमुथियुस 3:16–17)। परमेश्वर का आत्मा सब सत्य की ओर हमारी अगुवाई और मार्गदर्शन करता है, जो यह भी सूचित करता है कि वह हमें भूल से बचाता है और हमें सुधारता है (यूहन्ना 16:13)। परमेश्वर अन्य लोगों के द्वारा उसकी मनसा को भी हमारे हृदयों में बोलता है, विशेषकर धर्मी लोगों के द्वारा जिन्हें हमें प्रभावित करने हेतु हमारे जीवनों में रखा गया है। हमें परमेश्वर की परवरिश, शिक्षा और सुधार को इन सभी तीनों माध्यमों से ग्रहण करने के लिए तैयार रहना है। ऐसा समय आता है जब परमेश्वर हमें उन परिस्थितियों के द्वारा प्रेम के साथ अनुशासित करेगा जिसे उसने हमारे लिए तैयार किया है। (टिप्पणी : हम परिस्थितियों के माध्यम से "कभी–कभी" इसलिए कहते हैं, क्योंकि कुछ परिस्थितियां ऐसी होती हैं जिन्हें शत्रु, शैतान हमारी ओर फेंकता है जिन पर हमें प्रभुता करने और जय पाने की ज़रूरत है। उसके बाद, कुछ ऐसी परिस्थितियां हैं जो हमारे ही

अपने कार्यों का परिणाम हैं जिनके लिए हमें ज़िम्मेदारी स्वीकार करने की और आवश्यकता के अनुसार बदलाव लाने की ज़रूरत है।)

उसके प्रेमपूर्ण अनुशासन के प्रति हमारी प्रतिक्रिया प्रगति, परिपक्वता और पवित्रता के अगले स्तर की ओर हमारी उन्नति को निर्धारित करेगी। यह उसके प्रेम में बने रहने और हमारे जीवन की ज़िम्मेदारी को पूरा करने हेतु आगे बढ़ने के लिए महत्वपूर्ण है।

प्रतिदिन जो उत्तम कार्य हम कर सकते हैं, वह है परमेश्वर की ओर ऊपर देखना और उससे बिनती करना कि वह हमें अपने आपसे जोड़े – यदि – ऐसा कुछ है जिसने हमें आज्ञाकारिता से हटा दिया है।

आप स्वयं ही अपने पहरेदार बन सकते हैं। अपने स्वयं के हृदय, आपके अपने विचारों और आपके अपने कार्यों का ध्यान रखें। उसके प्रेम में बने रहें। स्मरण रखें कि उसका सामर्थ्यकारी अनुग्रह और उसके पवित्र आत्मा की बलदायक सहभागिता आपके साथ हमेशा है ताकि आपको उसके प्रेम में बने रहने की योग्यता प्रदान करे (2 कुरिन्थियों 13:14)। जिस क्षण हम अपने आपको आज्ञाकारिता के स्थान से बाहर निकलते हुए देखते हैं, पिता के प्रेम में बने रहने के स्थान से एक इंच भी बाहर कदम निकालते हैं – उस क्षण, हमें अपने आपको जांचना है और वापस उसके प्रेम में बने रहने के स्थान में आना है।

जीवन में, ऐसे समय आएंगे जब हमें कड़ाई और अनुशासन के साथ कुछ बातों का सामना करना होगा। उदाहरण के तौर पर माता–पिता के रूप में, या कक्षा में एक शिक्षक के रूप में, या पेशेवर के रूप में जो अपने कर्मचारियों के साथ में व्यवहार करता है, ऐसा समय होगा जब हमें इनका सामना करना होगा, सुधारना होगा, डांटना

होगा, यह मांग करना होगा कि किस बात की आवश्यकता है या क्या किया जाना अपेक्षित है। हम इन कठिन बातों का भी ज़िम्मेदार अगुवे की कठोरता से सामना करते हैं और फिर भी पिता के प्रेम से चलते हैं। परमेश्वर का आत्मा सुधार और अनुशासन पर अमल करते हुए भी पिता के बिनशर्त प्रेम से ऐसी कठिन परिस्थितियों का सामना करने की सामर्थ हमें प्रदान करेगा। यह भी पिता के प्रेम की अभिव्यक्ति है।

पिता के प्रेमपूर्ण अनुशासन के विषय में गलत धारणाएं

अक्सर लोगों के मन में पिता की प्रेमपूर्ण ताड़ना क्या है इस विषय में अजीब गलत धारणाएं होती हैं। वे गलत रीति से बीमारी, विपत्ति, दुर्घटनाओं, असफलताओं, त्रासदियों, निर्धनता, आदि बातों को पिता का प्रेममय अनुशासन, निर्देश या सुधार समझ बैठते हैं। हममें चाहे कितने ही दोष क्यों न हों, फिर भी सांसारिक माता–पिता के रूप में हम अपने बच्चों के साथ ऐसा नहीं करेंगे। कौन–सा सांसारिक पिता या मां, जो अपने बच्चे को सिखाना, निर्देश देना या उसका पालन–पोषण करना चाहता है, उन्हें रोग, दुर्घटना, त्रासदी आदि की कसौटी से लेकर जाएगा, केवल इसलिए ताकि आप परिपक्व हो सकें। नहीं, कोई भी नहीं! तो हम हमारी आत्मिक समझ में कैसे असंगत और विसंगत हैं, कि हम ऐसी बातों के (बीमारी, विपत्ति, दुर्घटनाएं, असफलताएं, त्रासदियां, निर्धनता, आदि) दोष अत्यंत प्रेमी स्वर्गीय पिता पर लगाते हैं, मानो हमारे जीवनों में यह उसके प्रेमपूर्ण अनुशासन की अभिव्यक्तियां थीं! प्रभु यीशु मसीह ने अत्यंत स्पष्ट रूप से बताया कि हमारा स्वर्गीय पिता संसारिक माता–पिता से असीमित रूप से बेहतर है। *"तुम में से ऐसा कौन मनुष्य है कि यदि उसका पुत्र उससे रोटी मांगे, तो वह उसे पत्थर दे; या यदि वह मछली मांगे, तो उसे सांप दे? इसलिए जब तुम बुरे होकर, अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को अच्छी वस्तुएं क्यों न देगा?"* (मत्ती 7:9–11)।

हमारे स्वर्गीय पिता के प्रेमी अनुशासन में और विद्रोह तथा पश्चाताप न करते हुए, हठ के साथ पाप करने के लिए परमेश्वर के दंड में बड़ा अंतर है। विश्वासियों के नाते, हमारे जीवनों के मार्ग में हम सामान्य तौर पर पिता के प्रति आज्ञाकारिता में चलते हैं और ऐसे स्थान में नहीं आते जहां हम परमेश्वर के दंड के योग्य हों। भले ही हम पाप करते हैं, फिर भी हम जानते हैं कि परमेश्वर के साथ तुरंत सही सम्बंध कैसे स्थापित करें। जब हम परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता में चलते हैं, तब एक शत्रु शैतान और उसकी दुष्टात्माएं आती हैं जो अपनी चालें और युक्तियां लेकर हमारे विरोध में आती हैं। हमें शत्रु के कार्य को पहचानना है कि वह क्या है अैर मसीह में अपने अधिकार के स्थान का उपयोग करते हुए ऐसी बातों का सामना करना है, उन पर जय पाना है और निरंतर विजय में चलना है। हमें शत्रु के दुष्ट कामों का दोष परमेश्वर पर नहीं लगाना है – अर्थात चोरी करना, घात करना, और नाश करना, रोग, विपत्ति, दुर्घटनाएं, असफलताएं, त्रासदियां, निर्धनता, आदि।

मनन

1. प्रेमी स्वर्गीय पिता अपने बच्चों को क्यों अनुशासित करेगा?

2. पिता अपने बच्चों के साथ व्यवहार करता है इस संदर्भ में, इब्रानियों 12:5–6 में उल्लेख किए गए ताड़ना देना, घुड़कना और कोड़े लगाने का क्या अर्थ है? इसका सारांश लिखें।

3. परमेश्वर कौन–से चार मार्गों से हमारे जीवनों में प्रेममय सुधार लाता है? आप इसके प्रति अपने आपको कैसे संवेदनशील बना सकते हैं इस पर विचार करें, ताकि आपके जीवन में परमेश्वर के प्रेममय सुधार को आप पहचान सकें और शीघ्र प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकें।

7

हमारे स्वर्गीय पिता का अनुकरण करना

पिता के प्रेम का अनुभव करने से न केवल प्रेम पाने की हमारी क्षमता पुनःस्थापित होती है, बल्कि प्रेम करने की हमारी क्षमता भी पुनःस्थापित होती है। हम इस रीति से प्रेम में चलने में समर्थ होते हैं जो हमारी क्षमता से परे हैं।

हममें और हमारे द्वारा उसका प्रेम

इफिसियों 5:1–2
1 इसलिए प्रिय, बालको के समान परमेश्वर के सदृश्य बनो।
2 और प्रेम में चलो; जैसे मसीह ने भी तुमसे प्रेम किया; और हमारे लिए अपने आप को सुखदायक सुगन्ध के लिए परमेश्वर के आगे भेंट करके बलिदान कर दिया।

हमें अपने स्वर्गीय पिता का अनुकरण करना है। प्रथम पहलु जिसका अनुकरण करने के लिए हमें बुलाया गया है, वह है प्रेम में चलना। हमारा आदर्श है मसीह तथा उसके प्रेम का उदाहरण। वही करें जो यीशु ने किया। उसने हमें दिखा दिया कि प्रेम में चलना क्या है।

परमेश्वर हमें ऐसा कुछ करने की आज्ञा नहीं देगा जो सम्भव (असाध्य) नहीं है। न ही वह हमें ऐसा कुछ करने की आज्ञा देगा जिसे करने की सामर्थ वह हमें नहीं देगा। अतः उसकी नकल या अनुकरण करने हेतु और मसीह जैसे चला वैसे प्रेम में चलने की उसकी आज्ञा तब सम्भव होती है जब हम ऐसा करने हेतु उसकी सामर्थ पाते हैं।

जब हम स्वर्गीय पिता का अनुकरण करते हैं और प्रेम में वैसे ही चलते हैं जैसे मसीह चला तो यह ऐसा बलिदान होता है जो हमारे

पिता को प्रसन्न करता है, सुखदायक सुगन्ध के समान, ठीक उसी रीति से जैसे पिता यीशु के बलिदान से प्रसन्न था।

प्रेम में चलना अधिक उत्तम मार्ग पर चलना है

1 कुरिन्थियों 12:31

तुम बड़े से बड़े वरदानों के धुन में रहो! परंतु मैं तुम्हें और भी सब से उत्तम मार्ग बताता हूं।

1 कुरिन्थियों 13:1–13

1 यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की बोलियां बोलूं, और प्रेम न रखूं, तो मैं ठनठनाता हुआ पीतल, और झंझनाती हुई झांझ हूं।
2 और यदि मैं भविष्यद्वाणी कर सकूं, और सब भेदों और सब प्रकार के ज्ञान को समझूं, और मुझे यहां तक पूरा विश्वास हो कि मैं पहाड़ों को हटा दूं, परंतु प्रेम न रखूं, तो मैं कुछ भी नहीं।
3 और यदि मैं अपनी सम्पूर्ण संपत्ति कंगालों को खिला दूं, या अपनी देह जलाने के लिए दे दूं, और प्रेम न रखूं, तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं।
4 प्रेम धीरजवन्त है, और कृपाल है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं।
5 वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता।
6 कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परंतु सत्य से आनन्दित होता है।
7 वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है।
8 प्रेम कभी टलता नहीं; भविष्यद्वाणियां हों, तो समाप्त हो जाएंगी; भाषाएं हों, तो जाती रहेंगी; ज्ञान हो, तो मिट जाएगा।
9 क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है, और हमारी भविष्यद्वाणी अधूरी।
10 परंतु जब सर्वसिद्ध आएगा, तो अधूरा मिट जाएगा।
11 जब मैं बालक था, तो मैं बालकों के समान बोलता था, बालकों का सा मन था, बालकों की सी समझ थी; परंतु जब सियाना हो गया, तो बालकों की बातें छोड़ दीं।
12 अब हमें दर्पण में धुंधला सा दिखाई देता है; परंतु उस समय हम आमने सामने देखेंगे, इस समय मेरा ज्ञान अधूरा है; परंतु उस समय ऐसी पूरी रीति से पहचानूंगा, जैसा मैं पहचाना गया हूं।

13 पर अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थाई हैं, पर इनमें सब से बड़ा प्रेम है।

1 कुरिन्थियों 14:1
प्रेम का अनुकरण करो, और आत्मिक वरदानों की भी धुन में रहो, विशेष करके यह कि भविष्यद्वाणी करो।

1 कुरिन्थियों 12 में, आत्मा के वरदानों ;हपजि वि जीमै चपतपजद्ध और मसीह की देह में सदस्यता के कार्यों ;उमउइमतींपच निदबजपवदेद्ध(अगुवाई करना, सिखाना, प्रशासन, इत्यादि इत्यादि) के विषय में समझाने के बाद प्रेरित पौलुस हमें प्रोत्साहित करता है कि हम इन वरदानों की इच्छा रखें, परंतु वह कहता है कि वह हमें उससे "उत्तम मार्ग" बताना चाहता है या ऐसा मार्ग जो बेहतर या अत्यंत श्रेष्ठ है। यहां पर अर्थ यह है कि लोगों की सेवा करने का और मसीह की देह की सेवा करने का एक बेहतर मार्ग है – ऐसा मार्ग जो आत्मा के वरदानों से और सदस्यता के कार्यों का उपयोग करने से बेहतर है। वह हमें निर्देश देता है कि हम परमेश्वर सदृश्य प्रेम में चलें।

1 कुरिन्थियों 13 के प्रथम भाग में पौलुस स्पष्ट करता है कि यदि हम परमेश्वर सदृश्य प्रेम से प्रेरित न होकर और इस प्रेम के मार्गदर्शन में न चलते हुए आत्मा के वरदानों में कार्य करते हैं और सदस्यता के कार्यों को करते हैं और दया के बड़े–बड़े काम करते हैं, यहां तक कि अपनी देह को जलाने के लिए भी दे देते हैं – तौभी यह सबकुछ व्यर्थ है, कुछ भी नहीं, उसका कोई लाभ नहीं है! सेवा और सेवकाई करते समय यह प्रेम में बने रहने के महत्व को दिखाता है।

जो कुछ भी हम करते हैं वह परमेश्वर सदृश्य प्रेम से संचालित, निर्देशित और प्रेरित होना चाहिए। परमेश्वर के प्रेम पर निर्भर रहते हुए और इस प्रेम में जीवन बिताते हुए वह करें। जैसा कि पौलुस 4–8 वचनों में स्पष्ट करता है, कि यदि हम अधीर, निर्दयी, ईर्ष्या रखने वाले,

स्वार्थी, अपनी बड़ाई करने वाले, असभ्यता का आचरण करने वाले, अपनी ही तरक्की खोजने वाले, आत्म–केन्द्री, तुनक मिजाजी, गुस्सैल, बुरे विचार और उद्देश्य रखने वाले, अधर्म और असत्य को बढ़ावा देने वाले हैं, तो हम प्रेम से संचालित, निर्देशित और प्रेरित नहीं हैं। अनुचित उद्देश्य से आत्मा के वरदानों का उपयोग करना मायने नहीं रखता, वह व्यर्थ है और उससे कोई लाभ नहीं है।

आत्मा के वरदानों, सेवा के कार्यों, दया के कामों के उपयोग से और विश्वास तथा आशा से प्रेम अधिक श्रेष्ठ है, इसका कारण यह है कि प्रेम स्थायी है। ऐसा समय आएगा जब केवल एक ही बात कार्य करेगी, वह है प्रेम – अन्य सारी बातें निष्क्रिय हो जाएगी और उनका कोई उपयोग न होगा।

इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें आत्मा के वरदानों का या सदस्यता के कार्यों का उपयोग नहीं करना है। प्रेम में चलने हेतु अपनी प्राथमिकताओं को सही करने के बाद आत्मा के वरदानों और सदस्यता के कार्यों का हम अनुसरण करते हैं, जैसा कि पौलुस 1 कुरिन्थियों 14:1 में सारांश प्रस्तुत करता है।

स्मरण रखें, विश्वास प्रेम के द्वारा कार्य करता है (गलातियों 5:6)।

(टिप्पणियां : वचन 8 में भविष्यद्वाणियों के संदर्भ में ("भविष्यद्वाणियां, समाप्त हो जाएगी;") और ज्ञान के संदर्भ में ("ज्ञान, वह मिट जाएगा") समान ग्रीक शब्द *"katargeoo"* का अनुवाद "वे समाप्त हो जाएगी" और "वे मिट जाएगा" किया गया है। अर्थ यह है कि इन वरदानों का अब उपयोग नहीं होगा, वे निष्क्रिय हो जाएंगे।)

प्रेम कभी टलता नही

1 कुरिन्थियों 13:8
प्रेम कभी टलता नहीं।

जिस ग्रीक शब्द का अनुवाद "टलता नहीं" किया गया है, वह प्रेम के सम्बन्ध में उपयोग किया गया है, वह शब्द है "माचपचजव", जिसका अर्थ स्ट्रॉंग के ग्रीक शब्दकोष के अनुसार है *"अपने मार्ग से हटाया हुआ; अलंकारिक तौर पर, खोना, अक्षम होना"* है और थायर के ग्रीक शब्दकोष के अनुसार इसमें *"ऐसे स्थान से गिरना जहां पर हम टिक नहीं सकते, पद से गिरना, गिरकर निर्बल होना, ज़मीन पर गिरना, प्रभावरहित होना"* आदि अर्थ शामिल हैं।

यदि हम इन सारी बातों को एक साथ जोड़ें, तो हमें यह समझ प्राप्त होती है कि जब हम प्रेम में चलेंगे, तब हम मार्ग से नहीं हटेंगे। प्रेम में चलना सही मार्ग पर, सही राह पर बने रहना है। इसी तरह, जब हम प्रेम में चलेंगे तब हम निर्बल होकर नहीं गिरेंगे, हमारा अनादर नहीं किया जाएगा, न ही हम निरूपयोगी होंगे। बल्कि हम प्रभाव रखेंगे और प्रभावशाली होंगे।

इसलिए हम समझें कि जब हम प्रेम में चलते हैं, तब हम ऐसे मार्ग में चलते हैं जहां पर हम असफल नहीं होंगे। जो कुछ आप परमेश्वर–सदृश प्रेम से प्रेरित होकर, मार्गदर्शन पाकर और शासित होकर करेंगे, उसका अपना प्रभाव होगा।

पिता के प्रेम में बने रहने और उसके प्रेम से जीवन बिताने से आप निरंतर सही मार्ग पर बने रहेंगे।

उसका प्रेम स्वीकार करना प्रेम करने की हमारी क्षमता को बढ़ाता है,

रोमियों 5:3–5

3 केवल यही नहीं, वरन् हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यही जानकर कि क्लेश से धीरज;

4 और धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है।

5 और आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है।

हम मुश्किलों से होकर गुज़रते हैं और प्रेरित पौलुस विश्वासियों के रूप में हमारे वर्तमान जीवन के विषय में लिखता है। यह जानकर कि इससे हमारा धीरज बढ़ता है और परिणामस्वरूप हमारा चरित्र बढ़ता है, हम ऐसा करते हैं और इससे हमारी आशा दृढ़ होती है – जो आने वाला है उसकी अपेक्षा और प्रत्याशा।

अब जो उम्मीद या आशा हमारे पास है, वह हमें निराश नहीं करती। अर्थात इसका अर्थ यह है कि यह आशा हमें लज्जित नहीं होने देती या जो आशा हमारे पास है उससे हम लज्जित नहीं होते, क्योंकि यहां और अभी हम परमेश्वर के प्रेम को, पिता के असीम और बिनशर्त प्रेम को अनुभव कर रहे हैं। यह प्रेम हमारे हृदयों में पवित्र आत्मा द्वारा बहुतायत से, बलपूर्वक उण्ड़ेला जा रहा है।

यह प्रेम – पिता का प्रेम – हमारे हृदयों में बहुतायत से है और उमड़ रहा है, ताकि हम उसका अनुभव करें और आनंद उठाएं और उसे दे भी दें।

पिता का प्रेम हमारे हृदय में बहुतायत से है इसलिए, हम क्लेश में आनंदित होते हैं और हमारी आशा में लज्जित नहीं होते।

पिता का प्रेम हमारे हृदयों में उमड़ता रहता है, इस कारण इस प्रेम से दूसरों को प्रेम करने की हमारी क्षमता अब विस्फोटित होती है। अब हमने पवित्र आत्मा द्वारा दूसरों से वैसे ही प्रेम करने की सामर्थ पाई है जैसे वह प्रेम करता है। हम वैसे ही प्रेम कर सकते हैं जैसे पिता प्रेम करता है! हम वही करते हैं जो प्रेम करेगा। हम न्याय करना (नकारात्मक रीति से), आलोचना करना और लोगों पर दोष लगाना बंद कर देते हैं। हम प्रेम में सत्य बोलते हैं, सुधारते हैं और मार्गदर्शन करते

हैं। हम मुश्किल परिस्थितियों में भी विश्वास करते हुए और लोगों को उठाते हुए आशापूर्ण रहते हैं।

कल्पना करें कि यह प्रेम पति और पत्नी के रिश्तों में लाया जाए। वस्तुतः हमें परमेश्वर के वचन में ऐसा करने की शिक्षा दी गई है। जैसे मसीह ने प्रेम किया वैसे प्रेम करें। पिता के प्रेम से प्रेम करें।

इफिसियों 5:25
हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया।

इस दुखद संसार में हमारे वैवाहिक जीवन और परिवार प्रेम के मरूद्यान होंगे। पिता के प्रेम की प्रचुरता के कारण पति, पत्नी और बच्चे घर में रहने का, एक साथ रहने का इंतज़ार करेंगे। घर आश्रय, सांत्वना, बल और चंगाई का स्थान होगा।

वैसे प्रेम करना जैसे परमेश्वर प्रेम करता है, परमेश्वर को प्रकट करता है

1 यूहन्ना 4:12
परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा; यदि हम आपस में प्रेम रखें, तो परमेश्वर हममें बना रहता है, और उसका प्रेम हम में सिध्द हो गया है।

किसी ने कभी परमेश्वर को नहीं देखा। जब हम एक–दूसरे से प्रेम करते हैं, तब परमेश्वर हममें वास करता है और हमारे द्वारा दिखाई देता है। जब हम दूसरों से उसके प्रेम से प्रेम करते हैं, तब परमेश्वर हमारे द्वारा प्रकट होता है। जैसे परमेश्वर ने प्रेम किया वैसे प्रेम करना परमेश्वर को प्रकट करता है। वह पिता के प्रेम की साकार अभिव्यक्ति के माध्यम से परमेश्वर के प्रकाशन का एक पैमाना ले आता है।

मलाकी 4:5–6
5 देखो, यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहिले, मैं तुम्हारे पास एलिय्याह नबी को भेजूंगा।

6 और वह माता–पिता के मन को उनके पुत्रों की ओर, और पुत्रों के मन को उनके माता–पिता की ओर फिरेगा; ऐसा न हो कि मैं आकर पृथ्वी को सत्यानाश करूं।

प्रभु के दिन के आने से पहले परमेश्वर के कार्यों में से एक होगा पिता के हृदयों को बच्चों की ओर फेरना और बच्चों के हृदयों को पिता के हृदयों की ओर फेरना। यह इतना महत्वपूर्ण है कि यदि ऐसा नहीं हुआ, तो पृथ्वी शापित होगी। इस विषय में हम स्वाभाविक परिवार के सदंर्भ में भी विचार करेंगे और स्थानीय कलीसियाई परिवार के संदर्भ में भी। कइयों के लिए हमारे स्वर्गीय पिता परमेश्वर के बिनशर्त, पोषणकारी, स्नेही प्रेम की झलक देखने का पहला अवसर उनके अपने माता–पिता की ओर से होता है। और जब यह प्रेम टूट जाता है, तो वे निश्चित नहीं जानते कि वे उस प्रकार का प्रेम और कहां पा सकते हैं। माता–पिता होने के नाते, कभी–कभी हम या तो स्वर्गीय पिता के प्रेम को गलत रूप से प्रकट करते हैं या अपने बच्चों को उसके प्रेम का कोई चिन्ह नहीं देते। हममें से कुछ पापा (पिता) यह गलत सोच रखते हैं कि प्रेम या भावना व्यक्त करना निर्बलता का चिन्ह है और 'पौरुष' का प्रतीक नहीं है। यह सच नहीं है।

हमारे परिवार को हम पिताओं में परमेश्वर पिता के प्रेम, उसकी कोमलता, उसकी सौम्यता, उसकी भलाई, उसकी दया, उसके धीरज, उसकी दयालुता के प्रकाशन को देखने की ज़रूरत है। जो कुछ वे हममें देखते हैं उसके कारण वे हमारे स्वर्गीय पिता परमेश्वर के उनके प्रेम में और गहराई से खींचे जाएं।

यह कलीसियाई परिवार के विषय में भी सच है। जब उद्धार न पाए हुए, स्वच्छंद, उड़ाऊ पुत्र कलीसियाई समुदाय में 'पिता (और माता)' के प्रेम को देखेंगे, तो वे घर लौट आएंगे। स्थानीय कलीसिया

वह स्थान होना चाहिए जहां पर टूटे मनवाले, खोए हुए और दुखी लोगों का स्वागत हो, और जहां पिता के प्रेम के द्वारा सम्पूर्ण स्वास्थ्य के स्थान में उनका पालन–पोषण होगा।

जैसे परमेश्वर प्रेम करता है वैसे प्रेम करने से उसके प्रेम का हमारा प्रकाशन बढ़ता है

1 यूहन्ना 4:12
परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा; यदि हम आपस में प्रेम रखें, तो परमेश्वर हममें बना रहता है, और उसका प्रेम हम में सिध्द हो गया है।

जब हम उसके प्रेम से दूसरों से प्रेम करते हैं, तब उसका प्रेम हममें सिद्ध होता है, पूरा होता है, पूर्णता पाता है, और उसके नियोजित उद्देश्य को पूरा करता है। हमारे प्रति पिता के प्रेम की और बड़ी समझ में हम बढ़ते हैं और उसके प्रेम को हममें नियोजित कार्य करने का अवसर देने की क्षमता रख पाते हैं।

पिता के प्रेम की हमारी समझ और प्रकाशन में बढ़ने के सर्वोत्तम मार्गों में से एक है, वैसे ही प्रेम करना जैसे वह करता है। जब हम वैसे ही प्रेम करने का चुनाव करते हैं, जैसे परमेश्वर करता है, तब हम यह व्यावहारिक तौर पर करते हैं, मुश्किल परिस्थितियों में भी, तब उसके प्रेम का हमारा व्यक्तिगत प्रकाशन बढ़ते जाता है। जैसे–जैसे दूसरों से प्रेम करने की हमारी क्षमता का विस्तार होता है, वैसे–वैसे हम बढ़ते पैमाने में हमारे प्रति उसके प्रेम की महानता को समझने लगते हैं। दूसरों के प्रति हमारे प्रेम को विस्तार पाने की हम जितनी अधिक अनुमति परमेश्वर को देते हैं, उतना अधिक हमारे लिए उसके प्रेम का प्रकाशन बढ़ता है। जब हम उसके प्रेम को उण्डेलते हैं, तब हम उसके प्रेम के और उण्डेले जाने को अनुभव करते हैं। उसके प्रेम का और बड़ा प्रकाशन हमारा हो जाता है।

परमेश्वर के साथ प्रेम में चलना, परमेश्वर के साथ एकता में चलना है

1 यूहन्ना 4:16
और जो प्रेम परमेश्वर हमसे रखता है, उसको हम जान गए, और हमें उसकी प्रतीति है। परमेश्वर प्रेम है; और जो प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता है, और परमेश्वर उसमें बना रहता है।

1 यूहन्ना 4:16 (गुड़ न्यूज़ बाइबल)
और हम स्वयं उस प्रेम को जो परमेश्वर हमसे रखता है, जानते हैं और उस पर विश्वास करते हैं। परमेश्वर प्रेम है; और जो प्रेम में जीता है, वह परमेश्वर के साथ एकता में रहता है, और परमेश्वर उसके साथ एकता में रहता है।

जब हम पिता के प्रेम में जीते हैं और उसके प्रेम से जीते हैं, तब हम परमेश्वर में और परमेश्वर हममें जीता है। जब हम पिता के प्रेम में जीते हैं, तब हम परमेश्वर के साथ एकता में आगे बढ़ते हैं। हम वास्तव में परमेश्वर में और परमेश्वर के द्वारा बढ़ते हैं और परमेश्वर हममें और हमारे द्वारा बढ़ता है। यह सत्य अत्यंत सामर्थी है। जब हम पिता के प्रेम में विश्राम करते हैं और पिता के प्रेम से जीते हैं, तब हम परमेश्वर की एकता में बढ़ते हैं। जब हम प्रेम में बढ़ते हैं, तब परमेश्वर हमारे साथ बढ़ता है। जब हम प्रेम में कार्य करते हैं तब परमेश्वर हमारे साथ कार्य करता है। प्रेम के साथ जब हम छूते हैं, तब परमेश्वर छूता है। प्रेम में, जब हम बोलते हैं, तब परमेश्वर बोलता है। जब हम परमेश्वर सदृश प्रेम में चलते हैं, तब हम परमेश्वर के साथ एकता में चलते हैं, और इस कारण हम अपराजित हैं। हमें रोकने के लिए, नीचे खींचने के लिए या हमें पीछे हटाने के लिए शैतान कुछ नहीं कर सकता।

इसे हम अपने जीवन का मार्ग बना लें। हम पिता के प्रेम में विश्राम करें, जीएं और उस में से कार्य करें। जब हम ऐसा करते हैं, तब हम परमेश्वर में बढ़ते हैं और परमेश्वर हममें और हमारे द्वारा बढ़ता है।

मनन

1. कुछ बदलावों को लिखें जिनके लिए आप प्रभु से बिनती करेंगे कि ये बदलाव लाने में वह आपकी सहायता करे, ताकि आप हमारे स्वर्गीय पिता का अनुकरण कर जैसे वह प्रेम करता है, वैसे प्रेम करें।

2. हमने प्रेम में चलने की कई अन्तर्दृष्टियों पर विचार किया है :

   प्रेम में चलना अधिक उत्तम मार्ग पर चलना है।

   प्रेम कभी टलता नही

   उसके प्रेम को ग्रहण करना प्रेम करने की हमारी क्षमता का विस्तार करता है।

   वैसे प्रेम करना जैसे परमेश्वर प्रेम करता है, परमेश्वर को प्रकट करता है।

जैसे परमेश्वर प्रेम करता है वैसे प्रेम करना उसके प्रेम के हमारे प्रकाशन का विस्तार करता है

प्रेम में चलना परमेश्वर के साथ एकता में चलना है.

– इन कथनों में से प्रत्येक को व्यक्तिगत तौर पर लागू करें और प्रत्येक को आपकी अपनी व्यक्तिगत जीवन परिस्थिति पर लागू करते हुए एक या दो वाक्य लिखें।

अ) क्योंकि प्रेम में चलना और उत्तम मार्ग पर चलना है, मैं .....

_____

_____

_____

ब) क्योंकि प्रेम कभी टलता नहीं, इस कारण मैं जानता हूं कि ..... .

_____

_____

_____

क) क्योंकि उसका प्रेम स्वीकार करना प्रेम करने की मेरी क्षमता को बढ़ाता है, मैं जानता हूं कि मैं.....

_____

_____

_____

ड) क्योंकि जैसे परमेश्वर प्रेम करता है वैसे प्रेम करना परमेश्वर को प्रकट करता है, मैं.....

_____

_____

_____

इ) क्योंकि जैसे परमेश्वर प्रेम करता है वैसे प्रेम करना उसके प्रेम के मेरे प्रकटीकरण को बढ़ाता है, मैं.....

_____

_____

_____

ई) क्योंकि प्रेम में चलना परमेश्वर के साथ एकता में चलना है, मैं.. .....

_____

_____

_____

ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें

ऑल पीपल्स चर्च स्थानीय कलीसिया के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुसमाचार प्रचार करते हुए, विशेषकर उत्तर भारत में, उसकी सीमाओं से परे सेवा करता है। उसका विशेष लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (ब) जवानों को सेवकाई के लिए सुसज्जित करना और (क) मसीह की देह की उन्नति करना है। जवानों के लिए कई प्रशिक्षण सम्मेलन, मसीही अगुवों के लिए सभाओं का सम्पूर्ण वर्ष भर आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों की कई हजारों प्रतियां अंग्रेजी में और अन्य कई भारतीय भाषाओं में विनामूल्य वितरीत की जाती हैं, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि विश्वासियों को वचन और आत्मा में उन्नति प्रदान करें।

हम आपको निमंत्रण देते हैं कि एक समय का दान भेजकर या मासिक आर्थिक दान भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ साझेदारी करें। सम्पूर्ण राष्ट्र में इस कार्य के लिए जो भी रकम आप भेज सकते हैं, उसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

आप अपने दान चेक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से ''ऑल पीपल्स चर्च, बैंगलोर'' के नाम पर हमारे कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग कर आप अपना योगदान सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

Account Name: All Peoples Church
Account Number: 0057213809
IFSC Code: CITI0000004
Bank: Citibank N.A., No. 5, M.G. Road, Bengaluru, Karnataka 560001

कृपया ध्यान दें : ऑल पीपल्स चर्च के पास एफसीआरए परमिट नहीं है और इस कारण केवल भारतीय नागरिकों के बैंक योगदान ही स्वीकार किए जा सकते हैं। अपना दान भेजते समय, आप स्पष्ट रूप से लिखें कि आप एपीसी सेवकाई के किस क्षेत्र के लिए दान भेजना चाहते हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस स्थान को भेंट दें **apcwo.org/give**

उसी तरह, हमारे लिए और हमारी सेवकाई के लिए जब भी हो सके, प्रार्थना करना न भूलें।

धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे!

ऑल पीपल्स चर्च के विनामूल्य प्रकाशन

A Church in Revival*
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Ancient Landmarks*
Baptism in the Holy Spirit
Being Spiritually Minded and Earthly Wise*
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change*
Code Of Honor
Divine Favor*
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling*
Don't Lose Hope
Equipping the Saints
Foundations (Track 1)
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Gifts of the Holy Spirit
Giving Birth to the Purposes of God*
God is a Good God
God's Word
How to Help Your Pastor
Integrity
Kingdom Builders
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife*
Marriage and Family
Ministering Healing and Deliverance
Offenses - Don't take them
Open Heavens*
Our Redemption
Receiving God's Guidance
Revivals, Visitations and Moves of God
Shhh!!! No Gossip
The Conquest of the Mind
The Father's Love
The House of God
The Kingdom of God
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment*
The Presence of God
The Redemptive Heart of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power*
The Wonderful Benefits of speaking in Tongues
The Father's Love
Timeless Principles for the Workplace
Understanding the Prophetic
Water Baptism
We Are Different*
Who We Are in Christ
Women in the Workplace
Work - Its Original Design

उपर्युक्त सभी पुस्तकों के पीडीएफ संस्करण विनामूल्य डाऊनलोड के लिए हमारी कलीसिया के वेबसाईट **apcwo.org/publications** पर उपलब्ध हैं। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। इन पुस्तकों की आपकी विनामूल्य मुद्रित प्रति प्राप्त करने हेतु, **bookrequest@apcwo.org** पर ई-मेल भेजें। *केवल पी डी एफ के रूप में उपलब्ध वैसे ही, विनामूल्य ऑडियो और वीडियो संदेशों, संदेश की टिप्पणियों, और अन्य कई संसाधनों के लिए हमारे वेबसाईट **(apcwo.org/sermons)** को भेंट दें।

सप्ताहांत स्कूल में भाग लें

बैंगलोर में होने वाले सप्ताहांत स्कूल, जीवन और सेवकाई क विशिष्ट क्षेत्रों में विश्वासियों को प्रशिक्षित और सुसज्जित करने हेतु तैयार किए गए हैं। इन्हें सुविधा क अनुसार शनिवार सुबह 9 से शाम 6 बजे तक संचालित किया जाता है। सप्ताहांत स्कूल सभी कलीसियाओं के और सभी डिनॉमिनेशन के उन सभी विश्वासियों के लिए हैं, जो प्रशिक्षण पाने और सेवकाई के लिए तैयार होने में रूचि रखते हैं। नीचे सप्ताहांत स्कूलों की सूची दी गई है जो इस समय आयोजित किए जा रहे हैं।

भविष्द्धक्ता की सेवकाई का सप्ताहांत स्कूल
चंगाई और छुटकारे का सप्ताहांत स्कूल
आत्मा के वरदानों के प्रकटीकरण पर सप्ताहांत स्कूल
प्रार्थना और मध्यस्थी का सप्ताहांत स्कूल
आंतरिक स्वास्थ्य का सप्ताहांत स्कूल
जीवन-शैली सुसमाचार प्रचार का सप्ताहांत स्कूल
परमेश्वर कार्य कर रहा है पर सप्ताहांत स्कूल
शहरी मिशन और कलीसिया रोपण पर सप्ताहांत स्कूल
मसीही पक्ष समर्थन (Christian Apologetics) पर सप्ताहांत स्कूल

कृपया वर्तमान समय-सारणी और ऑन लाईन पंजीयन हेतू इस वेबसाईट को भेंट दें : **apcwo.org/weekendschool**

मसीही अगुवों की सभा का आयोजन करें

ऑल पीपल्स चर्च पासबानों, स्थानीय कलीसियाई अगुवों, मसीही संस्थाओं के अगुवों और मसीही सेवकाई में सेवारत अन्य लोगों के लिए आत्मा से अभिषिक्त सुसज्जीकरण एवं सहायता प्रदान करते हैं। अभिषिक्त शिक्षा, आत्मा की अगुवाई से प्रेरित सेवकाई एवं इम्पार्टेशन के अलावा, हमारी टीमें सहभागियों के साथ व्यक्तिगत वार्तालाप और चर्चा करती हैं। प्रत्येक मसीही अगुवों की सभा खास तौर पर दो से तीन दिनों की होती है जो विशिष्ट विषयों पर केंद्रित होती हैं। सहभाग लेने वाले वहां से नवीनीकरण प्राप्त कर, सामर्थ पाकर एवं अधिक प्रभाव तथा प्रभावकारिता के लिए सुसज्जित होकर वहां से जाएंगे। मसीही अगुवों की सभाएं विशिष्ट तौर पर स्थानीय कलीसिया, मसीही सेवकाई, मिशन संस्था या कलीसियाओं के डिनॉमिनेशनल मुख्यालयों और पासबानों द्वारा अपने क्षेत्रों में या अपने नेटवर्क या डिनॉमिनेशन के अंतर्गत आयोजित किए जाते हैं। आयोजक संस्था सभा का खर्च तथा सहभागियों को निमंत्रित करने का खर्च वहन करेगी। ऑल पीपल्स चर्च अपनी सेवकाई टीम को स्थानीय अगुवों की महासभा में भाग लेने वाले सहभागियों की सेवा हेतु भेजेगा।

कुछ विशय जिनके सम्बंध में हमारी टीमें सामान्य रूप से सेवकाई प्रदान करती हैं:

- **बेदारी, आत्म-जागृति, और परमेश्व के कार्य**
- **उपस्थिति और महिमा**
- **राज्य के निर्माता** (परमेश्वर का राज्य और राज्य निर्माण)
- **समतल भूमि**
- **परमेश्वर का भवन**
- **प्रेरित और भविष्यद्वक्ता की सेवकाई**
- **चंगाई और छुटकारे की सेवकाई करना**
- **आत्मा के वरदान**
- **विवाह और परिवार**
- **संतों को तैयार करना और व्यावसायिक स्थानों में परिवर्तन**

अतिरिक्त जानकारी एवम् मसीही अगुवों की सभा के लिए विषयों की वर्तमान सूची हेतु, कृपया इस वेबसाईट को भेंट दें : apcwo.org/CLC

मसीही अगुवों की सभा की समय-सारणी एवं योजना के लिए कृपया हमें इस पते पर ईमेल करें : contact@apcwo.org

ऑल पीपल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपल्स चर्च (एपीसी) का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

एपीसी में हम परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बिना किसी समझोते के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रकाशन के साथ प्रस्तुत करने के प्रति समर्पित हैं। हमारा विश्वास है कि अच्छा संगीत, रचनात्मक प्रस्तुति, बुद्धिमानीपूर्ण पक्ष समर्थन, समकालीन सेवकाई की तकनीकें, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि पवित्र आत्मा के चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मो और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ वचन की घोषणा करने की परमेश्वर द्वारा नियुक्त पद्धति का स्थान नहीं ले सकते (1 कुरिन्थियों 2:4, 5; इब्रानियों 2:3, 4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारी पद्धति पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा आवेश लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह सदृश्य परिपक्वता है।

हमारा मुख्यालय बैंगलोर में है, परंतु ऑल पीपल्स चर्च की भारत की अन्य कई स्थानों में शाखाएं हैं। ऑल पीपल्स चर्च की वर्तमान सूची और सम्पर्क सूचना के लिए कृपया हमारे वेबसाईट को भेंट दें : **www.apcwo.org/locations** या इस पते पर ई-मेल भेजें : contact@apcwo.org

क्या आप उस परमेश्वर को जानत हैं जो आपसे प्रेम करता है?

दो हज़ार साल पहले, परमेश्वर इस संसार में मनुष्य बनकर आया। उसका नाम यीशु है। उसने पूर्ण रूप से निश्पाप जीवन बिताया। यीशु देहधारी परमेश्वर था, इसलिए जो कुछ उसने कहा और किया, उसके द्वारा उसने परमेश्वर को हम पर प्रगट किया। जिन वचनों को उसने कहा, वे परमेश्वर के वचन थे। जिन कामों को उसने किया, परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने इस पृथ्वी पर कई सामर्थ के काम किए। उसने बीमारों को और पीड़ितों को चंगा किया। उसने अन्धों की आंखें खोलीं, बहरे कानों को खोल दिया, लंगड़े चलने लगे। उसने हर प्रकार के रोगों और बीमारियों को चंगा किया। उसने आश्चर्यजनक रूप से कुछ ही रोटियां बहुगुणित कर भूखों को खिलायी, आंधी को थामा और कई आश्चर्यकर्म किए।

ये सारे कार्य हमें दिखाते हैं कि यीशु अच्छा परमेश्वर है, जो चाहता है कि उसके लोग भले, चंगे स्वस्थ और खुश रहें। परमेश्वर लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है।

फिर परमेश्वर ने क्यों मनुष्य बनने का और हमारे संसार में आने का निर्णय लिया? यीशु क्यों आया?

हम सबने पाप किया है और ऐसे कामों को किया है जो हमें उत्पन्न करने वाले परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकारणीय हैं। पाप के परिणाम हैं। पाप परमेश्वर और हमारे बीच एक ऊंची दीवार है जिसे हम लांघ नहीं सकते। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उस परमेश्वर को जानने और उसके साथ, जिसने हमें बनाया है, अर्थपूर्ण रिश्ता बनाए रखने से रोकता है। इसलिए, हम में से कई लोग अन्य बातों का सहारा लेकर इस खालीपन को भरने की कोशिश करते हैं।

हमारे पापों का अन्य परिणाम है। परमेश्वर से अनंतकाल तक अलगाव। परमेश्वर की अदालत में, पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से दूर नर्क में अनंतकाल का अलगाव है।

परंतु सुसमाचार यह है कि हम पाप से मुक्ति पाकर परमेश्वर से फिर मेल कर सकते हैं। बाइबल कहती है, **क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है। (रोमियों 6:23)।** यीशु ने सम्पूर्ण जगत के पापों का दण्ड सहा, वह क्रूस पर मर गया। फिर तीसरे दिन वह जी उठा, और उसने कइयों को खुद को जीवित दिखाया और वह स्वर्ग पर चढ़ गया।

परमेश्वर प्रेमी और दयालु है। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई व्यक्ति नर्क में नाश हो। और इसलिए वह सम्पूर्ण मानवजाति को पापों और उसके परिणामों से मुक्ति का मार्ग

दिखाने के लिए आया। वह पापियों को बचाने के लिए आया - आपके और मेरे जैसे लोगों को पाप और अनंतकाल की मृत्यु से बचाने के लिए।

पापों की यह विनामूल्य क्षमा पाने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है - जो कुछ प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर किया उसे ग्रहण करना और उस पर सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करना।

जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी (प्रे.काम 10:43)।

कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा (रोमियों 10:9)।

यदि आप प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे, तो आप भी पापों की क्षमा और शुद्धता पा सकते हैं।

प्रभु यीशु मसीह में और जो कुछ उसने आपके लिए क्रूस पर किया उस पर विश्वास करने हेतु निर्णय लेने में आपकी सहायता करने के लिए यहां एक सरल प्रार्थना दी गई है। इस प्रार्थना की सहायता से आप जो कुछ यीशु ने आपके लिए किया, उसे ग्रहण कर सकते हैं और क्षमा और पापों से शुद्धी पा सकते हैं। यह प्रार्थना मात्र मार्गदर्शन के लिए है। आप अपन शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु यीशु, जो कुछ आपने क्रूस पर किया उसे मैंने आज समझा है। आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे लिए बहुमूल्य लोहू बहाया और मेरे पापेां का दण्ड चुकाया, ताकि मुझे क्षमा मिल सके। बाइबल बताती है कि जो कोई आप पर विश्वास करेगा वह अपने पापों से क्षमा पाएगा।

आज, मैं आप में विश्वास करने का और क्रूस पर मेरे लिए मरकर और फिर मरे हुओं में से जी उठकर जो कुछ आपने मेरे लिए किया उसे ग्रहण करने का निर्णय लेता हूं। मैं जानता हूं कि मैं अपने भले कामों से खुद को बचा नहीं सकता, न ही और कोई मनुष्य मुझे बचा सकता है। मैं अपने पापेां की क्षमा मोल नहीं ले सकता।

आज, मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूं और अपने मुंह से कहता हूं कि आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे पापों का दण्ड चुकता किया। आप फिर मरे हुओं में से जी उठे, और आपमें विश्वास करने के द्वारा, मैं पापों की क्षमा और मेरे पापों से शुद्धता पा सकता हूं।

धन्यवाद यीशु। आपसे प्रेम करने, आपको अधिकाई से जानने और आपके प्रति विश्वासयोग्य रहने में मेरी सहायता कीजिए। आमीन।

विनामूल्य ऐप डाऊनलोड करें

ऐप में या गुगल प्ले स्टोर में
"ऑल पीपल्स चर्च, बैंगलोर" ढूंढ़ें।

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google play

प्रतिदिन 5 मिनिट की वीडिओ के माध्यम से आराधना
प्रतिदिन बाइबल वाचन और प्रेयर गाईड
5 मिनिटों का उपदेश का सारांश
विश्व में उन्नति के लिए विभिन्न विषयों पर पवित्र शास्त्र की टूल किट तथा सुसमाचार सुनाने हेतु जानकारी
उपदेश, उपदेश की टिप्पणियों, टी. वी. कार्यक्रम, पुस्तकें, संगीत, और बहुत कुछ।

यदि यह आपको पसंद आता है, तो दूसरों को बताएं।

प्रभाव डालने हेतु निर्माण करें : यह दर्शन बाँटें

निर्माण करें

बैंगलोर में स्थित ए पी सी वर्ल्ड आऊटरीच अॅण्ड इक्विपिंग सेंटर विभिन्न राष्ट्रों में स्थित मसीह की मण्डली की सेवा हेतु विश्वस्तरीय अत्याधुनिक प्रशिक्षण केन्द्र और मिशन संस्थान होगा।

प्रभाव डालना

स्थानीय और विश्व स्तर पर, मसीही सेवकों की नई पीढ़ी को सुसज्जित करने, भेजने और सहायता करने हेतु, हम अग्रणी तंत्रविज्ञान और साधनों का लाभ उठाते हुए आत्मा से अभिशिक्त, बाइबल आधारित प्रशिक्षण प्रदान करेंगे। इस सुविधा में निवासी और अनिवासी विद्यार्थियों के लिए बाइबल कॉलेज होगा जिसमें लाईव्ह और ऑफ-लाईन व्याख्यानों के माध्यम से दूरस्थ शिक्षा (डिस्टन्स लर्निंग) हेतु सहायता दी जाएगी और एक मीडिया सेंटर होगा ताकि सम्बंधित विश्व के लोगों तक पहुंचा जा सके। इस सुविधा में आराधना केन्द्र, बाल तथा युवा केन्द्र और 24×7 प्रार्थना केन्द्र का समावेश होगा।

हम आपको निमंत्रित करते हैं कि जैसे जैसे परमेश्वर अगुवाई तथा सामर्थ प्रदान करता है, आप इस दर्शन में किसी भी कीमत के रूप में योगदान दें और हमारे साथ प्रतिभागिता करें और प्रभाव डालने हेतु निर्माण करने में हमारी सहायता करें। बैंगलोर में स्थित ए पी सी वर्ल्ड आऊटरीच अॅण्ड इक्विपिंग सेंटर हेतु तथा जारी बिल्ड टू इम्पैक्ट (प्रभाव डालने हेतु निर्माण) प्रोजेक्ट के लिए अपने दान भेजते समय, कृपया निम्नलिखित जानकारी का उपयोग करें :

Wire Transfer	Cheques
खाते का नाम : All Peoples Church Building Fund AC Account No: 520101021447450 IFSC Code: CORP0000656 Bank Name: Corporation Bank Branch Name: R.T Nagar Branch, Bangalore	**All Peoples Church Building Fund AC के नाम में** **चेक्स इस पते पर भेजें :** All Peoples Church, #319, 2nd Floor, 7th Main, 2nd Block HRBR Layout, Kalyan Nagar, Bangalore 560043, Karnataka, India

हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग कर आप भारत में स्थित बैंक से अपना योगदान सीधे हमारे बैंक खाते में डाल सकते हैं। हमारे पास विदेशी भेंटों को स्वीकार करने की सुविधा नहीं है। आप अपने प्रश्नों के लिए इस पते पर ई-मेल भेजें : **buildtoimpact@apcwo.org**

प्रोजेक्ट के सम्बंध में और अन्य जानकारी के लिए इस स्थान को भेंट दें : **apcwo.org/buildtoimpact**